इतिहास चरितावली

(Intended for Prathama Examination in Sanskrit conducted by Govt. Sanskrit College, Benares)

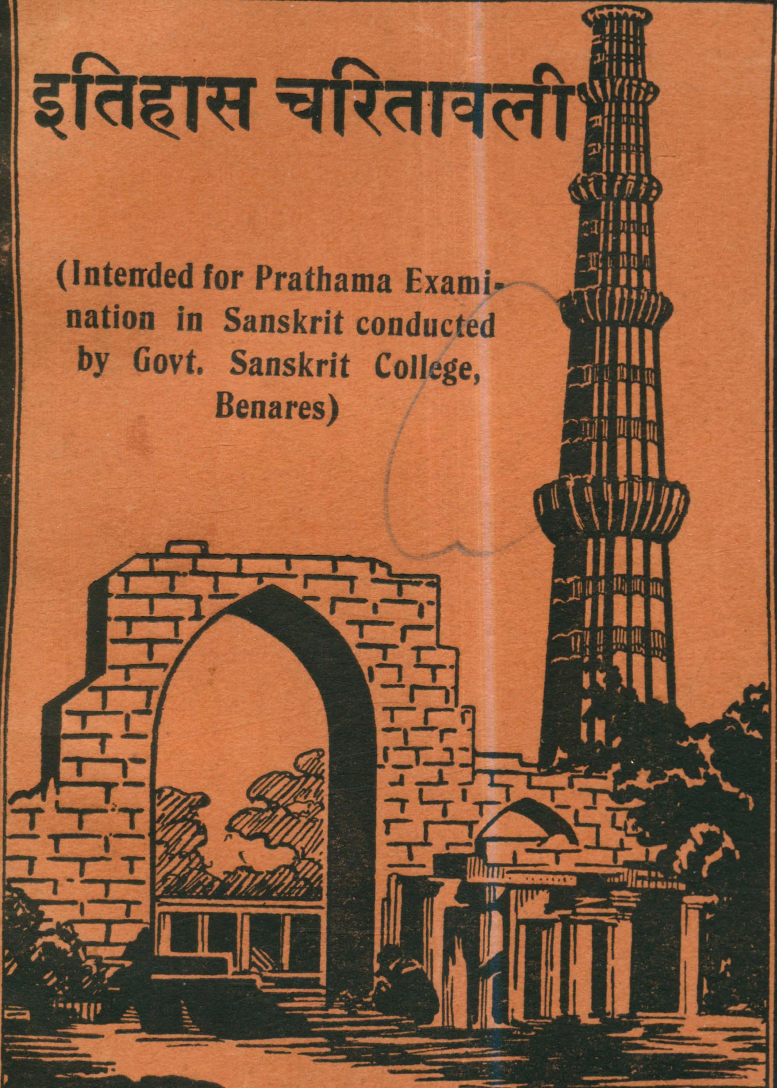

Ac. Gunratnasuri MS   Jin Gun Aradhak Trust

भारतीय

इतिहास-चरितावली

लेखक

डा० ईश्वरीप्रसाद, एम० ए०, एल-एल० बी०
डी० लिट०

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Published by
K. Mittra,
at the Indian Press, Ltd.,
Allahabad.

Printed by
B. Sajjan,
at the Belvedere Press.
Allahabad.

Ac. Gunratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

भूमिका

यह छोटी-सी पुस्तक वर्नाक्यूलर और ऐंग्लो-वर्नाक्यूलर स्कूलों की पाँचवीं और छठी कक्षाओं में पढ़नेवाले बालकों के लिए लिखी गई है। इसका उद्देश्य बालकों को अपने देश के महान् पुरुषों के चरित्र रोचक एवं सरल भाषा में दिखलाना है, जिससे उन्हें अपने पूर्वजों के चमत्कारों का ज्ञान हो और उनके हृदय में देश-प्रेम की जाग्रति हो। ऐतिहासिक कहानियाँ पढ़ाने से शिक्षा-विभाग का यह मन्तव्य है कि समय आने पर बालक इतिहास पढ़ने के लिए तैयार हों; इतिहास के प्रति उनकी रुचि बढ़े और अपने पूर्वजों का हाल जानने की उत्सुकता प्रबल हो। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आवश्यक है कि कहानी सरल भाषा में हो, हृदय-ग्राही हो, और पढ़नेवाले पर उसका प्रभाव पड़े। किसी चरित्र के विषय में उसकी प्रत्येक जीवन-घटना लिखने से कहानी की उपयोगिता कम हो जाती है और वह बालकों को रुचिकर भी नहीं प्रतीत होती। वे न तो उसे प्रेम से पढ़ते हैं और न उससे कुछ शिक्षा ही ग्रहण करते हैं। लेखक ने इस पुस्तक में भारत के ऐतिहासिक महापुरुषों के चरित्रों में से ऐसी दो चार बातें ले ली हैं जो विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं और जिनसे बालक शीघ्र ही प्रभावान्वित होकर उस चरित्र के गुणों का अनुकरण करने लगता है। बहुधा इस प्रकार की पुस्तकों में कल्पित तथा निर्मूल बातें लिख दी जाती हैं जिन्हें बालक जन्म भर नहीं भूलता और आगे चलकर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वे उसके ऐतिहासिक अध्ययन में बाधक होती हैं। ऐतिहासिक पुस्तकों में नमक मिर्च मिलाना असत्य का प्रचार करना और बालकों को शिक्षा के वास्तविक लक्ष्य से दूर करना है। हमें ऐसा करने की आवश्यकता ही नहीं। हमारे देश में ऐसे वीर एवं प्रतिभाशाली पुरुष हुए हैं जिनकी कीर्ति इतिहास में सदा अमर रहेगी। इन्हीं ने भारत का मुख उज्ज्वल रक्खा है। ये ही हमारी जाति की अटल सम्पत्ति हैं। इस पुस्तक में जिन महान् पुरुषों का वर्णन है उनके विषय में अनेक अद्भुत तथा प्रामाणिक बातें मौजूद हैं जिनका यहाँ समावेश किया गया है।

इस पुस्तक की भाषा न तो कठिन हिन्दी ही है न उर्दू, बल्कि हिन्दुस्तानी है। शैली ऐसी रक्खी गई है जिससे विद्यार्थी को पढ़ने में अरुचि न हो और उसकी उत्सुकता अन्त तक बढ़ती रहे।

प्रत्येक पाठ के नीचे अभ्यास दिये गये हैं जिनसे किसी चरित्र के विशेष गुणों की ओर ध्यान आकृष्ट करने में आसानी होगी। लेखक को आशा है कि शिक्षकगण इस पुस्तक में अनेक मनोरञ्जक बातें ऐसी पायेंगे जिनका साधारण पुस्तकों में सर्वथा अभाव है।

जो सज्जन त्रुटियों को बताने की कृपा करेंगे उनका लेखक अत्यन्त अनुगृहीत होगा।

प्रयाग
ता० २०—७—३२ } ईश्वरीप्रसाद

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

विषय-सूची

पाठ			पृष्ठ
१—रामायण	...	...	१
२—महाभारत	...	...	१३
३—महात्मा गौतम बुद्ध	...	...	२२
४—चन्द्रगुप्त मौर्य्य	...	...	३०
५—अशोकवर्धन	...	...	३४
६—(१) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य	...	...	३८
(२) कालिदास	...	...	४१
७—हर्षवर्द्धन	...	...	४५
८—(१) महमूद ग़ज़नवी	...	...	५१
(२) ,, ,,	...	...	५५
९—(१) पृथ्वीराज चौहान	...	...	५८
(२) आल्हा ऊदल	...	...	६१
१०—(१) अलाउद्दीन खिलजी	...	...	६६
(२) अलाउद्दीन और रानी पद्मिनी		...	६९
११—बाबर	...	...	७३
१२—(१) अकबर बादशाह	...	...	७८
(२) अकबर और राना प्रतापसिंह		...	८३
(३) अकबरी दरबार के रत्न		...	८६

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ			पृष्ठ
१३—जहाँगीर और नूरजहाँ	...	...	६४
१४—(१) शाहजहाँ	...	...	६६
(२) ताजमहल	...	...	१०४
१५—(१) मुग़ल-वंश का अन्तिम महान् बादशाह औरङ्गज़ेब	...	...	१०७
(२) छत्रपति शिवाजी	...	...	११२
(३) गुरु गोविन्दसिंह	...	...	११८
१६—महाराजा रणजीतसिंह	...	...	१२३
१७—राजा राममोहन राय	...	...	१२८
१८—सर सैयद अहमदख़ाँ	...	...	१३३
१९—दादाभाई नौरोजी	...	...	१३७
२०—महारानी. विक्टोरिया	...	...	१४१

Ac. Gunratnasuri MS

Jin Gun Aradhak Trust

भारतीय इतिहास-चरितावली

पाठ १

रामायण

अयोध्या का नाम तो तुमने सुना ही होगा। यह नगर सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी होने के कारण बहुत प्रसिद्ध रहा है। राजा हरिश्चन्द्र इसी वंश में पैदा हुए थे। इसके सिवा महाराज दशरथ का जन्म भी इसी वंश में हुआ था। दशरथ बड़े ही प्रतापी और प्रजापालक राजा थे। प्रजा का सुख ही उनका सुख था। उन्होंने तीन विवाह किये थे। पहले विवाह की बड़ी रानी कौशल्या थीं, दूसरे विवाह की सुमित्रा और तीसरे की कैकेयी थीं। बड़े सुख और सन्तोष के साथ वे अपना जीवन बिताते थे। यदि कुछ कमी थी तो एक बात की। वे सन्तान-हीन थे। और इस कमी के कारण वे अकसर उदास रहते थे। वंश की वृद्धि के लिए सन्तान चलना बहुत ज़रूरी था। इसलिए राजा दशरथ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सदा धर्म-कर्म में लगे रहते थे। कोई भी दिन ऐसा नहीं जाता था कि वे दान, यज्ञ, हवन, भोज इत्यादि धर्म-कर्म न करते हों। पुण्य कभी व्यर्थ नहीं जाता। अन्त में जब राजा दशरथ वृद्ध हुए, तो उनके चार पुत्र हुए। कौशल्या से रामचन्द्र, सुमित्रा से लक्ष्मण और शत्रुघ्न, और कैकेयी से भरत उत्पन्न हुए। इन पुत्रों को पाकर राजा दशरथ बहुत ही प्रसन्न हुए। उनकी यह अन्तिम इच्छा भी पूरी हुई।

राजा दशरथ के चारों पुत्र, रूप और गुणों में, एक से एक बढ़कर थे। उनके खेल देख-देखकर राजा दशरथ मन-ही-मन बड़े प्रसन्न होते थे। धीरे-धीरे वे पाँच वर्ष के हुए। राज-गुरु वशिष्ठजी की शिक्षा से वे शीघ्र ही बहुत-सी विद्यायें सीख गये। राज्य-शासन और युद्ध-विद्या में तो वे पूरी तरह प्रवीण हो गये।

इधर गुरु वशिष्ठजी चारों राजकुमारों को शिक्षा देते थे और उधर राजर्षि विश्वामित्र वन में एक यज्ञ कर रहे थे। परन्तु दुष्ट राक्षसों के उपद्रव के कारण उनके यज्ञ में बड़ा विघ्न होता था। राजा दशरथ के चारों राजकुमारों की शूर-वीरता के समाचार विश्वामित्र को भी मिलते थे।

एक दिन वे राजा दशरथ के पास आये। राजा को प्रसन्न देखकर विश्वामित्र बोले—मैंने इन राजकुमारों की शूर-वीरता की प्रशंसा सुनी है। आजकल राक्षस लोग मुझे बड़ा तङ्ग करते हैं। इसलिए यज्ञ में विघ्न पड़ता है। कुछ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

समय के लिए आप राम और लक्ष्मण को, यज्ञ की रक्षा के लिए, मुझे सौंप दें तो बड़ा अच्छा हो।

राजा दशरथ चाहते तो विश्वामित्रजी को टाल देते। पर वे उन्हें बहुत मानते थे। इसलिए इच्छा न होते हुए भी उन्होंने प्रसन्नता से राम और लक्ष्मण को विश्वामित्रजी के साथ कर दिया। राम और लक्ष्मण ने विश्वामित्रजी के आश्रम में पहुँचकर दुष्ट राक्षसों को मारकर भगा दिया।

उन्हीं दिनों मिथिला के राजा जनक के यहाँ उनकी पुत्री सीता का स्वयंवर होनेवाला था। राजा जनक के यहाँ एक धनुष इतना बड़ा और भारी था कि उसे उठाना टेढ़ी खीर थी। परन्तु सीताजी ने एक दिन उसे उठाकर दूसरी जगह पर रख दिया था इस कारण जनकजी ने यह प्रण कर लिया था कि जो राजकुमार इस धनुष को तोड़ डालेगा, उसी के साथ मैं सीता का विवाह कर दूँगा। यह स्वयंवर उस धनुष को तोड़ने के लिए ही किया गया था। बड़े-बड़े राजाओं के यहाँ निमन्त्रण भेजा गया। विश्वामित्रजी भी राम, लक्ष्मण को लेकर स्वयंवर देखने गये। सब राजाओं ने बारी-बारी से धनुष उठाने की बड़ी कोशिश की, पर वह धनुष किसी के हिलाये भी न हिला।

अब राजा जनक बहुत दुखी हुए। उन्होंने कहा कि मुझे नहीं मालूम था कि अब पृथ्वी पर कोई योधा नहीं रहा। यह सुनकर विश्वामित्र की आज्ञा से रामचन्द्रजी ने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उठकर धनुष को तोड़ डाला। सीताजी ने आकर उसी समय श्रीरामचन्द्रजी को जयमाल पहना दी। चारों ओर श्रीरामचन्द्रजी की जय-जयकार होने लगी। राजा जनक की ख़ुशी का ठिकाना न रहा। राजा दशरथजी के पास भी ख़बर भेजी गई। वे स्वयंवर में रामचन्द्रजी की, विजय का समाचार पाकर बड़े प्रसन्न हुए। गाजे-बाजे के साथ वे रामचन्द्रजी की बरात जनकपुर ले गये। जनक ने उनका बड़ा सम्मान किया। सीताजी के साथ श्रीरामचन्द्रजी का विवाह हो गया। महाराज दशरथ रूपवती और गुणवती बहू पाकर बहुत सुखी हुए।

हम पहले ही यह बतला चुके हैं कि राजा दशरथ अपने पुत्रों के जन्म के समय वृद्ध हो चले थे। इसलिए उन्होंने रामचन्द्रजी के हाथ में राज्य-शासन का भार दे देना चाहा। सबसे सलाह करके राज-तिलक की तिथि नियत कर दी गई। राज-तिलक होने का समाचार बात की बात में राज्य भर में फैल गया। प्रजा की ख़ुशी का ठिकाना न रहा। अयोध्या नगरी में उत्साह की एक बाढ़-सी आ गई। श्रीरामचन्द्रजी का स्वागत करने के लिए लोग तैयारियाँ करने लगे।

सन्ध्या का समय था। दूसरे दिन श्रीरामचन्द्रजी को राज-तिलक होनेवाला था। राजा दशरथ जैसे ही अपने रनिवास में गये वैसे ही देखते क्या हैं कि रानी कैकेयी मुँह लटकाये, मैले कपड़े पहने, बैठी है। राजा दशरथ कैकेयी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

को बहुत चाहते थे। उन्होंने कहा—कितनी ख़ुशी का समय है। ऐसे समय प्रसन्न होने के बदले तुम इस तरह दुखी क्यों हो! कपड़े भी तुमने ये कैसे पहन रक्खे हैं? बात क्या है?

कैकेयी ने तेज़ी के साथ कहा—अगर मेरी उदासी का कारण जानना चाहते हो, तो मुझे जो दो वरदान देने का तुमने वचन दे रक्खा है, आज उसको पूरा कर दो।

दशरथ बोले—तो हाय में इस तरह रूठने की बात ही क्या है? वरदान तो मैं दे ही चुका हूँ। इच्छा हो सो माँग लो। देने से इनकार करूँ तो मुझे दोष देना।

कैकेयी ने कहा—कल रामचन्द्र को राज-तिलक न करके, भरत को राजगद्दी दो और रामचन्द्र को चौदह वर्ष के लिए वनवास।

कैकेयी की माँग की बात राजा दशरथ सहन न कर सके। उनके ऊपर बिजली-सी गिर पड़ी। 'हाय राम! हाय राम!' कहते हुए वे बेहोश होकर पृथ्वी पर गिर पड़े।

दूसरे दिन प्रातःकाल जब रामचन्द्रजी के तिलक होने का समय था, तब इस समाचार को सुनकर प्रजा में मारे दुःख के हाहाकार मच गया। रामचन्द्रजी ने ज्यों ही पिता की बेहोशी का समाचार पाया, वे तुरन्त कैकेयी के महल में जा पहुँचे। उन्होंने कैकेयी से पूछा—माता! पिताजी की यह दशा कैसे हुई? मुझे सच-सच बतला दो।

कैकेयी ने घटना का सारा हाल कह सुनाया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राम ने सारा हाल सुनकर कहा—माता! यह बात ही कौन-सी है। भरत जैसे भाई को राजगद्दी देने से बढ़कर मेरे लिए ख़ुशी की और कोई बात नहीं हो सकती। मैं अभी वन जाने की तैयारी करता हूँ।

रामचन्द्रजी जब वन को जाने लगे, तब उनके छोटे भाई लक्ष्मण और उनकी धर्म-पत्नी सीताजी भी साथ चलने को तैयार हुईं। रामचन्द्रजी ने सीताजी को साथ न ले जाने की बहुत कोशिश की; पर सीताजी किसी तरह राज़ी न हुईं। उन्होंने कहा—नारी तो पति की दासी के समान है। पति चाहे जिस दशा में, चाहे जहाँ हो, उसकी सेवा करना ही नारी का धर्म है। जिस तरह बिना जीव के शरीर नहीं ठहर सकता उसी तरह बिना आपके मैं नहीं रह सकती।

रामचन्द्रजी ने वनवास के कष्टों का वर्णन किया, सास-ससुर की सेवा करने पर ज़ोर दिया पर सीताजी किसी तरह न मानीं। रोते-रोते उन्होंने अन्त में कहा—यदि आप अपनी सेवा से मुझे अलग करेंगे तो मेरा जीना कठिन हो जायगा। अब रामचन्द्रजी को विवश होकर सीताजी को भी साथ ले जाना पड़ा।

लक्ष्मणजी को भी रामचन्द्रजी ने घर पर छोड़ देने की कोशिश की। परन्तु उन्होंने किसी तरह न माना। अन्त में लक्ष्मण और सीताजी दोनों को साथ लेकर रामचन्द्रजी वन को चले गये। अयोध्या की प्रजा रोती विलपती उनके पीछे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वन-पथ-पर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ली। उन्होंने उसे बहुत लौटाना चाहा। कुछ लोग तो लौट आये पर बहुत-से साथ हो लिये और कहने लगे—हम भी वन में ही रहेंगे। पहले दिन उन्होंने तमसा नदी के किनारे डेरा डाला। जब सब सो गये तो आधी रात के समय लक्ष्मण और सीता को साथ लेकर वे चल दिये। दूसरे दिन प्रयाग होते हुए वे चित्रकूट पहुँचे और वहीं वन में कुटी बनाकर रहने लगे।

इधर राजा दशरथ का बुरा हाल था। होश में आने पर वे राम का समाचार पूछने लगे। जब उन्होंने सुना कि रामचन्द्रजी लक्ष्मण और सीताजी को साथ लेकर वन को चले गये तो दुःख के मारे 'हाय राम' कहते हुए उन्होंने अपना प्राण त्याग किया।

भरतजी उस समय अपने नाना के यहाँ थे। वे वहाँ से बुलाये गये। अयोध्या आने पर जब उन्हें पिता की मौत और भाई-भाभी के वन जाने का हाल मालूम हुआ तो वे बहुत दुःखी हुए। वे तुरन्त महलों में आकर अपनी माँ कैकेयी को बुरा-भला कह कर, उसे डाटने और फटकारने लगे। गुरु वशिष्ठ के बहुत समझाने पर उन्होंने अपने पिता का दाह-संस्कार किया। जब राज-सिंहासन पर बैठने की बात चली, तो उन्होंने सब लोगों से कहा कि ऐसा कभी नहीं हो सकता। बड़े भाई के होते हुए मैं गद्दी पर बैठ नहीं सकता। सब लोग रामचन्द्रजी के प्रति भरत का प्रेम देखकर दङ्ग रह गये। अन्त में भरतजी चित्रकूट जाकर रामचन्द्रजी से मिले और उन्हें अयोध्या

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लौटा ले चलने की बहुत कोशिश की परन्तु रामचन्द्रजी ने किसी तरह न माना। तब भरत ने रामचन्द्रजी से उनकी खड़ाऊँ माँग ली और अयोध्या लौटकर राजसिंहासन पर उन्हीं खड़ाउँओं को रखकर राज का काम करने लगे। अब रामचन्द्रजी चित्रकूट से आगे बढ़ गये। वे दण्डक वन की ओर जाकर पञ्चवटी में निवास करने लगे।

एक दिन रावण की बहन शूर्पणखा रामचन्द्रजी के पास आकर विवाह के लिए हठ करने लगी। उन्होंने जब उसे रोका तो वह सीताजी को मारने के लिए झपटी। यह देखकर लक्ष्मणजी ने उसके नाक कान काट लिये। वह लङ्का जाकर अपने भाई रावण के पास रोई और बोली—तुम इसका बदला लो। रावण ने कहा—अच्छा।

एक दिन की बात है, रामचन्द्रजी की कुटी के पास एक हिरन देख पड़ा। वह हिरन बड़ा सुन्दर था। उसका शरीर सुनहला था। सीताजी ने रामचन्द्रजी से उस हिरन को मारकर उसका चमड़ा लाने की इच्छा प्रकट की। रामचन्द्रजी उसी समय उसके पीछे हो लिये। हिरन छलाँगें मारता हुआ आगे बढ़ गया। रामचन्द्रजी ने उसको एक ही बाण से मार डाला। मरते समय उसने लक्ष्मण का नाम लिया। लक्ष्मण सीताजी के पास थे। जब उन्होंने अपना नाम सुना, तो यह समझकर कि बड़े भैया बुला रहे हैं, वे सीताजी को अकेली

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Ac. Gunratnasuri MS अशोक वृक्ष के नीचे सीता देवी Jin Gun Aradhak Trust

छोड़कर चल दिये। यह बनावटी हिरन मारीच राक्षस था जिसे रामचन्द्रजी ने विश्वामित्र के यज्ञ में मारकर भगा दिया था। पर जैसे ही लक्ष्मणजी रामचन्द्रजी की ओर गये, वैसे ही लङ्का का राजा रावण संन्यासी बनकर सीताजी के पास आकर भिक्षा माँगने लगा। जब सीताजी भिक्षा देने के लिए आगे बढ़ीं, तो रावण ने उन्हें ज़बरदस्ती उठाकर अपने रथ पर बिठा लिया। सीताजी रामचन्द्र और लक्ष्मण को याद कर रोने लगीं। रावण रथ दौड़ाता हुआ लङ्का को चला गया और उसने सीताजी को अशोक-वाटिका नाम की फुलवाड़ी में रख दिया।

दोनों भाई जब अपनी कुटी को लौटे तो सीताजी को न पाकर बहुत दुखी हुए। कई दिन तक वे रात-दिन सीताजी की खोज करते रहे। पर किसी तरह उनका पता न लगा।

सीताजी को ढूँढ़ते हुए हनुमान् बानर ने बानरों के राजा सुग्रीव से राम-लक्ष्मणजी की भेंट कराई। सुग्रीव ने जब सारा हाल सुना तो वह सहायता करने को तैयार हो गया।

हनुमान् सीताजी को खोजते-खोजते लङ्का पहुँचे। वहाँ सीताजी को अशोक-वाटिका में बैठे हुए देखा। उन्होंने सीताजी को बहुत कुछ धीरज बँधाया। हनुमान् ने लौटकर रामचन्द्रजी से सीताजी की भेंट का सब हाल कह सुनाया। रामचन्द्रजी ने बानरों की सेना इकट्ठी कर लङ्का के राजा रावण पर हमला करने की तैयारी कर दी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रावण को जब रामचन्द्रजी की चढ़ाई करने का समाचार मिला तो वह भी लड़ाई के लिए तैयार हो गया। उसे रामचन्द्रजी तथा लक्ष्मणजी की वीरता का पता न था। इधर जब से रावण सीताजी को चुरा लाया था, तब से उसका भाई विभीषण बहुत नाराज़ हो गया था। रावण की स्त्री मन्दोदरी ने भी उसे बहुत समझाया कि ख़ैर, जो हुआ सो हुआ, अब तो सीताजी को वापस कर दो। क्यों व्यर्थ में झगड़ा मोल लेते हो ?

पर रावण बड़ा अभिमानी था। उसे अपने बल का बड़ा घमण्ड था। उसने जवाब दिया—तुम क्या जानो लड़ाई की बातों को। तुम्हें मेरी ताक़त का कुछ भी पता नहीं है। वे दो लड़के मेरा क्या कर लेंगे! संसार में ऐसा कौन है, जो युद्ध में मेरे सामने क्षण भर भी ठहर सके।

अब क्या था, दोनों ओर से लड़ाई ठन गई। रामचन्द्रजी ने बानरों की सेना लेकर समुद्र को पार किया, फिर लङ्का पहुँच कर रावण पर धावा बोल दिया। बड़े ज़ोर की लड़ाई हुई। लक्ष्मणजी के भी बहुत चोट आई। बड़ी देर तक वे बेहोश रहे। लड़ाई बराबर जारी रही। परन्तु रावण का भाई कुम्भकर्ण और उसका बेटा मेघनाद मारा गया। तब उसका दिल टूट गया। उसकी स्त्री तथा उसके मन्त्री ने रावण को रामचन्द्रजी से मेल कर लेने की सलाह दी। परन्तु रावण स्वभाव का बड़ा ही हठी था। उसने किसी का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कहा न माना। अन्त में कई दिन की लड़ाई के बाद रावण की हार हुई और वह रामचन्द्रजी के हाथ से मारा गया।

इस समय चौदह वर्ष के वनवास की मीयाद पूरी हो चुकी थी। रामचन्द्रजी सीता और लक्ष्मण को लेकर अयोध्या को लौटे। भरतजी ने बड़े ही प्रेम और आदर के साथ रामचन्द्रजी का स्वागत किया। रामचन्द्रजी को पाकर अयोध्या-निवासी बहुत ख़ुश हुए। रामचन्द्रजी ने अयोध्या के राज्य-शासन का भार लेकर प्रजा और भरत की इच्छा पूरी की। घर-घर धूम-धाम से उत्सव होने लगे।

श्रीरामचन्द्रजी के राज्य में जो प्रजा को सुख मिला वह किसी देश को नसीब नहीं हुआ। वे प्रजा को अपने बच्चे की तरह प्यार करते थे। उसकी ज़रूरत को वे ख़ूब अच्छी तरह समझते और उसे पूरा करते थे। उनके राज्य में चोर और लुटेरे न थे। सब लोग आपस में बड़े प्रेम से रहते थे। सत्य और धर्म, दान और पुन्य, दया और परोपकार, न्याय और शान्ति उनके राज्य की ख़ास ख़ूबियाँ थीं। उनका धर्म-पालन, उनकी पितृ-भक्ति, उनका प्रजा-प्रेम इतने ऊँचे दरजे का था कि हिन्दू सभ्यता के इतिहास में उनके समान अभी तक कोई राजा नहीं हुआ। धार्मिक हिन्दू लोग आज हज़ारों वर्षों के बाद भी रामचन्द्रजी को ईश्वर का अवतार मानकर उनका नाम लेने में अपना कल्याण समझते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रामायण में इन्हीं रामचन्द्रजी के जीवन का वर्णन गोस्वामी तुलसीदास ने किया है। उसको पढ़ने से मालूम होता है कि हमारे देश में कैसे-कैसे प्रतापी पुरुष हो गये हैं।

अभ्यास

(१) रामचन्द्रजी का सीताजी के साथ विवाह किस प्रकार हुआ?

(२) रामचन्द्रजी के बन जाने का क्या कारण था?

(३) राजा दशरथ के चरित्र में तुम्हें कौनसी बात सबसे अच्छी मालूम होती है?

(४) रामचन्द्रजी, लक्ष्मणजी, सीताजी और भरतजी के जीवन-चरित्र से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

(५) रावण कौन था? उसके साथ रामचन्द्रजी की क्यों लड़ाई हुई?

(६) रामचन्द्रजी के राज्य को लोग अब तक क्यों याद करते हैं?

(७) जिस पुस्तक में रामचन्द्रजी की कथा का वर्णन है उसका क्या नाम है? वह किसकी बनाई हुई है?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ २

महाभारत

हज़ारों वर्ष पहले की बात है, हमारे देश में चन्द्रवंशी राजाओं का राज्य था। उनकी राजधानी हस्तिनापुर थी। उस समय महाराज शान्तनु राज्य करते थे। शान्तनु बड़े ही धर्म-परायण, ऐश्वर्यशाली और तेजस्वी थे। उनके राज्य में प्रजा बहुत सुखी और सन्तुष्ट थी।

महाराज शान्तनु के तीन पुत्र थे। सबसे बड़े देवव्रत, मँझले चित्राङ्गद और सबसे छोटे विचित्रवीर्य थे। देवव्रत बाल-ब्रह्मचारी थे। उन्होंने जीवन भर विवाह न करने की प्रतिज्ञा की थी जिसे उन्होंने पूरी तरह निभाया। इसी कारण लोग उन्हें भीष्म कहने लगे। चित्राङ्गद के कोई सन्तान न थी। एक युद्ध में वे वीरगति पा गये थे। केवल छोटे भाई विचित्र-वीर्य के ही तीन पुत्र हुए—धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर। धृतराष्ट्र जन्म से ही अन्धे थे। छोटे भाई विदुर, एक दासी से पैदा हुए थे। इसलिए महाराज पाण्डु ही राजा बनाये गये। परन्तु वे अधिक समय तक राज्य न कर सके। थोड़े ही दिनों बाद उनका देहान्त हो गया। महाराज पाण्डु के पाँच पुत्र थे। उनके नाम हैं युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल,

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

और सहदेव। युधिष्ठिर बड़े ही धर्मात्मा, प्रजापालक और सत्यवादी थे। धनुर्विद्या में कोई अर्जुन की बराबरी करनेवाला न था। भीम बड़े ही हृष्ट-पुष्ट और बलवान् थे। गदा-युद्ध में उन्हें कोई जीत नहीं सकता था। नकुल और सहदेव भी वीर और बुद्धिमान् थे।

पाण्डु की मृत्यु के समय उनके पुत्र बहुत छोटे थे। कोई भी राज्य करने योग्य न था। इसलिए धृतराष्ट्र ही राज-काज सँभालने के लिए बाध्य हुए।

धृतराष्ट्र के सौ पुत्र थे। वे कौरव कहलाते थे। उनमें सबसे बड़ा दुर्योधन था। परन्तु वह स्वभाव का बहुत बुरा था। न्याय तो उससे छू भी न गया था। दूसरों की उन्नति को वह देख भी न सकता था और विशेष कर पाण्डवों से उसकी बड़ी शत्रुता थी। रात-दिन उसे यह सोच सताता था कि ज्यों ही पाण्डव बड़े होंगे, राज्य उन्हीं को मिलेगा।

कौरव और पाण्डव सब अपने कुलगुरु द्रोणाचार्य के यहाँ शिक्षा पाते थे। आचार्य द्रोण उनको अन्य विद्याओं के साथ युद्ध-विद्या भी सिखलाया करते थे। पाण्डव पढ़ने लिखने और युद्ध-विद्या में बड़े चतुर और वीर निकले। दुर्योधन यह देखकर पाण्डवों से जलने लगा। वह सदा उनकी बेइज़्ज़ती करने पर तुला रहता था। दूसरे, उसी के पिता उस समय राजा थे। इस कारण उसके सहायकों की कमी न थी। परन्तु फिर भी वह युद्ध-विद्या में पाण्डवों के समान चतुर न हो सका।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जब पाण्डव कुछ और बड़े हुए तो धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर को, जो सबसे बड़े थे, युवराज बनाने की इच्छा प्रकट की। यह सुनकर दुर्योधन आगबबूला हो गया। उसने यह तय कर लिया कि कुछ भी हो, पाण्डवों को राज्य न करने दूँगा। संयोग से उसी समय वारणावत (प्रयाग के समीप) में एक मेला होने की तैयारियाँ हो रही थीं। दुर्योधन ने उसी मेले में पाण्डवों को शामिल करके उन्हें मरवा डालना चाहा। इसी इरादे से उसने वारणावत में एक बहुत सुन्दर लाख का महल तैयार करवाया। उसने सोचा कि पाण्डवों को इसी महल में ठहरावेंगे और जब वे रात को सो जावेंगे तो उस महल में आग लगवा देंगे। इस तरह न रहेगा बाँस और न बजेगी बाँसुरी।

परन्तु दुर्योधन की इस दुष्टता का पता युधिष्ठिर को पहले ही से चल गया। उसी दिन रात को पाँचों भाई अपनी माता कुन्ती को साथ लेकर चुपके से उस महल से निकलकर जङ्गल की तरफ़ चले गये। रात को उस महल में आग लगवा दी गई। मारे ख़ुशी के रात भर दुर्योधन को नींद न आई। उसने समझ लिया कि अब पाण्डवों का नाम-निशान तक मिट गया।

पाण्डव जङ्गल में इधर-उधर भटकने लगे। उसी समय उन्हें मालूम हुआ कि पाञ्चाल देश के राजा द्रुपद की बेटी द्रौपदी का स्वयंवर होनेवाला है। इस स्वयंवर को देखने पाण्डव भी गये थे। राजा द्रुपद ने इस स्वयंवर में धनुर्विद्या की एक परीक्षा रक्खी थी। उन्होंने यह प्रण किया था कि जो राजा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नीचे तेल में परछाहीं देखकर ऊपर बाँस में लटकती हुई मछली की आँख को तीर से बेध देगा उसी को मैं अपनी लड़की ब्याह दूँगा। बड़े-बड़े तीरन्दाज़ राजा इस स्वयंवर में इकट्ठे हुए। परन्तु कोई भी इस परीक्षा में पास नहीं हुआ। अन्त में अर्जुन ने इसमें सफलता पाई। पर उस राजसभा में अर्जुन को कोई पहचानता न था। लोगों ने उसे ब्राह्मण समझकर कहा कि इसके साथ द्रौपदी का विवाह नहीं हो सकता। तब अर्जुन को अपना परिचय स्वयं ही देना पड़ा। अर्जुन का परिचय पाकर राजा द्रुपद को बड़ी खुशी हुई। उन्होंने बड़ी प्रसन्नता से अर्जुन के साथ द्रौपदी का विवाह कर दिया। द्रौपदी को लेकर अर्जुन अपने भाइयों से मिले और घर लौट आये। धृतराष्ट्र ने राज्य का आधा भाग युधिष्ठिर को सौंप दिया। उन्होंने इन्द्र-प्रस्थ नाम का सुन्दर नगर बसाया और न्याय और धर्म के साथ राज्य किया जिससे पाण्डवों की प्रशंसा चारों ओर होने लगी।

यद्यपि दुर्योधन भी आधे राज्य का मालिक था फिर भी वह यह नहीं चाहता था कि पाण्डव राजा बने रहें। इसलिए वह बराबर ऐसा उपाय सोचने लगा, जिससे पाण्डव दाने-दाने को मुहताज होकर उसके अधीन होकर रहें और सारे राज्य का अधिकारी केवल वही रहे।

दुर्योधन का एक मामा था शकुनि। उससे दुर्योधन की बहुत पटती थी। वह भी अपने भानजे की तरह बड़ा कपटी और नीच था। दोनों ने मिलकर निश्चय किया कि जुआ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

स्वयंवर-सभा में द्रुपद-पुत्र धृष्टद्युम्न की घोषणा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

खेलने का जाल रचकर युधिष्ठिर से उनका सारा राज्य छीन लिया जाय। फिर क्या था। युधिष्ठिर के पास न्यौता भेज दिया गया।

युधिष्ठिर स्वभाव के बड़े निश्छल और सरल थे। दुर्योधन का न्यौता पाकर वे भाइयों के सहित उनके यहाँ जा पहुँचे और जुआ खेलने की तैयारी हो गई। शकुनि जुआ खेलने में बड़ा दक्ष था। वही पाँसे फेंकता था। युधिष्ठिर बराबर हारते गये। अन्त में वे अपना सारा राजपाट, यहाँ तक कि द्रौपदी को भी हार बैठे। जब दुर्योधन की माता गान्धारी को यह मालूम हुआ तो उसने सभा में आकर अपने बेटे को फटकारा और उसके अधिकार से द्रौपदी को छुड़ा दिया। एक बार फिर पाँसा फेंका गया और यह शर्त ठहरी कि जो कोई हारेगा उसे १२ वर्ष तक ज़ाहिरा तौर पर और एक वर्ष छिपकर वन में रहना होगा। अगर पिछले एक वर्ष में उनका कहीं पता चल जायगा तो उन्हें फिर पहले की भाँति ही वनवास करना होगा। युधिष्ठिर ने यह शर्त भी मान ली। शकुनि ने पासे फेंके। युधिष्ठिर फिर भी हार गये। बहुत ही दुःख और पछतावे के साथ अपनी माता कुन्ती को विदुर के घर छोड़ द्रौपदी को साथ लेकर वे वन को चले गये। जो राजकुमार अपने महलों में फूलों की सेज पर सोते थे उन्हें आज जङ्गली पशुओं के बीच घास-फूस की झोपड़ी में कँकरीली पथरीली ज़मीन पर सोना पड़ता था। जिन्हें नित्य नाना प्रकार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

के स्वादिष्ठ भोजन मिलते थे आज वे वन के फलों को खाकर अपनी भूख बुझाते थे।

इसी तरह जब १३ वाँ वर्ष भी बीत गया तो युधिष्ठिर ने दुर्योधन के पास ख़बर भेजी कि वनवास का समय बीत चुका, अब हमारा राज्य हमें वापस मिलना चाहिए। उसने उत्तर दिया कि भीख माँगने से राज्य नहीं मिलता, अगर तुममें बल है तो हमसे ले लो। दुर्योधन को समझाने-बुझाने के लिए श्रीकृष्णजी भी उसके पास गये। परन्तु उसने एक न मानी। दुर्योधन ने अन्त में यही उत्तर दिया कि बिना युद्ध के सुई की नोक के बराबर भी ज़मीन न दूँगा। श्रीकृष्णजी निराश वापस चले गये।

अब दोनों ओर से युद्ध की तैयारी होने लगी। श्रीकृष्णजी को भी निमन्त्रण मिला। परन्तु निमन्त्रण देने के लिए पहले उनके पास दुर्योधन ही पहुँचा। जिस समय वह श्रीकृष्ण के पास पहुँचा, वे सो रहे थे। दुर्योधन अभिमानी तो था ही, वह उनके पलँग के सिरहाने की ओर बैठ गया। उसी समय अर्जुन भी आ पहुँचे। वे उनके पैरों की तरफ़ बैठे। जब श्रीकृष्णजी की आँख खुली तो पहले उन्होंने अर्जुन को ही देखा, उसके बाद दुर्योधन को। अब सवाल यह खड़ा हुआ कि श्रीकृष्णजी किसकी ओर हों। दुर्योधन ने कहा—मैं पहले आया हूँ, इसलिए आपको मेरा ही निमन्त्रण स्वीकार करना चाहिए। श्रीकृष्णजी ने उत्तर दिया कि मैंने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कुरुक्षेत्र में लड़ाई

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पहले अर्जुन ही को देखा है। दुर्योधन बोला—इससे क्या होता है। यह तो आपका पक्षपात है। श्रीकृष्णजी ने उत्तर दिया—अच्छा! मैं दोनों की सहायता करना चाहता हूँ। परन्तु मैंने यह निश्चय किया है कि एक ओर तो मैं अपनी सेना भेज दूँगा और दूसरी ओर मैं अकेला रहूँगा। श्रीकृष्णजी के इस निश्चय को सुनकर दुर्योधन बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने श्रीकृष्णजी की सेना ही लेना स्वीकार किया।

लड़ाई छिड़ गई। दोनों ओर की सेनाएँ एक दूसरे का नाश करने पर जी-जान से उतारू हो गईं। खून की नदियाँ बहने लगीं। अठारह दिन तक घमासान लड़ाई हुई। दोनों ओर के बली से बली योधा काम आये। कर्ण, द्रोणाचार्य, भीष्म पितामह जैसे योधा भी मारे गये। फिर भी दुर्योधन ने सुलह न की। वह अन्त में मारा गया और पाण्डवों की जीत हो गई।

इस युद्ध से देश को बड़ी हानि पहुँची। सारे देश की ताकत नष्ट हो गई। लाखों विधवाओं के रोने से आकाश गूँज उठा। धृतराष्ट्र, गान्धारी, राजमाता कुन्ती और विदुर से यह सब न देखा गया। वे वन में तप करने चले गये। कुछ ही दिनों में उन सबका देहान्त हो गया।

उधर द्वारका में, जहाँ श्रीकृष्णजी निवास करते थे, यादवों में परस्पर युद्ध छिड़ गया। वे सब आपस ही में जूझ कर मर मिटे। श्रीकृष्णजी पर इन सब बातों का

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बड़ा प्रभाव पड़ा। वे वन में एक लता के नीचे बैठकर इसी विषय पर सोच-विचार करने लगे। उसी समय एक बाण उनके पैर के तलुवे में लगा जिसे एक बहेलिये ने उस स्थान पर हरिण बैठा हुआ समझ कर चलाया था। श्रीकृष्ण जो दुखी तो थे ही, इस चोट से उनका भी प्राणान्त हो गया।

इन सब घटनाओं का प्रभाव पाण्डवों पर भी पड़ा। अपने पोते परीक्षित को राज्य देकर वे हिमालय की ओर चल दिये और वहाँ बर्फ़ में गलकर स्वर्गवासी हुए!

महाभारत के पढ़ने से हमें यह पता चलता है कि हमारे पूर्वजों में कैसे-कैसे महापुरुष हुए हैं। युधिष्ठिर से धर्मात्मा, अर्जुन से वीर, भीष्म से ब्रह्मचारी, कर्ण से दानी, श्रीकृष्ण जैसे प्रेम-सखा और योगी हमारे ही देश में हुए हैं। महाभारत से हमें दो बड़ी शिक्षायें मिलती हैं। एक तो यह कि घमण्ड बुरा होता है। घमण्डी पुरुष का नाश एक न एक दिन अवश्य होता है। दूसरे, आपस की फूट का भी परिणाम बुरा होता है। यदि कौरव और पाण्डव आपस में न लड़ते तो ऐसा सर्वनाश न होता।

अभ्यास

(१) महाभारत की लड़ाई का क्या कारण था? इस युद्ध से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(२) पाण्डवों में तुम्हें किसका चरित्र सबसे अच्छा लगता है और क्यों ?

(३) दुर्योधन कौन था ? वह पाण्डवों से क्यों द्वेष रखता था ?

(४) अर्जुन का द्रौपदी के साथ किस तरह विवाह हुआ था ?

(५) श्रीकृष्ण किस देश के राजा थे ? उन्होंने लड़ाई में किसे मदद दी और क्यों ?

(६) श्रीकृष्णजी की मृत्यु किस प्रकार हुई ?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ २

महात्मा गौतम बुद्ध

हमारे देश के पढ़े-लिखे लोगों में ऐसा कोई न होगा जिसने महात्मा गौतम बुद्ध का नाम न सुना हो। हिन्दुओं में तो बुद्धजी ईश्वर के अवतार माने जाते हैं। लेकिन छोटे लड़कों में बहुत कम ऐसे होंगे जिन्होंने बुद्धजी की कथा पढ़ी होगी या सुनी होगी। बहुत-से शायद यह सोचते होंगे कि बुद्ध कोई साधारण आदमी होंगे जो साधु हो गये होंगे; पर यह बात नहीं थी। वे एक राजा के लड़के थे और राज-पाट छोड़-छाड़कर संन्यासी हो गये थे। उनकी कथा इस प्रकार है।

कपिलवस्तु एक छोटा-सा प्रदेश था। उसमें एक राजा राज्य करते थे। उनका नाम शुद्धोदन था। राजा शुद्धोदन के दो रानियाँ थीं पर लड़का एक के भी न होता था। इसी से उन्हें बड़ा दुःख रहता था। उनकी प्रजा उनसे बहुत ख़ुश रहती थी। वे भी प्रजा के सुख-दुःख का पूरा ख़याल रखते थे। उन्हें किसी सुख की कमी न थी पर सन्तान न होने से उन्हें कुछ न सुहाता था।

सन्तान होने के लिए राजा ने बहुत दान-धर्म किया, यज्ञ किये, जिससे उनकी बड़ी रानी से एक लड़का पैदा हुआ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राजा और प्रजा ने बड़ी ख़ुशी मनाई। लड़के का नाम सिद्धार्थ रक्खा गया। राजा ने पण्डितों से सिद्धार्थ की जन्मपत्री बनवाई तो उन्होंने बताया कि यह लड़का बड़ा भाग्यवान् है। आगे चलकर यह या तो चक्रवर्ती राजा होगा या बहुत बड़ा महात्मा होगा। पण्डितों की बात सच हुई। वही सिद्धार्थ चक्रवर्ती राजा तो नहीं परन्तु बहुत बड़े महात्मा हो गये और उन्हीं का नाम गौतम बुद्ध पड़ा।

जब सिद्धार्थ कुछ बड़े हुए और पढ़-लिखकर ख़ूब विद्वान् हो गये तो एकान्त में रहना उन्हें ज़्यादा अच्छा लगने लगा। वे इधर-उधर जाते भी तो वहाँ उनका मन न लगता, वे चुपचाप अलग बैठे रहते थे। जब किसी को वे दुखी देखते तो उन्हें बहुत दुःख होता था। वे सोचा करते थे कि मनुष्य दुखी क्यों होते हैं, उनका दुःख कैसे दूर हो। उनकी यह चिन्ता इतनी बढ़ गई थी कि वे खाना-पीना तक भूल जाते थे।

लड़के की यह हालत देखकर शुद्धोदन को बड़ी चिन्ता हुई। उन्हें यह डर हुआ कि, जैसा पण्डितों ने कहा है, कहीं यह घरबार छोड़कर चल न दे। इसलिए उन्होंने झटपट एक बहुत रूपवती और चतुर राजकुमारी से उनका विवाह कर दिया। उनके लिए अलग महल बनवा दिया। वहाँ बहुत-सी दासियाँ तथा गाने-बजाने और नाच-रङ्ग का बहुत-सा सामान इकट्ठा करवा दिया, जिससे सिद्धार्थ का मन संसार के सुखों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

से न उचटने पाये। यही नहीं, राजा ने शहर भर में ताक़ीद करवा दी कि सिद्धार्थ जब बाहर घूमने जाया करें तो कोई अन्धा, लूला, लँगड़ा, बुड्ढा, दीन-दुखी उनके सामने न आया करे। सिद्धार्थ जब बाहर घूमने जाते तो सब कोई राजा की इस आज्ञा का पूरा ध्यान रखते थे।

इतना सब होने पर भी सिद्धार्थ की वही हालत रही। उन्हें अब भी उसी तरह एकान्त में रहना अच्छा लगता था और उसी तरह की बातें सोचा करते थे। वे अलग बैठे-बैठे सोचा करते कि क्या कोई ऐसी जगह है जहाँ दुःख बिलकुल न हो, सब सुखी हों। बस उनका सारा समय इसी तरह के सोच-विचार में बीतता था।

धोखे से भी जब वे किसी भूखे, लँगड़े-लूले या दुखी को देख लेते थे तो बहुत दुखी होते थे और सोचने लगते थे कि मैं इसका दुःख कैसे दूर कर सकता हूँ।

एक दिन सिद्धार्थ रथ पर घूमने जा रहे थे तो उन्होंने देखा कि एक बुड्ढा आदमी लकड़ी के सहारे जा रहा है। उसके बाल सफ़ेद हो गये थे। कमर झुक गई थी। शरीर की खाल सिकुड़ गई थी। आँखों से ठीक दिखाई नहीं देता था। खौं-खौं करता हुआ वह आगे बढ़ रहा था। रथवान ने बहुत आवाज़ दी कि सामने से हट जाओ पर उसे सुनाई भी न देता था जो हट जाता। यह हाल देखकर सिद्धार्थ विचार में पड़ गये। उन्होंने रथ वहीं रुकवा दिया और रथवान से पूछने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लगे—क्यों भाई ! इसकी ऐसी हालत क्यों है ? इसी तरह पूछते-पाछते घर लौट आये।

एक दिन जब वे घूम कर लौट रहे थे तो उन्होंने देखा कि एक किसान अपने बैल को बुरी तरह मारने में जुटा है। बैल बेचारा बुड्ढा है। वह चल नहीं पाता पर किसान डण्डों की मार से उसे आगे बढ़ा रहा है। बैल धूप में गिरता है, फिर उठता है लेकिन किसान को दया नहीं आती।

एक दिन राजकुमार ने एक मुर्दा जाते देखा। चार आदमी ठठरी बनाये कन्धों पर रक्खे उसे लिये जा रहे थे। पीछे से कुछ लोग रोते हुए जा रहे थे। इससे पहले सिद्धार्थ ने कभी कोई मुर्दा जाते या किसी को मरते न देखा था। इस दृश्य को देखते ही उन्होंने अपने रथवान से पूछा—क्यों भाई ! यह क्या मामला है ? ये लोग यह क्या लिये जा रहे हैं और कुछ लोग रो क्यों रहे हैं ? रथवान ने बतलाया—महाराज ! कोई आदमी मर गया है। उसे ये लोग जलाने को लिये जा रहे हैं। रोनेवाले उसके घर के और सङ्गी-साथी हैं। आज से हमेशा के लिए उनका उसका साथ छूट गया इसी से ये लोग रोते हैं। ऐसा सुनकर सिद्धार्थ ने निश्चय कर लिया कि यह शरीर किसी काम का नहीं, इसलिए इससे वह काम लेना चाहिए कि फिर हमेशा के लिए सब दुःखों से छुटकारा हो जाय और रोना झींखना न पड़े।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बस, एक रात को जब सब लोग सो रहे थे, सिद्धार्थ पलँग से उठ खड़े हुए। उन्होंने रथवान को जगाया। उससे कहा—रथ तैयार करो। रथवान रथ जोतने लगा। इधर सिद्धार्थ ने एक बार स्त्री, पुत्र और महल की ओर देखा, फिर चुपके से बाहर निकल आये। पहले सोचा कि स्त्री को जगाकर एक बार उससे मिल लूँ। फिर विचार आया कि उसके जगाने और रोने-धोने से मोह न पैदा हो जाय इसलिए बिना मिले ही सिद्धार्थ रथ पर बैठकर चल दिये। एक घने जङ्गल में पहुँचकर वे रथ रुकवा कर उतर पड़े। यहाँ उन्होंने अपने ज़ेवर, राजसी कपड़े और तलवार उतारकर रथवान के सामने रख दी और कहा—लो इनको ले जाओ। संसार में दुःख ही दुःख है। मैं इस दुःख को दूर करने का उपाय करूँगा। तुम किसी बात की चिन्ता न करो।

सारथी निराश होकर घर की तरफ़ चल दिया और सिद्धार्थ जङ्गल की ओर। जङ्गलों को पार करते हुए चलते-चलते वे गया पहुँचे। गया में एक अच्छी जगह देखकर वहीं बैठकर तपस्या करने लगे। खाना-पीना सब छोड़ दिया। बहुत दिनों तक न खाने-पीने से शरीर बिलकुल कमज़ोर हो गया। उन्होंने भीख माँग-माँगकर भोजन किया तब शरीर कुछ ठीक हुआ। इसके बाद एक पीपल के वृक्ष के नीचे फिर ध्यान लगाकर बैठ गये और तब तक बैठे रहे जब तक कि उन्हें ज्ञान प्राप्त न हो गया। तभी से वे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

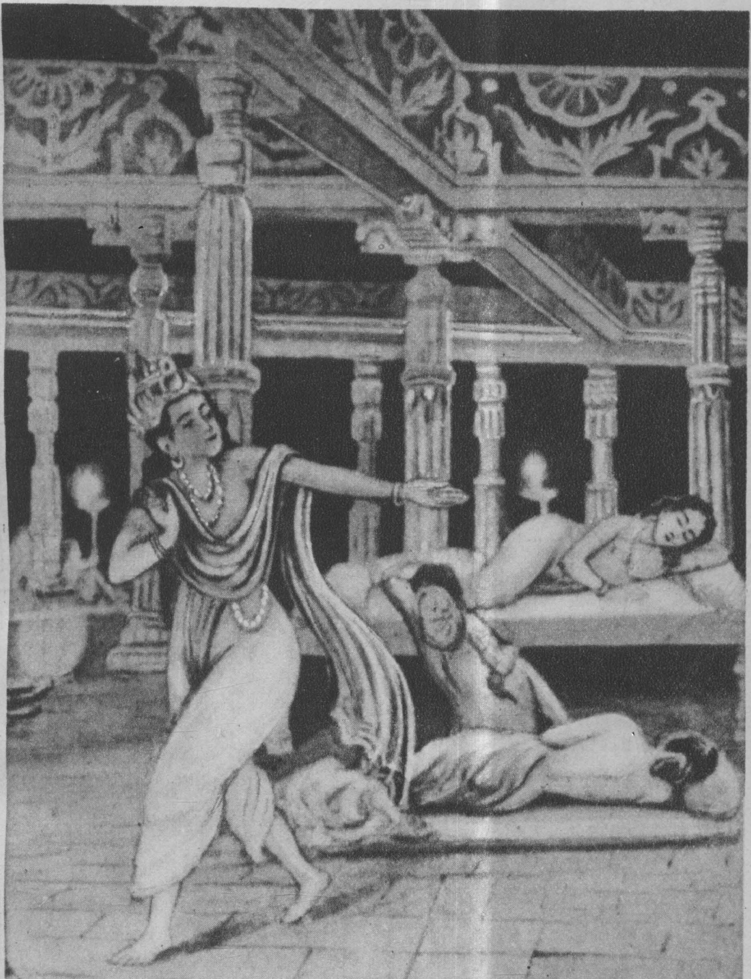

गौतम बुद्ध का गृह-त्याग

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गौतम बुद्ध कहलाने लगे। बहुत-से राजा-रङ्क सेठ-साहूकार उनके शिष्य हो गये।

शुद्धोदन को जब मालूम हुआ कि सिद्धार्थ घर से निकल गये तो उनको बहुत दुःख हुआ। उनको ढूँढ़ने के लिए चारों ओर आदमी भेजे गये। ढूँढ़ते-ढूँढ़ते जब लोग गया पहुँचे तो सिद्धार्थ को तपस्या करते हुए पाया। लोगों ने उनको घर लौट चलने के लिए बहुत समझाया पर अब वे गौतम बुद्ध हो चुके थे। सब बेकार था, निराश होकर वे लोग घर लौट आये।

राजा को जब यह हाल मालूम हुआ तो उन्होंने फिर अपना एक आदमी भेजा पर सिद्धार्थ न लौटे। तब राजा ने अपने मन्त्री के लड़के को भेजा। उसने आकर बहुत प्रार्थना की और कहा—आप कपिलवस्तु में न रहिएगा पर हो तो आइए। गौतम बुद्ध ने उसकी बात मान ली। अपने शिष्यों सहित वे पिता के राज्य में पहुँचे और नगर के बाहर ही ठहर गये। उनके पिता और कुटुम्बी तथा नगर के लोग मिलने आये। सबसे प्रेम-पूर्वक मिलकर उन्होंने सच्चरित्र बनने और धर्म पर चलने का उपदेश दिया। दूसरे दिन दोपहर के समय जब वे कपिलवस्तु में भिक्षा माँगने निकले तो उन्हें देखकर लोग रोने लगे। उनके पिता तो बहुत ही दुखी हुए और आँखों में आँसू भरकर बुद्धजी को बहुत समझाया कि तुम्हारे घर में खाने-पीने की कमी नहीं, फिर क्षत्रियों का काम भीख माँगने का नहीं है। बुद्धजी ने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उत्तर दिया—मैं अब राजा नहीं हूँ और न ब्राह्मण, न क्षत्रिय ही। अब तो सारी दुनिया मेरा घर है। आप भी धर्म का पालन कीजिए। बुद्धजी के उपदेश का ऐसा प्रभाव पड़ा कि कपिलवस्तु के सब लोग उनके शिष्य हो गये।

कुछ समय वहाँ ठहर कर बुद्धजी घूम-घूमकर चारों ओर धर्म का उपदेश करने लगे। उनके उपदेश का लोगों पर ऐसा प्रभाव पड़ता था कि एक बार उपदेश सुन लेनेवाला भी उनकी ओर खिंच जाता था और उनकी बतलाई हुई बातें मानने को तैयार हो जाता था।

धीरे-धीरे सारे देश में उनकी धूम मच गई। वे जहाँ पहुँच जाते थे, हज़ारों की संख्या में स्त्री-पुरुष इकट्ठे होकर उनका उपदेश सुनते और उनके शिष्य बन जाते थे। बुद्ध जी का धर्म शीघ्र फैल गया और उनके धर्म को माननेवाले बौद्ध कहलाने लगे। हिन्दुस्तान के बाहर चीन, जापान, लङ्का आदि में भी लोग बौद्ध-धर्म को मानने लगे।

महात्मा बुद्ध सबसे अधिक ज़ोर सच बोलने पर देते थे। वे कहते थे कि दुनिया में सबसे बड़ा तप सच बोलना ही है। सबको सच बोलते हुए धर्म का पालन करना चाहिए। किसी जीव को ज़रा भी दुःख न पहुँचाना चाहिए। सबसे मीठे वचन ही बोलना चाहिए। एक शब्द भी ऐसा न बोलना चाहिए जिससे दूसरे का दिल दुखे। जो लोग घर-बार वाले हैं उन्हें अपने माँ-बाप की सेवा करनी चाहिए! तीन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बुद्ध जी के शिष्य

दुखियों पर दया करनी चाहिए। सबके साथ ईमानदारी का व्यवहार करना और दान-पुण्य करना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है। घर में कोई मेहमान आ जाय तो उसका आदर-सत्कार करना गृहस्थ का सबसे बड़ा धर्म है।

इससे तुम यह भी समझ गये होगे कि गौतम बुद्ध महात्मा क्यों कहलाये। ऊपर लिखी हुई अच्छी बातें जिसमें होती हैं वे महात्मा ही होते हैं।

अभ्यास

(१) गौतम बुद्ध ने राज-पाट छोड़कर संन्यास क्यों लिया था? कारण बताओ।

(२) गौतम बुद्ध कब से कहलाने लगे? बुद्ध शब्द का क्या अर्थ है?

(३) गौतम बुद्ध की मुख्य शिक्षाएँ क्या हैं?

(४) बौद्ध-धर्म के माननेवाले लोग किन देशों में पाये जाते हैं?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ ४

चन्द्रगुप्त मौर्य्य

हिन्दुस्तान में चन्द्रगुप्त नाम के कई राजा हुए हैं और प्राय: सभी बड़े वीर हुए हैं। किन्तु चन्द्रगुप्त मौर्य्य बड़ा प्रतापी राजा हुआ है। उसकी बहादुरी का सिक्का हिन्दुस्तान में ही नहीं बल्कि दूर-दूर के देशों में भी जम गया था। यह चन्द्रगुप्त हिमालय पहाड़ के निकट एक छोटे से देश का राजा था। अपनी बहादुरी और बुद्धिमानी से इसने सारे हिन्दुस्तान पर अधिकार कर लिया और सम्राट् कहलाने लगा। यह बड़ी विचित्र कहानी है जिसे अब हम तुम्हें सुनायेंगे।

जिस देश में चन्द्रगुप्त रहता था उसी के पास मगध नाम का एक बड़ा राज्य था। मगध का राजा था महापद्मनन्द। वह बड़ा प्रतापी था। उसके आठ बेटे थे परन्तु सबके सब दुष्ट और अन्यायी थे। उनके बुरे बर्ताव से प्रजा अप्रसन्न थी और चाहती थी कि उनका अन्त हो जाय। इस अवसर को देखकर चन्द्रगुप्त ने नन्द 'राजाओं का राज्य छीननें का उपाय सोचा। नन्द राजा के यहाँ शकटार नामक एक मन्त्री था। उसे किसी कारण से राजा ने घरबार-समेत क़ैदख़ाने में डाल दिया था। कुछ समय के बाद वह छोड़ दिया गया और फिर मन्त्री बना दिया गया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शकटार मन्त्री तो हो गया परन्तु अपनी पहली हालत को न भूला। वह मन ही मन बदला लेने का उपाय सोचने लगा। एक दिन वह कहीं जा रहा था। रास्ता जङ्गल में होकर था। बड़ी तेज़ धूप पड़ रही थी। देखता क्या है कि काले रङ्ग का एक ब्राह्मण, चोटी खोले, आँखें लाल किये, पसीने में नहाया हुआ कुशों की जड़ खोद रहा है और जिस कुश को खोद लेता है उसकी जड़ में मठा डालता जाता है। शकटार ने पूछा—महाराज! यह क्या कर रहे हो? चाणक्य ने तड़पकर उत्तर दिया—मेरे पैर में कुश लग गया है। इसलिए जब तक इनका जड़ से नाश न कर लूँगा तब तक पानी नहीं पीऊँगा।

शकटार ने सोचा कि यह ब्राह्मण कैसा हठी और ज़िद्दी है। इस ज़रा-से कुश के पैर में लग जाने से ऐसी तेज़ दुपहरी में उसे जड़-मूल से नष्ट करने में लगा हुआ है। जब यह एक जड़ चीज़ के पीछे इस तरह पड़ गया है तब यदि यह नन्दवंश से नाराज़ हो जाय तो उसे तो मिटाकर ही चैन लेगा। ऐसे ब्राह्मण के साथ मेल करने से बड़ा काम निकलेगा।

शकटार ने चाणक्य से मित्रता कर ली और चन्द्रगुप्त को भी अपनी तरफ़ मिला लिया।

एक दिन राजा महापद्मनन्द के यहाँ बहुत बड़ी दावत थी। भोजन करने के लिए दूर-दूर से ब्राह्मण बुलाये गये थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शकटार ने चाणक्य को भी न्यौता दिया और उसे हाथ-पैर धुलाकर ब्राह्मणों के साथ बिठा दिया। राजा घूम-घूमकर सब प्रबन्ध देख रहा था। जब उसने ब्राह्मणों के बीच में एक कुरूप काले आदमी को बैठा देखा तो उसे बड़ा क्रोध आया। उसने नौकरों को हुक्म दिया कि इस आदमी को फ़ौरन बाहर निकाल दो। चाणक्य बाहर निकाल दिया गया। परन्तु इस अपमान को देखकर उसकी आँखें क्रोध से लाल हो गईं। उसने अपनी चोटी खोल दी और कहा कि यह चोटी अब तभी बँधेगी जब मैं इसके पुत्रों सहित इसका नाश कर दूँगा। यह कहता हुआ चाणक्य बाहर चला गया।

शकटार जैसा चाहता था वैसा ही हुआ। चाणक्य को समझा-बुझाकर वह अपने घर ले गया और राजा की खूब निन्दा करके उसने उसे शान्त किया।

चाणक्य तो अपनी धुन का पक्का था, वह अब नन्दवंश का नाश करने में जुट गया। उसने देखा कि चन्द्रगुप्त बहादुर और चतुर है, राजा होने के योग्य है। दोनों की आपस में बातचीत हुई। चाणक्य ने प्रण किया कि मैं तुम्हें राजगद्दी पर बिठाऊँगा, तुम नन्दवंश का नाश करने में मेरी सहायता करो। चन्द्रगुप्त तो ऐसे अवसर की ताक में बैठा ही था। उसने शीघ्र मदद देने का वचन दिया।

चाणक्य और चन्द्रगुप्त ने मिलकर नन्द राजा को गद्दी से उतार दिया और उसके वंश का नाश कर दिया। चन्द्रगुप्त

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बड़े ठाट बाट से राजगद्दी पर बैठा। उसने नये देश जीतना आरम्भ किया।

अभ्यास

(१) महापद्मनन्द किस देश का राजा था? उसकी प्रजा उससे क्यों नाराज़ थी?

(२) शकटार कौन था? उसने नन्दवंश को नष्ट करने का क्यों इरादा किया?

(३) शकटार ने चाणक्य से किस तरह मेल किया? उसके साथ मित्रता करने से शकटार को क्या लाभ हुआ?

(४) चन्द्रगुप्त कौन था? उसने मगध का राज्य किस तरह पाया?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ ५

अशोकवर्धन

चन्द्रगुप्त का हाल तुम पढ़ चुके हो। यह अशोक उसी चन्द्रगुप्त का पोता यानी लड़के का लड़का था। उसके बाप का नाम बिन्दुसार था। अशोक चन्द्रगुप्त से भी अधिक प्रतापी निकला। उसका राज्य सारे हिन्दुस्तान में फैल गया इसी लिए वह सम्राट् कहलाया।

अशोक ने बहुत-सी लड़ाइयाँ लड़ीं और देश जीते परन्तु फिर एकदम हमेशा के लिए लड़ना छोड़ दिया और तन-मन-धन से धर्म का प्रचार करने में लग गया। अशोक के समान धर्मात्मा राजा हमारे देश में दूसरा नहीं हुआ।

जो राजा बड़ी शान-शौकत से रहता हो, जिसको देखकर बड़े-बड़े सर्दार थर्राते हों, युद्ध में जिसके हाथ में तलवार देखकर लोगों के छक्के छूट जाते हों, जिसका मुक़ाबला करने का किसी में ताक़त न हो वह एक साथ लड़ना छोड़ दे, कमर से तलवार निकालकर फेंक दे, राजसी ठाठ छोड़कर साधुओं की तरह रहने लगे, यह बड़े आश्चर्य की बात है। अशोक के जीवन में दो बड़ी घटनाएँ हुईं। एक ने उसे राजगद्दी पर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बिठाया और दूसरी ने उसे धर्मात्मा साधु बना दिया। पहली घटना इस तरह है—

राजा बिन्दुसार के कई लड़के थे। उनमें सबसे अधिक चतुर, बुद्धिमान् और होशियार अशोक ही था। बचपन में ही उसकी होशियारी और दिलेरी देखकर सब लोग प्रशंसा करते थे। जब बिन्दुसार अधिक बुड्ढे हुए तो उन्होंने विचारा कि किसी योग्य लड़के को ही युवराज बनाना चाहिए। यह सोचकर उन्होंने लड़कों के गुरु को बुलाया और उनसे सलाह ली। गुरु ने बताया कि सब लड़कों की परीक्षा ली जाय और जो सबमें योग्य हो वही युवराज बनाया जाय।

सब लड़के राजा के सामने बुलाये गये। सबके आ जाने पर राजा ने उनसे कहा—कल तुम लोग खूब बढ़िया-बढ़िया भोजन करना, सबसे अच्छी सवारी में बैठकर दरबार में आना और यहाँ आकर सबसे अच्छी जगह बैठना।

दूसरे दिन जब सब लड़के आकर अच्छी-अच्छी जगहों पर बैठ गये और अशोक आकर सिंहासन पर ही बैठ गया तो गुरु ने सबसे पूछा कि तुम लोग क्या खाकर आये हो?

सबने कहा—हम बहुत बढ़िया-बढ़िया मिठाई खाकर आये हैं। अशोक ने कहा—मैं अपनी माता के हाथ का बनाया हुआ भोजन खाकर आया हूँ।

राजा ने पूछा—तुम लोग किन सवारियों पर चढ़कर आये हो?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सबने और और सवारियाँ बतलाईं पर अशोक ने बताया—मैं आपकी बूढ़ी हथिनी पर चढ़कर आया हूँ।

बैठने के स्थानों में राजा ने देखा कि अशोक आकर राजसिंहासन पर बैठा है इससे निश्चय किया कि अशोक ही बुद्धिमान्, होशियार और युवराज बनाने के लायक़ है। बस, वह युवराज बना दिया गया और राजा के मरने के बाद गद्दी पर बैठा।

एक दिन अशोक ने देखा कि एक बहुत शान्त आदमी भीख माँगता हुआ जा रहा है। वह एक दरवाज़े पर एक ही बार माँगता है और जो कुछ रूखा-सूखा मिल जाता है उसी को लेकर हँसता हुआ आगे बढ़ जाता है। यदि कोई नहीं देता तो भी वैसा ही आगे बढ़ जाता है। बड़ी देर तक यही देखने के बाद अशोक ने उसे अपने पास बुलाया और पूछा—आप कौन हैं? उसने बतलाया—मैं बौद्ध-धर्म का साधु हूँ, भिक्षा माँगने निकला हूँ।

इससे अशोक के दिल पर बहुत असर पड़ा। उसने सोचा—क्या बौद्ध-धर्म इतनी शान्ति लाता है? तब तो सचमुच वह बड़ा अच्छा धर्म है। अशोक ने उस साधु को अपना गुरु बनाकर बौद्ध-धर्म स्वीकार कर लिया।

इसी समय एक जगह बड़ी बेढब लड़ाई छिड़ गई जिसमें शत्रुओं के एक लाख आदमी मारे गये और इससे भी अधिक क़ैद किये गये। इस मार-काट से अशोक का दिल दहल गया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

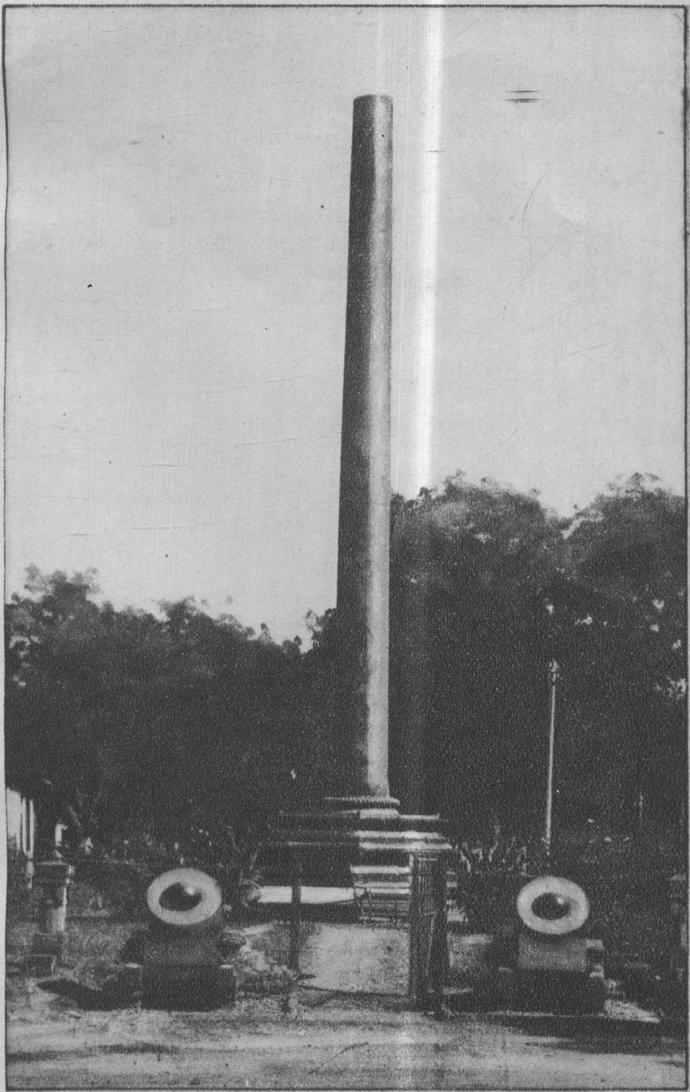

इलाहाबाद के क़िले में अशोक की लाट

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उसने उसी समय से हमेशा के लिए मार-काट बन्द कर दी और सारा समय धर्म के प्रचार में लगाने लगा।

अशोक ने अपने राज्य में जगह-जगह पत्थर गड़वा दिये और उन पर अपनी शिक्षायें खुदवा दीं। उसका कहना था कि अच्छे काम करना, पाप से दूर रहना, जीवों पर दया करना, माता-पिता-गुरु की सेवा करना, सच बोलना—यही सबसे बड़ा धर्म है। उसने जीव-हत्या बन्द करा दी। बीमारों के इलाज के लिए अस्पताल खोले, कुएँ खुदवाये, सड़कें बनवाईं और उनके किनारों पर यात्रियों के आराम के लिए हरे-भरे वृक्ष लगवाये। इन्हीं कारणों से अशोक हमारे देश के बड़ा राजाओं में गिना जाता है।

अशोक की लाटें कई जगहों में पाई जाती हैं। एक लाट इलाहाबाद के क़िले में है जिस पर उस समय का लेख खुदा हुआ है।

अभ्यास

(१) अशोक को राजगद्दी किस तरह मिली ?
(२) अशोक ने बौद्ध-धर्म क्यों ग्रहण किया ?
(३) अशोक ने प्रजा के सुख के लिए क्या-क्या काम किये ?
(४) अशोक की शिक्षा क्या थी ?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ ६

(१) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

जिस तरह अकबर और वीरबल के क़िस्से गाँवों तक में कहे जाते हैं, उसी प्रकार साधारण लोगों में राजा विक्रमादित्य की भी बहुत सी कहानियाँ कही जाती हैं इस राजा का असली नाम चन्द्रगुप्त था परन्तु शत्रुओं को लड़ाई में हराने के कारण उसने विक्रमादित्य की उपाधि ग्रहण की थी। विक्रमादित्य का अर्थ है वीरता का सूर्य। वास्तव के चन्द्र-गुप्त वीरता का सूर्य ही था। उसने बहुत से देश जीते, मालवा और उज्जैन को अपने राज्य में मिलाया और गुजरात के राजाओं को लड़ाई में हराया।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य बड़ा विद्या-प्रेमी था। उसके समय में संस्कृत भाषा की बड़ी उन्नति हुई। विद्वानों को वह हमेशा धन देता था और उनका आदर करता था। उसके यहाँ बहुत से पण्डित रहते थे जो उसकी सभा के रत्न कहलाते थे।

इन रत्नों में महाकवि कालिदास का नाम अधिक प्रसिद्ध है। राजा उसका बड़ा मान करता और उसे अपने साथ रखता था। कालिदास कविता करने में निपुण था। उसने कई संस्कृत की पुस्तकें बनाईं जो अब तक पढ़ी जाती हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

चन्द्रगुप्त के समय में एक चीनी यात्री हिन्दुस्तान आया था। वह देश भर में घूमा और राजा से भी मिला। उसने चन्द्रगुप्त के बारे में लिखा है—

"चन्द्रगुप्त देखने में बहुत सुन्दर मालूम होता था। उसमें राजाओं के सब लक्षण मौजूद थे। शरीर उसका हृष्ट-पुष्ट था। वह लम्बा इतना था कि यदि दोनों हाथ फैला देता तो उनके नीचे से आदमी निकल सकते थे। उसका माथा चौड़ा, आँखें चमकीली, नाक लम्बी और नुकीली तथा चेहरा रोबदार था। उसको शिकार का बहुत शौक़ था। वह बहुधा शेर का शिकार करता था। बड़े-बड़े राजा उसकी वीरता देखकर दङ्ग रह जाते थे।"

चीनी यात्री यह भी लिखता है कि उसके राज्य का प्रबन्ध अच्छा था। धन-दौलत की देश में कमी न थी। व्यापार भी ज़ोर पर था। सड़कों पर आदमियों की ख़ूब भीड़ दिखाई देती थी। डाकू-चोर कहीं नज़र नहीं आते थे। यात्री बे रोक-टोक चाहे जहाँ घूमते थे। जगह-जगह अस्पताल बने हुए थे जहाँ मुफ़्त दवायें दी जाती थीं। एक बार पहाड़ी रास्तों में चलने के कारण यात्री के बायें पैर में छाले पड़ गये। उनके पक जाने से पैर सूज गया और बड़ा दर्द होने लगा। बहुत सी दवा की परन्तु कोई लाभ न हुआ। एक दिन राजधानी में उसे लँगड़ाकर चलते देख किसी सरकारी अफ़सर ने पूछा—तुम्हारे पैर में क्या तकलीफ़ है जो लकड़ी टेककर चलते हो?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

यात्री ने सारा हाल कह दिया। वह अफ़सर उसे अस्पताल ले गया और वहाँ उसका इलाज कराया। इससे तुम जान गये होगे कि चन्द्रगुप्त का राज्य कैसा अच्छा था।

चन्द्रगुप्त के दर्बार में दूर-दूर से लोग इंसाफ़ के लिए आते थे। चीनी यात्री लिखता है कि मैंने लोगों को राज-सिंहासन के सामने सिर नवाते देखा। जब उसने पूछा कि ऐसा क्यों करते हो तो उन्होंने उत्तर दिया कि इसी सिंहासन पर बैठकर राजा हमारा दुःख-दर्द सुनता है, दुष्टों को सज़ा देता है और अच्छे काम करनेवालों को इनाम देता है। यही कारण है कि हम इसके सामने अपना सिर झुकाते हैं।

अभ्यास

(१) चन्द्रगुप्त को विक्रमादित्य क्यों कहते हैं ?

(२) चन्द्रगुप्त का राज्य-प्रबन्ध कैसा था ?

(३) चन्द्रगुप्त की गिनती बड़े राजाओं में क्यों की जाती है ?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ ६

(२) कालिदास

तुम पहले पढ़ चुके हो कि कालिदास चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की सभा के नौ रत्नों में से थे। ये पहले बिलकुल अनपढ़ और गँवार थे और लकड़ी बेचकर अपनी जीविका कमाते थे। उनकी स्त्री ने उन्हें लकड़हारे से पण्डित बना दिया। यह एक बड़ी मनोरंजक कहानी है जिसे अब हम तुम्हें सुनायेंगे।

उज्जैन में एक राजकुमारी रहती थी। उसका नाम विद्योत्तमा था। विद्योत्तमा ख़ूब पढ़ी-लिखी और पण्डिता स्त्री थी। जब वह विवाह के लायक़ हुई तो अपना विवाह ही न करती थी। कहती थी—शास्त्रार्थ में जो मुझे हरा देगा उसी के साथ मैं अपना विवाह करूँगी। उसकी प्रशंसा सुनकर इधर-उधर के बड़े-बड़े विद्वान् उसके साथ विवाह करने की इच्छा से इकट्ठे हुए।

विद्योत्तमा हर एक से इशारों में दो सवाल करती थी, पहले सवाल में एक उँगली दिखा देती थी। दूसरे सवाल में पाँच उँगलियाँ दिखला देती थी। जितने पण्डित वहाँ जमा थे उनमें कोई भी उसके इशारों के सवालों का जवाब न दे पाया। इससे उसने किसी के साथ विवाह न किया। पण्डित लोग हार जाने से बहुत लज्जित हुए और सबने मिलकर सलाह की कि इस सती ने हम लोगों का अपमान किया और शास्त्रार्थ में

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हराया। इसे बड़ा घमण्ड हो गया है इसलिए किसी हिक्मत से ऐसे मूर्ख के साथ इसका विवाह करवाना चाहिए जिसमें यह जन्म भर रोवे।

इस तरह की सलाह कर सब लोग चल दिये। चलते-चलते उन्होंने किसी गाँव के पास जङ्गल में एक पेड़ पर एक आदमी को चढ़ा हुआ देखा। वह पेड़ पर चढ़ा हुआ लकड़ा काट रहा था। पर जिस डाली को काट रहा था उसी पर पैर रक्खे खड़ा था। लोगों ने कहा—इससे बढ़कर मूर्ख कौन होगा कि जिस डाली पर चढ़ा है उसी को काट रहा है। यह भी नहीं जानता कि धड़ाम से गिरूँगा।

उन्होंने उसे उतारकर उसका नाम पूछा। उसने कहा—मेरा नाम कालिदास है। पण्डितों ने कहा—चलो हम लोग बड़ी अच्छी जगह तुम्हारा विवाह करा देंगे। तुम्हें ख़ूब रुपया-पैसा मिलेगा पर तुम वहाँ बोलना मत, जो कुछ कहना हो इशारे से ही कहना। यदि बोल दोगे तो बहुत पीटे जाओगे।

कालिदास पण्डितों के साथ चल दिया। पण्डित उसे लेकर विद्योत्तमा के यहाँ गये और बोले—एक बड़े भारी पण्डित आये हैं। वे आपसे विवाह करना चाहते हैं। विद्योत्तमा ने कहा—उन्हें लाओ, पहले मेरे सवालों का उत्तर तो दें। एक ओर विद्योत्तमा बैठी, दूसरी ओर सामने कालिदास। विद्योत्तमा ने इसे यह दिखाने के लिए कि ईश्वर एक है, एक उँगली उठाई। कालिदास ने समझा यह मेरी एक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आँख फोड़ना चाहती है। उसने दो उँगलियाँ दिखा दीं यानी मैं तेरी दोनों आँखें फोड़ दूँगा।

विद्योत्तमा ने समझा कि मेरे सवाल का भी ठीक जवाब मिला, मैंने पूछा कि एक ईश्वर ही चेतन है, इसने दो उँगलियाँ उठाकर जवाब दिया है कि ईश्वर और जीव दोनों चेतन हैं। फिर विद्योत्तमा ने पञ्जा दिखाया। कालिदास ने समझा यह मुझे थप्पड़ मारने को कहती है। उन्होंने मुट्ठी दिखा दी यानी मैं तेरे घूँसा मार दूँगा।

विद्योत्तमा ने समझा, मेरे इस सवाल का भी ठीक उत्तर मिला। मैंने पूछा—पाँच तत्त्व हैं? इसने मुट्ठी बाँधकर बतलाया कि पाँचों तत्त्व मिलकर काम करते हैं। विद्योत्तमा बोली—इन्होंने मेरे सवालों का ठीक उत्तर दिया है।

अब क्या था, कालिदास के साथ विद्योत्तमा का विवाह हो गया। विद्योत्तमा समझ रही थी कि मैंने बड़ा पण्डित पति पाया। पण्डित मन में खुश होते हुए घर को चल दिये कि इसको हम लोगों ने खूब छकाया, याद करेगी।

रात के समय पड़ोस में एक ऊँट चिल्लाया। विद्योत्तमा ने कालिदास से कहा—ज़रा देखिए, यह कौन चिल्ला रहा है। कालिदास ने बाहर देखकर वहीं से जवाब दिया—"उट्र है उट्र!" कालिदास की बोली सुनकर विद्योत्तमा ने समझा, यह तो बड़ा मूर्ख है। पण्डितों ने मुझे धोखा दिया। उसने किवाड़ बन्द कर लिये और रोने लगी। कालिदास ने बहुत पुकारा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पर उसने किवाड़ न खोले, कहा—मैं तुझ जैसे मूर्ख के साथ नहीं रहना चाहती। कालिदास को यह सुनकर बड़ा गुस्सा आया और साथ ही साथ शर्म भी आई।

वे उसी समय पढ़ने के लिए चल दिये और थोड़े ही दिनों में परिश्रम करके खूब संस्कृत पढ़ ली। सचमुच पूरे पण्डित होकर घर लौटे। घर आकर दरवाज़े में धक्का दिया तो दरवाज़ा बन्द पाया। उन्होंने संस्कृत में ही दरवाज़ा खोलने को कहा। विद्योत्तमा ने आवाज़ पहचान ली और दौड़कर किवाड़ खोल दिये।

इसके बाद कालिदास विक्रमादित्य की सभा में आने जाने लगे। वहाँ उनका बड़ा आदर हुआ। कालिदास ने संस्कृत की तीन ऐसी पुस्तकें बनाईं जिनका आदर दूसरे देशों तक में हुआ। उन किताबों के नाम शकुन्तला, मेघदूत और रघुवंश हैं।

अभ्यास

(१) कालिदास का विद्योत्तमा के साथ किस तरह विवाह हुआ?

(२) कालिदास ने संस्कृत किस तरह पढ़ी?

(३) कालिदास की बनाई हुई दो एक पुस्तकों के नाम बताओ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ ७

हर्षवर्धन

आजकल अक्सर भाइयों में आपस में ज़रा-ज़रा सी बात पर लड़ाई हो जाया करती है। बहुतेरे तो एक दूसरे की जान के गाहक हो जाते हैं। किन्तु हमारे देश में ऐसे भाई पैदा होते रहे हैं जो आपस के प्रेम के कारण एक दूसरे के लिए अपने प्राण देने को तैयार रहते थे तथा भाई के लिए राज्य तक की इच्छा न करते थे। आगे की मनोरञ्जक कहानी से यह बात हमको भली भाँति मालूम हो जायगी।

पञ्जाब में कुरुक्षेत्र के पास थानेश्वर नामक एक स्थान है। थानेश्वर में एक राजा राज्य करते थे जिनका नाम प्रभाकरवर्धन था। प्रभाकरवर्धन अपनी प्रजा को पुत्र के समान चाहते थे। प्रजा भी उनके लिए जान देने को तैयार रहती थी। प्रभाकरवर्धन के दो पुत्र थे। बड़े का नाम था राज्यवर्धन और छोटे का हर्षवर्धन। उनके एक पुत्री भी थी जिसका नाम राज्यश्री था।

प्रभाकरवर्धन के दोनों पुत्र और पुत्री बहुत सुशील, स्वरूपवान् और बड़े बहादुर थे। तीनों एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे। राजा भी अपनी पुत्री और पुत्रों को देखकर ख़ुशी से फूला न समाता था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राज्यश्री धीरे-धीरे विवाह के योग्य हुई तब राजा ने चारों ओर वर की तलाश में आदमी भेजे। अन्त में कन्नौज के राजा ग्रहवर्मा के साथ उसका विवाह निश्चित हुआ और शुभ मुहूर्त्त में बड़ी धूमधाम से विवाह हो गया।

राजा प्रभाकरवर्धन अब सब चिन्ताओं से दूर हो अपने सुख के दिन काट रहे थे पर इसी समय हूण जाति के लोगों ने उपद्रव शुरू किया। हिन्दुस्तान पर जगह-जगह उनके हमले होने लगे। ऐसी आपत्ति के समय भला प्रभाकरवर्धन कैसे चुप बैठ सकते थे। हूणों को दबाने के लिए उन्होंने अपने बड़े लड़के राज्यवर्धन को बहुत सी सेना देकर भेजा। छोटा भाई हर्षवर्धन बोला—युद्ध के लिए मैं जाऊँगा किन्तु बड़े भाई और पिता ने समझाया तुम अभी छोटे हो इसलिए घर पर ही रहो। हर्षवर्धन मान गया। राज्यवर्धन लड़ाई पर चला गया।

राज्यवर्धन को हूणों को हराने में बहुत समय लग गया। इधर प्रभाकरवर्धन बीमार पड़ गये। बहुत दवा-दारू की गई पर सब व्यर्थ, उनको मृत्यु ने धर दबाया। बड़ा भाई इस समय पास न था, गद्दी सूनी हो गई थी। छोटे भाई हर्षवर्धन के दुःख का ठिकाना न था। प्रजा ने हर्ष को किसी तरह समझा-बुझाकर धीरज बँधाया और गद्दी पर बैठने को कहा। हर्ष ने कहा—गद्दी का हक़ बड़े भाई का है, मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता। आप लोग प्रेम के वश ऐसा कह रहे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हैं। गद्दी पर बड़ा भाई ही बैठेगा। प्रजा के बहुत कहने-सुनने पर हर्षवर्धन राज्य का प्रबन्ध करने लगा।

एक दिन हर्ष को समाचार मिला कि भाई हूणों को हराकर थानेश्वर आ रहा है। अब तो हर्ष की खुशी का क्या कहना। उन्होंने सोचा कि भाई आया और राज्य का भार मेरे सिर से उतरा। राज्यवर्धन के आने पर बड़ी खुशियाँ मनाई गईं, नगर खूब सजाया गया। किन्तु उसी समय उन्हें खबर मिली कि उनके बहनोई ग्रहवर्मा को मालवा-नरेश ने मार डाला है। तब तो फिर खुशी की जगह दुःख छा गया।

राज्यवर्धन का क्रोध से खून खौलने लगा। वे उसी समय बहनोई के खून का बदला लेने को तैयार हो गये। इस बार हर्ष ने ज़िद पकड़ ली। बोला—अब की बार आप सिंहासन पर बैठ कर राज-काज देखिए और मुझे शत्रुओं से लड़ने के लिए जाने दीजिए। परन्तु राज्यवर्धन ने एक न मानी और कहा कि नहीं, तुम यहीं रहो। मेरे रहते तुम्हें लड़ाई पर जाने की ज़रूरत नहीं है। बड़े भाई की आज्ञा होने पर छोटा भाई क्या कर सकता था। हर्ष मन मारकर रह गया।

राज्यवर्धन सेना लेकर कन्नौज जा पहुँचा और बात की बात में शत्रुओं को मौत का दरवाज़ा दिखाकर अपनी दुखी बहन राज्यश्री के साथ विजय का डङ्का बजाता हुआ लौटा। वह अभी लौट ही रहा था कि रास्ते में बङ्गाल के राजा शशांक

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ने आकर अकस्मात् उस पर धावा बोल दिया और राज्यवर्धन को मार डाला। राज्यश्री को फिर उसी दुःख ने आ घेरा। वह मारे दुःख के अपनी दासियों के साथ विन्ध्याचल की ओर जङ्गलों में चली गई।

छोटे भाई हर्ष को जब अपने भाई की मृत्यु का समाचार मिला तो वह बहुत ही दुःखी हुआ। लोगों ने समझा-बुझाकर उसे सिंहासन पर बैठाया।

राजगद्दी पर बैठने के साथ हर्ष ने वैरियों से बदला लेने का निश्चय किया और अच्छी सेना इकट्ठी करके देश जीतना प्रारम्भ किया।

उधर राज्यश्री जङ्गल में बहुत दुखी होकर जलने की तैयारी करने लगी। चिता तैयार हो गई। वह आँखें बन्द किये हुए ईश्वर-प्रार्थना कर रही थी कि इसी समय हर्ष उसे ढूँढ़ता हुआ वहाँ जा पहुँचा। बहन का दुःख देखकर उसकी आँखों में आँसू भर आये। बहन ने भी आँखें खोलकर भाई की ओर देखा। वह फूट-फूटकर रोने लगी। हर्ष ने समझाया—बहन! जो कुछ होना था सो हो चुका, अब धैर्य धरो और जलने का विचार छोड़ दो। सबके समझाने-बुझाने से राज्यश्री का दुःख कुछ कम हुआ और वह चिता से कुछ दूर हट एक पेड़ के नीचे जाकर बैठ गई। फिर हर्ष उसे समझाकर घर लिवा लाया।

हर्षवर्धन बड़ा धर्मात्मा और दानी था। वह हर पाँचवें वर्ष प्रयाग स्नान करने आता था और गङ्गा-यमुना के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सङ्गम पर कई दिन ठहरता था। हज़ारों डेरे तम्बू लग जाते थे। कई दिन तक ख़ासा मेला रहता था। बड़ी चहल-पहल रहती थी। उस समय हज़ारों लाखों यात्री आकर इकट्ठे होते थे। बड़े-बड़े राजा-महाराज आते थे। ऐसे-ऐसे मण्डप बनाये जाते थे जिनमें हज़ारों आदमी बैठ सकें। उन मण्डपों में रोज़ सभाएँ होती थीं।

धर्म-चर्चा, वाद-विवाद, उपदेश आदि होते थे। पहले दिन महात्मा बुद्ध की मूर्ति स्थापित की जाती थी और बौद्ध लोग बोलते थे। दूसरे दिन सूर्य की मूर्ति स्थापित की जाती थी और ब्राह्मण लोग बोलते थे। तीसरे दिन शिव की मूर्ति स्थापित की जाती थी और शैव बोलते थे। इसी तरह सब धर्मों के माननेवालों को बोलने का मौक़ा मिलता था और राजा सबका समान आदर करता था।

जब सभाएँ समाप्त हो जाती थीं और डेरे उखड़ने को होते थे तब राजा दीन-दुखियों और ब्राह्मणों को दान देता था। अपनी तमाम दौलत वह दूसरों को बाँट देता था, यहाँ तक कि अपने पहनने के कपड़े तक नहीं रखता था। फिर अपनी बहन से कपड़े माँगकर पहनता था। कहते हैं कि वह कभी किसी को ख़ाली तो लौटाता ही न था। जो आदमी जिस इच्छा से आता था वह अपनी इच्छा पूरी करके लौटता था।

हर्ष के समय में नालन्द (बिहार) नामक स्थान में एक बड़ा विद्यालय था जहाँ १० हज़ार विद्यार्थी पढ़ते थे। इसका

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सब खर्च हर्ष ही देता था। किसी से कुछ फ़ीस नहीं ली जाती थी और खाने-पीने का बढ़िया सामान मुफ़्त दिया जाता था।

भला जो राजा इतना बहादुर, विद्वान, धर्मात्मा, दानी और भाई-बहन से प्रेम करनेवाला होगा उसकी सब प्रशंसा क्यों न करेंगे और उसका नाम क्यों न अमर हो जायगा। इसी लिए अब तक सब कोई हर्षवर्धन को जानते और उसका चरित्र पढ़ते हैं।

अभ्यास

(१) हर्ष के भ्रातृ-प्रेम का उदाहरण दो।

(२) गृहवर्मा कौन था ? उसके बारे में तुम क्या जानते हो ?

(३) राज्यवर्धन की मृत्यु किस प्रकार हुई ?

(४) हर्ष बड़ा धर्मात्मा और दानी क्यों कहलाता है ? क्या तुम उसके दान की कोई मिसाल दे सकते हो ?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

(१) महमूद ग़ज़नवी

तुम जानते हो कि एक समय ऐसा था जब हमारे देश में मुसलमानों का राज्य था। पहला मुसलमान बादशाह, जिसने हिन्दुस्तान पर कई हमले किये, महमूद ग़ज़नवी था।

महमूद का बाप सुबुक्तगीन एक मामूली आदमी था। कहते हैं कि बादशाह होने के पहले वह एक बार जङ्गल में शिकार के लिए गया। वहाँ उसने एक हिरनी को अपने बच्चे के साथ चरते देखा। रकाब में पैर रखकर उसने बच्चे का पीछा किया और उसे पकड़ लिया। दुःख के मारे आँखों में आँसू भरे हुए हिरनी सुबुक्तगीन के पीछे चल दी। सुबुक्तगीन ने पीछे फिरकर देखा तो हिरनी दौड़ी आ रही थी।

उसका हृदय दया से पिघल गया। उसने बच्चे को छोड़ दिया। बच्चा कूदता हुआ अपनी माँ के पास जा खड़ा हुआ। अब हिरनी बहुत ख़ुश हुई और टकटकी लगाकर सुबुक्तगीन की तरफ़ देखने लगी मानो अहसानमन्द होकर दुआ दे रही हो। जब सुबुक्तगीन घर को चल दिया तो हिरनी भी जङ्गल की ओर चल दी।

उसी दिन रात को सुबुक्तगीन ने स्वप्न देखा कि किसी ने उससे कहा कि तूने आज एक दुखी जानवर पर रहम किया

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

है इससे ख़ुदा बहुत ख़ुश हुआ है। तुझे ग़ज़नी का राज्य मिलेगा; परन्तु राज्य पाकर घमण्ड न करना। मनुष्यों पर रहम करना और उनके साथ इन्साफ़ का बर्ताव करना। स्वप्न की बात सच्ची हुई। सुबुक्तगीन ग़ज़नी का बादशाह हो गया। उसने बहुत से देश जीते और एक बड़ा राज्य बनाया। उसने प्रजा के साथ अच्छा बर्ताव किया और हमेशा उसके सुख का ख़याल रक्खा।

महमूद भी अपने बाप की तरह बहादुर और इन्साफ़-पसन्द निकला। उसे भी देश जीतने का बड़ा शौक़ था। उसने हिन्दुस्तान पर कई हमले किये। सबसे प्रसिद्ध हमला उसका सोमनाथ के मन्दिर पर हुआ था।

यह मन्दिर काठियावाड़ में समुद्र के किनारे पर था और बड़ा मज़बूत बना हुआ था। मन्दिर के ख़र्च के लिए सैकड़ों गाँव लगे हुए थे। जब महमूद ने सुना कि मन्दिर में बेशुमार दौलत है तो उसने एक फ़ौज जमा की। बीस हज़ार ऊँट लेकर वह ग़ज़नी से चल दिया। मन्दिर की रक्षा के लिए हज़ारों राजपूत इकट्ठे हुए। दीवारों पर से पुजारी, हमला करनेवालों की, हँसी उड़ा रहे थे और कह रहे थे कि हमारा देवता इन्हें बात की बात में नष्ट कर देगा। परन्तु महमूद ने हिम्मत न हारी। घमासान लड़ाई हुई। राजपूत हार गये और महमूद ने अपने सिपाहियों के साथ मन्दिर में प्रवेश किया।

मन्दिर की शान-शौकत देखकर महमूद दङ्ग रह गया। पुजारियों ने उससे गिड़गिड़ाकर कहा कि आप चाहे जितनी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दौलत ले लीजिए परन्तु हमारे देवता को हाथ न लगाइए। महमूद यह प्रार्थना कब सुननेवाला था। उसने कहा कि मैं मूर्त्तियों को बेचनेवाला नहीं बनना चाहता। यह कहकर उसने मूर्त्ति को तोड़ डाला और बहुत-सा धन लूटा।

बेशुमार सोना चाँदी जवाहरात लेकर महमूद ग़ज़नी की तरफ़ चल दिया। रास्ता रेगिस्तान में होकर था और किसी का देखा हुआ नहीं था। उसी समय एक आदमी महमूद के पास आया। उसने कहा कि सब रास्ते मेरे देखे हुए हैं। मैं आपको ठीक ग़ज़नी पहुँचा दूँगा, मुझे नौकर रख लीजिए।

महमूद ने उसे नौकर रख लिया और वह रास्ता बतलाता आगे चला। आठ दिन चलने के बाद वह फ़ौज को लेकर ऐसी जगह पहुँचा जहाँ पानी का नाम-निशान न था। चारों तरफ़ रेत के बादल छाये हुए थे। लोग भूख-प्यास से मरने लगे। तब महमूद ने उस आदमी को बुलाया और कहा कि यह तुमने क्या किया। उसने उत्तर दिया—अरे दुष्ट! तूने मेरा देश उजाड़ दिया, मेरे मन्दिर लूट लिये; फिर भी तू समझता है कि तुझे ऐसे पापों की सज़ा न मिलेगी। यह तेरी ग़लती है। मैं सोमनाथ के मन्दिर का एक पुजारी हूँ; और जान-बूझकर तुझे और तेरी सेना को इस जगह लाया हूँ। पुजारी यह कह ही रहा था कि महमूद के सिपाही उस पर टूट पड़े और अपनी तलवारों से उसका सिर उड़ा दिया। मरते दम तक वह हँसते-हँसते यही कहता रहा—सोमनाथ! सोमनाथ!

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महमूद कुछ पढ़ा-लिखा तो न था, परन्तु पढ़े-लिखों से बहुत प्रेम करता था। उसके दरबार में अच्छे-अच्छे विद्वान् और कवि रहा करते थे; कविता सुनने का उसे बहुत शौक़ था।

उस समय फ़िरदौसी नाम का एक बहुत मशहूर और अच्छा कवि था। महमूद ने फ़िरदौसी को 'शाहनामा' लिखने के लिए कहा और हर एक शेर के लिए एक अशर्फ़ी देने का वादा किया; परन्तु जब कविता तैयार हो गई तब महमूद ने अशर्फ़ियों के बदले चाँदी के रुपये दिये।

फ़िरदौसी हम्माम में था। जब रुपया पहुँचा तब उसने सब रुपया उसी जगह लुटा दिया और ग़ज़नी से चला गया। चलते वक़्त महमूद की बुराई में उसने कुछ शेरें लिखीं जो आज तक पढ़ी जाती हैं। महमूद बहुत लज्जित हुआ। उसने अपने वादे के अनुसार ६० हज़ार अशर्फ़ियाँ फ़िरदौसी के घर भेजीं परन्तु जिस समय रुपया पहुँचा, उसका जनाज़ा घर से बाहर निकल रहा था। लोग उसकी लाश को दफ़न करने ले जा रहे थे।

अभ्यास

(१) महमूद के बाप का क्या नाम था? उसे ग़ज़नी का राज्य किस तरह मिला?

(२) सोमनाथ का मन्दिर कहाँ पर था? महमूद ने उस पर क्यों चढ़ाई की? इस चढ़ाई का हाल बताओ।

(३) सोमनाथ के पुजारी ने महमूद से किस तरह बदला लिया?

(४) फ़िरदौसी कौन था? उसके साथ महमूद ने कैसा बर्ताव किया था?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ ८

(२) महमूद ग़ज़नवी

महमूद इन्साफ़ अच्छा करता था। एक दिन एक किसान महमूद के पास आकर रोने लगा। महमूद ने पूछा—क्या बात है ? उसने कहा—हुज़ूर, आपकी फ़ौज का एक अफ़सर, मेरी औरत को ज़बरदस्ती छीन लेना चाहता है। उसने मुझे मारा भी है। महमूद ने कहा—अच्छा, जब वह अफ़सर तुम्हारे घर आवे तो मुझे चुपके से ख़बर करना।

किसान चला गया। तीसरे दिन वह फिर आया और महमूद से बोला—सरकार, आज वह अफ़सर मेरे घर फिर आया है। महमूद एक तलवार लेकर अकेला उसके साथ हो लिया। घर पहुँच कर उसने दीपक बुझा दिया कि कहीं रहम न आ जाय। फिर एक ही वार में उस अफ़सर का सिर धड़ से अलग कर दिया। दूसरे अफ़सर यह सुनकर थर्राने लगे और डर गये।

एक बार किसी सौदागर को डाकुओं ने लूट लिया और मार डाला। उसकी बूढ़ी माँ ने ग़ज़नी पहुँच कर बादशाह को अपनी दुःख-कहानी सुनाई। महमूद ने कहा—मुझे बड़ा अफ़सोस है। परन्तु इतने दूर देश में इन्तज़ाम करना बहुत कठिन

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

है। इस पर बुढ़िया से न रहा गया। उसने कहा कि अगर तू प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता तो देशों को क्यों जीतता है।

इस बात से महमूद बड़ा लज्जित हुआ। उसने बुढ़िया को इनाम दिया और कहा कि तुम घर जावो। अब इन्तज़ाम कर दिया जायगा।

कहते हैं कि महमूद की लूट-मार को देख कर उसका मन्त्री बहुत दुखी होता था। वह दिन-रात यही सोचा करता था कि किसी तरह इसकी इस आदत को छुड़ाना चाहिए। उसने बादशाह से कह रक्खा था कि मैं चिड़ियों की बोली अच्छी तरह समझता हूँ।

एक दिन महमूद, अपने वज़ीर के साथ, किसी देश को जीत कर लौट रहा था। शाम हो गई थी। जङ्गल का रास्ता था। एक पेड़ पर दो उल्लू बोल रहे थे। महमूद ने कहा—मन्त्री, तुम तो चिड़ियों की बोली समझते हो। बतलाओ ये उल्लू आपस में क्या बातें कर रहे हैं। मन्त्री कुछ देर तक चुपचाप पेड़ के पास खड़ा रहा फिर बोला—हुजूर, मैंने सब सुन लिया। आप आगे चलें। महमूद ने कहा—क्या सुना ? मुझे भी सुनाओ। मन्त्री ने कहा—आपका न सुनना ही ठीक है। महमूद ने कहा—नहीं, मुझे सुनाओ। डरो मत। बोलो, ये क्या कह रहे थे। मन्त्री ने कहा—सरकार क़सूर माफ़ हो; मैं सुनाये देता हूँ। इनमें एक के लड़का है दूसरे के लड़की। लड़कीवाला अपनी लड़की का ब्याह दूसरे के लड़के के साथ करना चाहता

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

है। परन्तु लड़केवाला कहता है कि यदि तुम मुझे पचास ऊजड़ गाँव दहेज में दो तो मैं अपने लड़के का ब्याह तुम्हारी लड़की से करूँ। तब लड़कीवाला बोला—बादशाह महमूद ज़िन्दा रहे, तो पचास क्या पाँच सौ ऊजड़ गाँव दे दूँगा। यही बातचीत हो रही है। इसका महमूद पर बड़ा असर पड़ा। उसने उसी दिन से लूट-मार करना बहुत कम कर दिया।

महमूद ने मरते दम तक लालच न छोड़ा। जब मरने लगा तो उसने अपनी सारी दौलत निकालकर पलँग के पास रखवाई और उसे देखकर रोया। उसने लोगों से कहा कि जिस दौलत को मैंने हज़ारों मुसीबतें उठाकर जमा किया है वह यहीं रह जायगी। परन्तु अब क्या हो सकता था। ख़ाली हाथ महमूद ने इस संसार से कूच किया।

इससे तुम यह न समझो कि महमूद ने अच्छे कामों में रुपया नहीं ख़र्च किया। उसने ग़ज़नी शहर में बड़ी उम्दा इमारतें बनवाईं। अजायबघर; पुस्तकालय और विद्यालय बनवाये। इसी लिए महमूद संसार के मशहूर बादशाहों में गिना जाता है।

अभ्यास

(१) महमूद के इन्साफ़ की दो एक मिसाल दो।

(२) महमूद की गिनती संसार के बड़े बादशाहों में क्यों की जाती है?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ ९

(१) पृथ्वीराज चौहान

उत्तरी भारत में ऐसा कोई न होगा जिसने पृथ्वीराज चौहान का नाम न सुना हो। यह दिल्ली का राजा था और बड़ा बहादुर थ । उस समय जितने छोटे-मोटे राजा थे, सब पर इसने अपनी धाक जमा दी थी। जिस समय शत्रुओं का सामना पड़ता था, यह उनके छक्के छुड़ा देता था। निशाना लगाने में कोई इसकी बराबरी न कर सकता था। जैसा वीर वह खुद था, वैसे ही वीर उसने अपनी सेना में भी भरती कर रक्खे थे जो मौक़ा पड़ने पर जान पर खेल जाते थे।

जिस समय पृथ्वीराज दिल्ली का राजा था उसी समय कन्नौज में जयचन्द राज्य करता था। पृथ्वीराज और जयचन्द दोनों आपस में रिश्तेदार थे। परन्तु फिर भी मनमुटाव रहता था। जयचन्द मन ही मन पृथ्वीराज से कुढ़ा करता था। जयचन्द के एक बड़ी सुन्दरी गुणवती लड़की थी जिसका नाम संयुक्ता था। संयुक्ता जब विवाह के योग्य हुई तो जयचन्द ने उसका स्वयंवर किया। उसने सब राजाओं को तो बुलाया परन्तु पृथ्वीराज को न्यौता न दिया। उसने पृथ्वीराज की एक मूर्ति बनवाकर सभा के दरवाज़े पर दरबान की जगह खड़ी करा दी।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पृथ्वीराज चौहान

...hratnasuri MS Jin Gun Aradhak Tru...

पृथ्वीराज को जब इस बात का पता चला तो वह मारे क्रोध के आग-बबूला हो गया। उसने सोचा कि जयचन्द ने मेरा बड़ा अपमान किया है। इसका बदला अवश्य लेना चाहिए। बस, अपने कुछ चुने हुए सिपाही लेकर वह कन्नौज की तरफ़ चल पड़ा।

इधर सभा में सब आये हुए राजा लोग बड़ी सजधज से मूँछें ऐंठते हुए अपनी-अपनी जगहों पर बैठ गये। संयुक्ता जयमाल लेकर सभा में आई। एक भाट उसके साथ था। संयुक्ता हर एक राजा के सामने खड़ी हो जाती थी। भाट उस आदमी का परिचय देता था। संयुक्ता उसे पसन्द न करके आगे बढ़ जाती थी। जिस राजा के सामने संयुक्ता पहुँचती थी वह बड़ी शान में आ जाता था कि जयमाल मेरे ही गले में पड़नेवाली है। परन्तु जब संयुक्ता उसके आगे से निकल जाती तो वह खिसियाकर रह जाता। इसी तरह बढ़ती-बढ़ती वह दरवाज़े के पास पहुँच गई, जहाँ पृथ्वीराज की मूर्ति खड़ी थी। उसने पास पहुँचते ही मूर्ति के गले में जयमाल डाल दी।

अब जयचन्द के ग़ुस्से का ठिकाना न रहा। वह बोला—तूने मेरे दुश्मन को जयमाल क्यों पहनाई, इसके साथ तेरा विवाह नहीं हो सकता। मूर्ति से कहीं किसी का विवाह हुआ है? संयुक्ता ने कहा—विवाह तो एक ही बार होता है। मैं जिसको पति बना चुकी, बना चुकी। अब क्या होता है?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

इस तरह की बातचीत हो ही रही थी कि पृथ्वीराज आ पहुँचा और संयुक्ता को घोड़े पर बिठाकर ले गया। सभा में खलबली मच गई। जयचन्द ने अपने वीरों को हुक्म दिया कि पृथ्वीराज जाने न पावे। तलवारें खिंच गईं, युद्ध छिड़ गया। पृथ्वीराज के बहादुर सिपाही जयचन्द के योद्धाओं की ख़बर लेने लगे। जो पृथ्वीराज के सामने आया वही तलवार के घाट उतरा। इस तरह मारकाट करते हुए जीत के साथ पृथ्वीराज दिल्ली पहुँचे और संयुक्ता से विवाह कर लिया। पृथ्वीराज ने बहुत दिन तक राज्य किया। अन्त में जब ग़ज़नी के बादशाह शहाबुद्दीन ग़ोरी ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई की तो वह लड़ाई में मारा गया। वह हमारे देश का आख़िरी हिन्दू सम्राट् था।

अभ्यास

(१) पृथ्वीराज का राज्य कहाँ था ?

(२) जयचन्द के साथ पृथ्वीराज की क्यों लड़ाई हुई ? कारण बताओ।

(३) पृथ्वीराज के राज्य का किस तरह अन्त हुआ ?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ ९

(२) आल्हा ऊदल

आल्हा ऊदल को कौन नहीं जानता ? गाँवों में बरसात के दिनों में घर-घर आल्हा गया जाता है। सैकड़ों आदमी सुनने के लिए इकट्ठे होते हैं। बिना पढ़े-लिखे लोगों को आल्हा की वीरताभरी कथा ज़बानी याद रहती है और वे गाते-गाते गुस्से में भर जाते हैं। कहीं-कहीं तो झगड़ा तक हो पड़ता है। आल्हा ऊदल बड़े वीर पुरुष थे। वीरता के कारण ही उनका नाम आज तक चला आता है।

आल्हा ऊदल दोनों सगे भाई थे। उनका जन्म पृथ्वीराज के समय में हुआ था। झाँसी के पास महोबा नामक छोटा-सा राज्य था। वहाँ का राजा परमाल था। परमाल स्वयं भी बड़ा वीर था। उसकी सेना में जस्सराज नामक एक सरदार था। आल्हा ऊदल उसी के बेटे थे।

ऊदल का जन्म पिता की मृत्यु के बाद हुआ था। आल्हा ऊदल से पाँच वर्ष बड़ा था। इससे पुत्रों को पितृ-सुख नसीब न हुआ। परमाल की रानी मल्हना ने दोनों को अपने लड़कों के समान रक्खा। दोनों जब कुछ बड़े हुए और युद्ध-विद्या में निपुण हो गये तो एक दिन परमाल के लड़के ब्रह्मा के साथ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शिकार खेलने गये। जङ्गल में वहाँ के रहनेवालों ने इनसे छेड़-छाड़ की; इस पर आल्हा ऊदल ने उनको मार डाला। वहाँ के राजा माहिल ने महोबे आकर राजा परमाल से उनकी शिकायत की और कहा कि यदि आल्हा ऊदल ऐसे ही बहादुर हैं तो अपने बाप के दुश्मन से उसकी मौत का बदला क्यों नहीं लेते। यही बात माहिल ने ऊदल से भी कही।

ऊदल ने उसी समय घर जाकर माता देवला से अपने पिता की मौत का कारण पूछा। माता ने बताया कि मैं एक बार तुम्हारे पिता के साथ गङ्गा-स्नान को गई तो माड़ा के राजा कलिङ्गराय ने एकदम उन पर चढ़ाई कर दी। उन्होंने कलिङ्ग को हरा दिया। इस पर वह और भी चिढ़ गया। एक दिन वह आधी रात को घर में घुस आया और मेरा नौलखा हार छीन ले गया। साथ ही तुम्हारे पिता और चाचा को भी बाँध ले गया। घर जाकर तुम्हारे पिता का सिर कटवाकर उसने अपने महल के ऊपर लटका दिया। मैंने यह हाल तुमसे इसलिए नहीं कहा कि अभी तुम बालक हो।

यह हाल सुनते ही ऊदल के क्रोध की आग धधक उठी। उसने शपथ खाई कि अब कलिङ्गराय से बदला लेकर ही अन्न-जल ग्रहण करूँगा। बस, सेना लेकर आल्हा ऊदल ने उसी समय माड़ा पर चढ़ाई कर दी। माडा के चारों ओर बारह कोस तक बबूलों का जङ्गल था जिससे सेना एकदम नगर में नहीं घुस सकती थी। आल्हा ऊदल ने बबूलों को कटवाकर अपना

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

रास्ता साफ़ कर लिया और चढ़ाई कर दी। ऊदल ने अद्भुत वीरता दिखाई। कलिङ्गराय हाथी पर सवार था। ऊदल ने उसे नीचे गिराकर क़ैद कर लिया। फिर क्या था, सेना भाग खड़ी हुई। आल्हा ऊदल की सेना ने शहर को ख़ूब लूटा। आल्हा ने अपनी माता का नौलखा हार रानी से ज़बरदस्ती छीन लिया और विजय के सहित महोबे लौटा।

कलिङ्गराय को माता के सामने पेश करते हुए आल्हा ऊदल ने पूछा—माँ! इसे क्या सज़ा देना चाहती हो? माता ने दयापूर्वक कहा—बस, इसे काफ़ी सज़ा मिल चुकी। अब इसे छोड़ दो। कलिङ्गराय छोड़ दिया गया।

आल्हा ऊदल की वीरता का डङ्का चारों ओर बज गया था। उनकी नामवरी से जलकर परमाल के राजकर्मचारियों ने आल्हा ऊदल के विरुद्ध परमाल को उभाड़ना शुरू किया और इतना उभाड़ा कि परमाल ने लाचार होकर उन्हें अपने राज्य से निकाल दिया। दोनों कन्नौज के राजा जयचन्द के यहाँ चले गये।

पृथ्वीराज ने देखा कि परमाल के यहाँ जो वीर थे वे तो चले ही गये, अब महोबा को दबा लेना चाहिए। उसने चढ़ाई कर दी। लड़ाई के नाम से परमाल घबड़ा उठा। क्या करता, उसने फिर आल्हा ऊदल को बुलाया पर वे आने को राज़ी न हुए। तब परमाल ने उनकी माता देवला को बहुत समझाया-बुझाया और लड़कों को बुलाने को कहा। माता के बहुत कहने-

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सुनने से आल्हा ऊदल फिर परमाल के यहाँ आये। परमाल ने उन्हें बड़े आदर से लिया। इसके बाद सेना सजाई गई। मैदान में दोनों ओर से मोरचे लग गये। देखते-देखते घमासान लड़ाई शुरू हो गई। आल्हा ऊदल ने मूली की तरह दुश्मनों को काटना शुरू कर दिया। कोई-कोई कहते हैं कि अन्त में बड़ी वीरता से लड़ते हुए आल्हा ऊदल मारे गये और परमाल पहले ही भाग खड़े हुए।

आल्हा ऊदल कहा करते थे—

सगुन बिचारें बाह्मन बनियाँ, सिर धरि मौर बियाहन जायँ।
सगुन बिचारें हम क्या छत्री, जो रन चढ़िके लोह चबायँ॥

आल्हा ऊदल की लड़ाई कैसी होती थी, इसका कुछ हाल आल्हाखण्ड से यहाँ दिया जाता है। पढ़ो, देखो कैसा वीरता से भरा हुआ और जोश बढ़ानेवाला है—

झुके सिपाही महुबेवाले, खट खट चलन लगी तलवार।
बोले हमरी तुम्हरी बरनी, समुहैं खेलो जूझ अघाय॥
खैंचि सिरोही लइ छत्रिन ने, तुरतै चलन लगी तलवार।
दोनों फ़ौजें यक हुइ मिल गईं, सबके मारु मारु रट लागि॥
खट खट खट खट तेगा बाजैं, जिनकी मार सही ना जाय।
कहुँ कहुँ गोली कहुँ कहुँ बर्छी, कहुँ कहुँ परी तीर की मारु॥
भाला छूटैं असवारन के, औ बुबकारिन बोलैं घाव।
चलै सिरोही सात कोस लौं, आवाँझोर चलैं तलवार॥
जैसे भिड़िया भेड़न पैठे, जैसे सिंह बिड़ारै गाय।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

तैसे आल्हा दल में पैठे, सब दल रैन बैन हुइ जाय ॥
कल्ला कटिगे तहँ घोरन के, चेहरा कटे सिपाहिन क्यार ।
कटि भुजदण्डै रजपूतन की, हा दैया गति कही न जाय ॥
पैग पैग पर पैदल गिरगे, उनके दुइ दुइ पग असवार ।
बिसे बिसे पर हाथी डारे, छोटे पर्वत की अनुहार ॥
अकले ऊदल दल में पैठे, सब दल काटि करो खरिहान ।
ऐंड़ लगाई बस ऊदल ने, औ हौदा पर पहुँचे जाय ॥
ढाल की औझड़ से अम्बारी, सो धरती पर दई गिराय ।
भगे सिपाही माड़ौवारे, अपने डारि डारि हथियार ॥
जौहर कीन्हें हैं ऊदल ने, रण में ख़ूब कियो घमसान ।
बाँधि कलिंगै चले महोबे, औ सब माड़ौ लीन्ह लुटाय ॥

अभ्यास

(१) आल्हा ऊदल कौन थे ? परमाल किस देश का राजा था ?

(२) आल्हा ऊदल ने माँड़ा के राजा कलिङ्गराय पर क्यों चढ़ाई की थी ?

(३) आल्हा ऊदल परमाल के यहाँ से क्यों चले गये थे ? फिर वे कैसे वापस आये ?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ १०

(१) अलाउद्दीन ख़िलजी

दिल्ली के तुर्क बादशाहों में अलाउद्दीन ख़िलजी बड़ा ज़बर्दस्त बादशाह हुआ है। उसने हिन्दुस्तान के कितने ही सूबे जीतकर एक बहुत बड़ा राज्य स्थापित किया। अलाउद्दीन बड़ा कठोर बादशाह था। उसने बेरहमी के साथ अपने बूढ़े चचा को मार कर दिल्ली की राजगद्दी ली थी।

अलाउद्दीन का बूढ़ा चचा जलालुद्दीन दिल्ली में राज्य करता था। वह बहुत नेक आदमी था। किसी को सताता न था। चोर डाकुओं को भी कड़ी सज़ा नहीं देता था। उसने अलाउद्दीन को कड़ा* का सूबेदार बना रक्खा था। अलाउद्दीन था तो बादशाह का भतीजा परन्तु हमेशा इसी चिन्ता में रहता था कि किस तरह चचा को मारकर बादशाह बन जाय।

कुछ सोच विचारकर वह दक्षिण की ओर गया। ज़ाहिरा तो उसने लोगों से कहा कि मेरे चचा ने मुझे घर से निकाल दिया है इसलिए मैं रोज़गार की तलाश में जाता हूँ। लेकिन

*कड़ा इलाहाबाद ज़िले में एक क़स्बा है। यहाँ अब तक बहुत-सी पुरानी इमारतें मौजूद हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उसने देवगिरि के राजा पर एकाएक चढ़ाई कर दी। राजा बेचारा अकेला था। लड़ाई में हार गया। अलाउद्दीन बेशुमार सोना-चाँदी लेकर वापस लौटा।

जलालुद्दीन ने जब सुना कि उसका भतीजा बहुत-सी दौलत लेकर दक्षिण से आया है तो उसने मिलने की इच्छा प्रकट की। जलालुद्दीन उससे प्रेम करता था। उसे किसी प्रकार की शङ्का न थी। उसके सर्दारों ने उसे कड़ा की तरफ़ जाने से रोका परन्तु उसने एक न सुनी। वह थोड़े से सिपाही लेकर अलाउद्दीन से मिलने चल दिया। अलाउद्दीन बड़ा कपटी था। उसने बहाना किया कि मुझे बादशाह से डर लगता है। इसलिए कोई हथियारबन्द सिपाही साथ न आवे। गङ्गा में नाव पर भेट हुई। जब जलालुद्दीन ने अलाउद्दीन को गले लगाया तो अलाउद्दीन के इशारे से एक सिपाही ने ख़ंजर से बादशाह का सिर काट दिया। इतने पर भी वह सन्तुष्ट न हुआ। एक भाले में छेदकर उसने अपने बूढ़े चचा का सिर सारी फ़ौज में फिराया जिससे सबको मालूम हो जाय कि बादशाह मर गया।

अब अलाउद्दीन का रास्ता साफ़ था। वह बादशाह हो गया। अपने चचा के सर्दारों को उसने ख़ूब रुपया देकर चुप कर दिया और उसके लड़कों को क़त्ल करा दिया।

अलाउद्दीन बड़ा बहादुर था। उसने बहुत-से देश जीते और सारे हिन्दुस्तान में अपनी धाक जमा दी। उसने नये

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

नये क़ानून बनाये। बाज़ार में चीज़ों के भाव नियत कर दिये। अगर कोई दूकानदार कम तौलता तो उसके बदन में से उतना ही गोश्त काट लिया जाता था। सौदागर लोग इतना डर गये कि किसी की ज़्यादा दाम लेने या कम तौलने की हिम्मत नहीं पड़ती थी।

अभ्यास

(१) अलाउद्दीन ने किस तरह दिल्ली का राज्य पाया ?

(२) अलाउद्दीन दक्षिण को क्यों गया था ?

(३) उसने बाज़ार के प्रबन्ध के लिए क्या किया ?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ १०

(२) अलाउद्दीन और रानी पद्मिनी

अलाउद्दीन और पद्मिनी की एक विचित्र कहानी है। पद्मिनी मेवाड़ के राना रत्नसिंह की रानी थी। उसके रूप और गुणों की चर्चा दूर-दूर तक फैल गई था, यहाँ तक कि यह सब हाल अलाउद्दीन को भी मालूम हो गया था।

जब अलाउद्दीन ने रानी की सुन्दरता की प्रशंसा सुना तो उससे न रहा गया। उसने उसे लेने की इच्छा की। इसी कारण चित्तौड़ पर चढ़ाई हुई। अलाउद्दीन ने राना के पास खबर भेजा कि यदि तुम मुझे एक बार पद्मिनी को दिखा दोगे तो मैं सन्तुष्ट हो जाऊँगा। राना ने उत्तर दिया कि हम शीशे में से बादशाह को रानी का प्रतिबिम्ब दिखा सकते हैं। राजपूत अपनी बात के बड़े पक्के होते हैं। राना की बात का विश्वास कर अलाउद्दीन किले में आया। राना ने उसे शीशे में से पद्मिनी की शकल दिखा दी। लौटते समय राना बादशाह को किले के फाटक तक पहुँचाने गये। परन्तु अलाउद्दीन बड़ा चालाक और कपटी था। उसने पहले ही से वहाँ सिपाही तैनात कर रक्खे थे। उन्होंने झटपट राना को कैद कर लिया और उन्हें पकड़ कर शाही डेरे में पहुँचा दिया। इधर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पद्मिनी के पास अलाउद्दीन ने यह ख़बर भेज दी कि यदि वह आ जाय तो मैं राना को छोड़ दूँगा।

पद्मिनी को यह सुनकर बड़ी चिन्ता हुई। अब वह राना को किसी तरह अलाउद्दीन के चंगुल से छुड़ाने की तदबीर सोचने लगी। वह जानती थी कि लड़ने से काम न चलेगा, इसलिए कोई चालाकी करनी चाहिए। उसने बादशाह के पास कहला भेजा कि मैं आपके डेरे में आने को तैयार हूँ परन्तु अकेली नहीं आ सकती। मेरे साथ बहुत-सी राजपूत स्त्रियाँ आवेंगी। अलाउद्दीन राज़ी हो गया। अब ७०० डोले तैयार हुए और हर एक में अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित एक-एक राजपूत योद्धा स्त्री के वेश में, बैठ गया। डोलों को देखकर अलाउद्दीन बहुत ख़ुश हुआ। डोले फ़ौज से थोड़ी दूर पर रोक दिये गये और बादशाह के पास ख़बर भेजी गई कि रानी आगई है परन्तु थोड़ी देर के लिए वह राना से बातचीत करना चाहती है। अलाउद्दीन ने आज्ञा दे दी। पद्मिनीवाला डोला राना के पास पहुँचाया गया।

एक राजपूत वीर पालकी से निकला। उसने राना से सब हाल कहा। पास ही घोड़ा तैयार था। रत्नसिंह फ़ौरन घोड़े पर चढ़कर बाहर निकल गये। सिपाहियों ने उनका पीछा किया परन्तु उन्हें पकड़ न सके। पद्मिनी की होशियारी पर राना को बड़ा आश्चर्य हुआ। महलों में जाकर वे उसकी प्रशंसा करने लगे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अलाउद्दीन ने डेरे में पद्मिनी के बदले एक हथियारबन्द राजपूत को पाया। उसे देखकर उसके बदन में आग-सी लग गई। अब वह चित्तौड़ को नष्ट करने का उपाय सोचने लगा।

चित्तौड़ पर चढ़ाई करने की तैयारी होने लगी। अलाउद्दीन बहुत बड़ी फ़ौज लेकर क़िले की तरफ़ बढ़ा। घमासान लड़ाई होने लगी।

गोरा और बादल नाम के दो राजपूत वीरों ने बड़ी बहादुरी दिखाई। जब गोरा की स्त्री सती होने लगी तब उसने अपने बेटे से पूछा—बेटा! तेरे पिता किस तरह मरे? लड़के ने उत्तर दिया—माता! पिताजी दुश्मनों के सिरों को इस तरह काटते थे जैसे किसान हरी खेती को काटता है। मैं भी उनके पीछे था। उन्होंने सैकड़ों को काटकर ज़मीन पर गिरा दिया और अन्त में आप भी मारे गये। माता ने कहा—बेटा! देख, तू भी अपने बाप के नाम को ऊँचा करना और क्षत्रियधर्म का पालन करना। इतना कहकर वह आग में जलकर मर गई।

राजपूतों ने जब देखा कि जीत होना मुश्किल है तो उन्होंने आख़िरी लड़ाई की तैयारी की। उनका क़ायदा था कि वे पहले स्त्रियों को आग में जला देते थे जिससे कोई उनकी बेइज़्ज़ती न कर सके। इसको जौहर कहते हैं। एक गुफा में आग सुलगाई गई। बड़े-बड़े बहादुरों की स्त्रियाँ और बेटियाँ उनके सामने आग में जलकर भस्म हो गईं। पद्मिनी उन सबके आगे थी। किसी की आँखों से आँसू की एक बूँद

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

भी नहीं टपकती थी। इसके बाद राजपूत केसरिया बाना पहनकर भूखे शेरों की तरह दुश्मन की फ़ौज पर टूट पड़े और बात की बात में हज़ारों को तलवार के घाट उतार दिया।

अलाउद्दीन क़िले में घुसा। वहाँ उसने सन्नाटा पाया। एक आदमी भी ज़िन्दा न मिला। बादशाह ने चित्तौड़ को लूटने और क़त्लआम का हुक्म दिया। तीस हज़ार आदमी मारे गये। शहर में ख़ून की नदियाँ बहने लगीं। ख़ूब लूट-मार हुई। बादशाह अपने बेटे को क़िला सौंपकर दिल्ली लौट आया।

अभ्यास

(१) अलाउद्दीन के समय में चित्तौड़ का राजा कौन था?

(२) अलाउद्दीन ने चित्तौड़ पर क्यों चढ़ाई की?

(३) पद्मिनी ने राना को छुड़ाने की क्या तरकीब की?

(४) 'जौहर' का क्या अर्थ है? यह किसलिए किया जाता था?

(५) गोरा और बादल कौन थे? उनके बारे में क्या जानते हो?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ ११

बाबर

तुम जानते हो कि अँगरेज़ों के पहले हमारे देश में मुग़ल-बादशाहों का राज्य था। इन बादशाहों के बनवाये हुए क़िले और महल अभी तक दिल्ली, आगरा, इलाहाबाद आदि शहरों में मौजूद हैं। शाहजहाँ बादशाह, जिसने ताजबीबी का रौज़ा बनवाया, इसी वंश में से था। बाबर इस वंश का पहला बादशाह है। अब हम तुम्हें बतलायेंगे कि वह कैसे हिन्दुस्तान आया और किस तरह उसने इस मुल्क को जीता।

बाबर का बाप तुर्किस्तान में एक छोटे से राज्य का मालिक था। जब बाबर ११ वर्ष का था तब उसका बाप मर गया। उसके बाप के दुश्मन बाबर के राज्य को हड़पने की ताक में थे। परन्तु उसकी नानी ने बड़े प्यार से उसका पालन-पोषण किया और शिक्षा दी। बाबर ने राज्य का काम अपने हाथ में ले लिया और बाग़ी सर्दारों को मुल्क से बाहर निकाल दिया।

बाबर मामूली लड़का न था उसकी हिम्मत ख़ूब बढ़ी-चढ़ी थी। उसने अपने पुरखों की राजधानी समरक़न्द को जीतने की कोशिश की। तीन बार उसने समरक़न्द पर चढ़ाई की और तीन बार उसे अपने हाथ से खो दिया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

समरक़न्द से भागकर बाबर इधर-उधर मारा-मारा फिरता रहा। कभी-कभी पेट भर भोजन मिलना भी मुश्किल होता था। परन्तु इन मुसीबतों को देखकर वह घबराया नहीं। उसने विचार किया कि कहीं दूसरी जगह भाग्य की परीक्षा की जाय। वह काबुल में जाकर डट गया और वहाँ का बादशाह बन बैठा।

इस समय दिल्ली में इब्राहीम लोदी राज्य करता था। उसके बुरे बर्ताव से प्रजा नाराज़ हो गई थी। बाबर के पास उसके कुछ सर्दारों ने ख़बर भेजी कि आप हिन्दुस्तान पर हमला कीजिए। हम आपकी मदद करेंगे। बाबर भला ऐसे मौक़े को कब छोड़नेवाला था। फ़ौरन १२ हज़ार सवार लेकर उसने हिन्दुस्तान की तरफ़ कूच किया। पानीपत के मैदान में बड़ी घमासान लड़ाई हुई। देखो बाबर की हिम्मत और बहादुरी! उसने इब्राहीम की एक लाख सेना को हरा दिया और दिल्ली तथा आगरा पर क़ब्ज़ा कर लिया।

इस जीत से बाबर को बहुत-सा माल मिला परन्तु उसने अपने लिए कुछ भी न रक्खा। उसने सब रुपया दूसरों को बाँट दिया। काबुल में ऐसा कोई आदमी न रहा जिसे चाँदी का एक सिक्का न मिला हो। उसके बेटे हुमायूँ के पास एक बेशक़ीमत हीरा आया परन्तु बाबर ने वह भी न लिया। महमूद ग़ज़नवी जितना लालची था बाबर उतना ही ख़र्चीला और उदार था।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बाबर ने दिल्ली को तो जीत लिया परन्तु वह अभी हिन्दुस्तान का बादशाह नहीं हुआ। राजपूतों से टक्कर लिये बिना हिन्दुस्तान का बादशाह होना कठिन था। राजपूतों में इस समय मेवाड़ का राना संग्रामसिंह, जिसे राना साँगा भी कहते हैं, बड़ा बलवान् था। उसके पास बड़ी फ़ौज थी और वह बहादुर भी था। राजपूतों की फ़ौज को देखकर बाबर के होश उड़ गये। उसके सिपाही घर लौटने की इच्छा करने लगे। बाबर ने इस मौक़े पर शराब पीना छोड़ दिया और अपने क़ीमती बर्तन तोड़ डाले। सिपाहियों को इकट्ठा कर उसने कहा—

"भाई! देखो, जो इस संसार में पैदा हुआ है वह किसी न किसी दिन मरेगा। केवल ईश्वर ही अजर-अमर है। जिसने ज़िन्दगी की दावत शुरू की है उसे मौत का प्याला ज़रूर पीना पड़ेगा। लेकिन याद रक्खो कि बदनामी के साथ ज़िन्दा रहने से धर्म और नाम के लिए जान देना कहीं अच्छा है। अगर इस लड़ाई में हमारी जीत होगी तो हमारे दीन की तरक्क़ी होगी और अगर हम मर गये तो शहीदों में हमारी गिनती होगी। इसलिए सबको शपथ खानी चाहिए कि हम लड़ाई के मैदान से न भागेंगे और मरने से न डरेंगे।"

बाबर के इन शब्दों का सेना पर बड़ा प्रभाव पड़ा। उसके सिपाहियों में एक नया जोश आ गया। उन्होंने क़ुरान की क़सम खाई कि हम अपने बादशाह के साथ जी-जान से

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लड़ेंगे। ऐसा ही हुआ। राजपूतों ने बड़ा वीरता दिखाई। परन्तु वे बाबर के तोपख़ाने के सामने न ठहर सके। उनके हज़ारों आदमी मारे गये। बाबर अब हिन्दुस्तान का बादशाह हो गया।

बाबर किस तरह मरा, यह भी उसके जीवन की एक विचित्र घटना है। हिन्दुस्तान आने के चार-पाँच वर्ष बाद उसका बड़ा लड़का हुमायूँ बीमार हो गया। हकीमों ने बहुत दवा की परन्तु ज्यों-ज्यों दवा की गई, रोग बढ़ता गया और उसकी हालत ख़राब होती गई। हकीमों ने बादशाह से कहा कि अब शाहज़ादे का अच्छा होना मुश्किल मालूम होता है। बाबर ने अपने सर्दारों को बुलाकर पूछा कि क्या कोई ऐसा उपाय है जिससे मेरे बेटे की जान बच जाय। उन्होंने कहा—आपके यहाँ दौलत की कोई कमी नहीं है। जा चीज़ सबसे प्यारी और बेशक़ीमत हो उसे शाहज़ादे पर न्यौछावर कीजिए।

बाबर ने उत्तर दिया—सबसे प्यारी चाज़ मेरी जान है। उसी को मैं अपने बेटे के ऊपर न्यौछावर करूँगा। यह कहकर उसने तीन बार हुमायूँ के पलँग के चारों तरफ़ चक्कर लगाया और फिर घुटने टेककर पलँग चूमते हुए कहा—'सब रोग मैंने अपने ऊपर ले लिया।' हुमायूँ उसी समय से अच्छा होने लगा और बाबर ऐसा बीमार पड़ा कि फिर न उठ सका। मरते समय उसने हुमायूँ को बुलाकर कहा कि भाइयों के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

साथ अच्छा बर्ताव करना और प्रजा पर दया करना। हुमायूँ ने ऐसा ही किया।

अभ्यास

(१) बाबर के जीवन में तुम्हें सबसे विचित्र क्या बात मालूम होती है ? उसकी गिनती संसार के वीर पुरुषों में क्यों की जाती है ?

(२) बाबर ने हिन्दुस्तान पर चढ़ाई क्यों की थी ? पानीपत की लड़ाई का वर्णन करो।

(३) राना संग्रामसिंह कौन था ? उसके साथ बाबर की क्यों लड़ाई हुई ?

(४) बाबर की जीत का क्या कारण था ?

(५) बाबर की मौत किस तरह हुई ?

(६) बाबर ने मरते समय हुमायूँ को क्या शिक्षा दी थी ?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ १२

(१) अकबर बादशाह

बादशाह अकबर का नाम तुमने सुना होगा। मुग़ल-बादशाहों में वह सबसे मशहूर बादशाह हुआ है। अकबर हुमायूँ का बेटा और बाबर का पोता था। जिस तरह बाबर और हुमायूँ ने अपनी ज़िन्दगी में मुसीबतें उठाईं उसी तरह अकबर को भी बचपन में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परन्तु अकबर के धीरज और हिम्मत से ऐसा समय आ गया कि उसने दुश्मनों के दाँत खट्टे कर दिये और वह बेखटके हिन्दुस्तान का बादशाह हो गया।

अकबर का जन्म सिन्ध के रेगिस्तान में एक हिन्दू के घर में हुआ था। बात यह थी कि उसके बाप हुमायूँ को अफ़ग़ानों ने हिन्दुस्तान से लड़ाई में हराकर निकाल दिया था। बहुत दिन तक वह जङ्गल में मारा-मारा फिरा, किसी ने उसे अपने यहाँ ठहरने को जगह न दी। अन्त में एक हिन्दू राजा ने उसे अपने यहाँ ठहराया। वहाँ हमीदा बानू बेगम के गर्भ से सम्राट् अकबर का जन्म हुआ।

लड़का पैदा होने की ख़बर सुनकर हुमायूँ को बड़ी ख़ुशी हुई। तुर्कों में रवाज था कि जो आदमी लड़का पैदा होने की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ख़बर लाता था, उसे कुछ इनाम देते थे। बेचारे हुमायूँ के पास कुछ भी न था। उसने सोच-विचार कर एक कस्तूरी का नाफ़ा निकाला और उसमें से ज़रा-ज़रा-सी कस्तूरी सब लोगों को बाँट दी और कहा—ईश्वर करे, किसी दिन मेरे बेटे का यश इस कस्तूरी की महक की तरह सारे संसार में फैल जाय। सचमुच ऐसा ही हुआ। हुमायूँ की इच्छा पूरी हुई।

अकबर का बचपन बड़ी मुसीबत में बीता। हुमायूँ को लड़ने से ही फ़ुर्सत न थी। वह उसकी देख-भाल न कर सका इसलिए उसे अच्छी शिक्षा भी न मिल सकी। एक बार कामराँ ने भाई हुमायूँ से बदला लेने के लिए बालक अकबर को क़िले की दीवार पर, गोलों की बौछार के बीच, बिठा दिया। ईश्वर की विचित्र लीला है। जिसकी वह रक्षा करना चाहता है उसका कोई बाल बाँका नहीं कर सकता। अकबर को ज़रा भी चोट न आई और वह मुसकराता हुआ वहीं बैठा रहा।

तेरह वर्ष की उम्र में अकबर राजगद्दी पर बैठा। अब उसे यह चिन्ता हुई कि राज्य की जड़ किस तरह मज़बूत की जाय। उसने जान लिया कि हिन्दुओं और राजपूतों से मेल किये बिना हिन्दुस्तान में राज्य करना कठिन है। उसने उनसे मित्रता करना चाहा। सबसे पहले आमेर (जयपुर) के राजा भारमल ने अपनी बेटी बादशाह को ब्याह दी। बादशाह ने उसके बेटे भगवानदास और पोते मानसिंह को दर्बार में बुलाया और उन्हें बड़े बड़े ओह्दे दिये। इस विवाह का अच्छा असर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

हुआ। अकबर हिन्दू-धर्म का आदर करने लगा। उसके विचार हिन्दुओं की तरफ़ बदल गये। उसकी रहन-सहन में बड़ा फ़र्क़ आ गया। हर साल-गिरह के दिन वह तुलादान करता और ब्राह्मणों से हवन कराता था। वे मोतियों और हीरों से जड़ी हुई राखी उसके हाथ में बाँधते थे और उसे आशीर्वाद देते थे। हिन्दुओं को अब तक मुसलमानी राज्य में बड़े-बड़े ओहदे नहीं मिलते थे। परन्तु अकबर ने सबके साथ एक-सा बर्त्ताव किया। वीरबल, टोडरमल, मानसिंह अकबर के मित्र हो गये। उसने उन्हें बड़े-बड़े पदों पर नियुक्त किया। वे भी जब तक ज़िन्दा रहे, तन-मन-धन से मुग़ल-साम्राज्य की सेवा करते रहे।

अकबर का राजा मानसिंह पर इतना भरोसा था कि एक बार उसने उन्हें काबुल पर चढ़ाई करने को भेजा। काबुल को जीतना खेल न था। पहाड़ी मुल्क है। घने जङ्गलों से घिरा हुआ है। कहीं मैदान नहीं है जहाँ बड़ी-बड़ी फ़ौजें लड़ सकें। इस देश के रहनेवाले मुसलमान हैं जो बड़े ख़ूँखार और लड़ाके हैं। किसी हिन्दू के लिए ऐसे देश का जीतना कठिन था। राजा मानसिंह ने कुछ आनाकानी की तब बादशाह ने उनके पास यह दोहा लिखकर भेजा—

सबै भूमि गोपाल की यामें अटक कहा।
जाके मन में अटक है सोई अटक रहा॥

राजा मानसिंह ने बादशाह का हुक्म माना और वे काबुल को गये। उन्होंने अफ़ग़ानों को कई लड़ाइयों में हराया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

बादशाह बहुत ख़ुश हुआ। उसने उन्हें काबुल का सूबेदार बना दिया।

अकबर को हिन्दू मुसलमानों के झगड़े बहुत बुरे लगते थे। उसने दोनों में मेल पैदा करने की कोशिश की। अपने मन्त्री अबुलफ़ज़ल की सलाह से उसने एक नया धर्म चलाया जिसमें सब धर्मों की अच्छी-अच्छी बातें शामिल की गईं। बहुत-से अमीरों ने इसे स्वीकार कर लिया। राजा वीरबल इसमें शामिल हो गये। मानसिंह से जब बादशाह ने कहा तो उन्होंने उत्तर दिया कि हुज़ूर! मैं तो हिन्दू और मुसलमान दो ही मज़हब मानता हूँ। तीसरा मज़हब मैं नहीं जानता। मैं हिन्दू हूँ। आप हुक्म दें तो मैं मुसलमान हो जाऊँ। यह सुनकर बादशाह चुप हो रहा।

अकबर बड़ा बुद्धिमान् बादशाह था। उसने बाल-विवाह बन्द कर दिया और सती को रोकने की भी कोशिश की। एक दिन महलों में ख़बर मिली कि जोधपुर के राजा उदयसिंह की बेटी ने सती होने से इनकार कर दिया है, परन्तु उसके घर-वाले उसे विवश कर रहे हैं। बादशाह पहले ही हुक्म दे चुका था कि कोई स्त्री ज़बर्दस्ती सती न होने पावे। सुनते ही वह एक तेज़ घोड़े पर सवार होकर कन्नौज के पास वहाँ पहुँचा जहाँ राजा की बेटी उस समय थी। रानी के रिश्तेदार उसे विवश कर रहे थे कि तुम सती हो जाओ। बादशाह ने फ़ौरन सती को रोक दिया और रानी के रिश्तेदारों को फाँसी की

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सज़ा देना चाहा, परन्तु लोगों के कहने सुनने से उनकी जान बख़्श दी और उन्हें क़ैदख़ाने में डाल दिया।

अभ्यास

(१) अकबर का जन्म कहाँ हुआ था? उस समय उसके बाप की क्या हालत थी?

(२) अकबर ने हिन्दुओं के साथ कैसा बर्ताव किया?

(३) राजपूतों के साथ अकबर की किस तरह मित्रता हुई?

(४ अकबर का नया धर्म क्या था? इसके चलाने का क्या कारण था?

(५) अकबर ने कौन कौन से बुरे रवाजों को रोकने की कोशिश की?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ १२

(२) अकबर और राना प्रतापसिंह

मेवाड़ का हाल तो पहले तुम पढ़ चुके हो। वहाँ के राजपूत अपनी बहादुरी के लिए हमेशा से प्रसिद्ध रहे हैं। जब अकबर ने चित्तौड़ पर चढ़ाई की तो राना उदयसिंह बादशाह की ताक़त को देखकर क़िले से बाहर पहाड़ों में चले गये। राजपूत ख़ूब लड़े परन्तु हार गये और चित्तौड़ पर अकबर का क़ब्ज़ा हो गया।

राना उदयसिंह ने तो अकबर का सामना नहीं किया परन्तु उनका बेटा प्रतापसिंह बड़ा वीर और प्रतापी निकला। वह असली क्षत्रिय था। उसकी रग-रग में क्षत्रियों का ख़ून बहता था। उसने प्रण किया कि न तो मैं कभी तुर्क को सिर नवाऊँगा और न उसकी अधीनता स्वीकार करूँगा।

राना प्रतापसिंह अपने साथियों-समेत जङ्गल में रहते थे। वहीं उन्होंने युद्ध की तैयारी करना शुरू कर दिया। अकबर ने प्रताप को समझाने के लिए एक बार राजा मानसिंह को भेजा। राजा मानसिंह उदयपुर गये। महाराना ने उनका सत्कार किया और भोजन का प्रबन्ध किया। थाल परोसकर आया। परन्तु भोजन के समय महाराना ख़ुद न आये। उन्होंने अपने बेटे अमरसिंह को भेज दिया और कहला भेजा

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कि मेरे सिर में दर्द है, इसलिए नहीं आ सकता। राजा मानसिंह फ़ौरन ताड़ गये कि राना का क्या मतलब है। उन्होंने ग़ुस्से में आकर कहा—अच्छा! हम जानते हैं कि महाराना क्यों नहीं आये। हमने जो कुछ किया है वह उन्हीं के भले के लिए किया है। यदि ऐसा ही है तो मेरा नाम मान नहीं जो उनको लड़ाई में न हराया। राजा मान ये शब्द कह ही रहे थे कि इतने में रानाजी भी आ गये। उन्होंने कहा—अच्छा, यदि आप सेना-सहित आवेंगे तो हम आपका अच्छी तरह स्वागत करेंगे। राना के आदमियों में से किसी ने धीरे से कहा—तुम आना और अपने फूफा अकबर को भी लेते आना। राजा मान का शरीर क्रोध से काँपने लगा। वे वहाँ से चल दिये और राना को नीचा दिखाने का उपाय सोचने लगे।

आगरे पहुँच कर उन्होंने बादशाह को ख़ूब उभाड़ा और अपने अपमान का हाल कहा। बादशाह ने फ़ौरन चढ़ाई करने का हुक्म दिया। राजा मानसिंह ख़ुद एक बड़ी फ़ौज लेकर मेवाड़ पहुँचे। हल्दीघाटी के पास बड़ा विकट लड़ाई हुई। राना प्रताप ने अद्भुत वीरता दिखाई परन्तु उनके पास इतनी सेना न थी कि वे अकबर की फ़ौज को मारकर भगा देते। लाचार होकर उन्हें पहाड़ों में शरण लेनी पड़ी।

अब राना को बड़ी मुसीबतें झेलनी पड़ीं। कहते हैं, कभी कभी उनके बच्चों को घास की रोटी खाकर ही रह जाना पड़ता था। कभी-कभी वह भी नहीं मिलती थी। एक बार एक बिल्ला

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

उनकी लड़की के सामने से रोटी के टुकड़े को उठा ले गई। लड़की ज़ोर से रोने लगी। यह देखकर राना का हृदय भी हिल गया। उनकी आँखों में आँसू भर आये। उनके मुख से ये शब्द निकले—कहाँ राजमहलों का सुख, कहाँ बच्चों को आज घास की रोटी भी नहीं मिलती। ईश्वर की विचित्र लीला है।

इतनी मुसीबत पड़ने पर भी प्रताप ने धीरज न छोड़ा। उन्होंने आज़ादी के लिए हँसते हुए अपनी तबाही के दिन काटे।

अन्त में उनके दिन फिरे। भामाशाह ने, जो किसी समय उनका ख़ज़ानची था, फ़ौज के लिए बहुत-सा धन दिया। प्रताप फिर एक बार सेना तैयार करके मैदान में आ डटे। उनकी तपस्या सफल हो गई। लड़ाई में वे जीत गये। जिस प्रण को लेकर वे चित्तौड़ से निकले थे उसे पूरा करके विजय की पताका फहराते हुए वे फिर अपने बाप-दादों के क़िले में घुसे। राना प्रताप ने सीसोदिया-वंश के नाम को उज्ज्वल रक्खा। इसी लिए लोग अब तक उनका नाम आदर से लेते हैं।

सच है—'जो हठ राखे धर्म को तेहि राखे करतार'।

अभ्यास

(१) राजा मानसिंह राना प्रताप से क्यों नाराज़ हो गये थे ?

(२) हल्दीघाटी की लड़ाई का वर्णन करो।

(३) भामाशाह कौन था ? उससे राना को क्या मदद मिली ?

(४) राना प्रताप का नाम अब तक क्यों आदर से लिया जाता है ?

———

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ १२

अकबरी दरबार के रत्न

अकबर बड़ा गुणवान् था। वह स्वयं तो पढ़ा-लिखा न था, परन्तु उसके दर्बार के लोग विद्वान् और चतुर थे। वह उनका आदर करता और उन्हें अच्छी-अच्छी जागीरें और ओहदे देता था। इनमें कुछ लोग ऐसे थे जिनसे बादशाह बड़ा प्रेम करता था। इनके नाम हैं—वीरबल, फ़ैज़ी, अबुलफ़ज़ल, टोडरमल, मानसिंह और अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना। ये लोग विद्वान् भी थे और बहादुर भी। इसी लिए अकबर इनसे बहुत खुश रहता था।

वीरबल—ये जाति के ब्राह्मण थे, पर गुणी होते हुए भी पहले बहुत ग़रीब थे। अकबर के यहाँ इनका सितारा चमक उठा। ग़रीबी दूर हो गई। वीरबल ख़ुशमिज़ाज और बातचीत में बहुत चतुर थे। तर्क युक्त मनोरञ्जक बातों से अकबर को हमेशा खुश रखते थे। रोते आदमी को भी एक बार हँसा देते थे। ये कविता और चुटकुले भी कहते थे। इनमें सबसे बड़ा गुण था हाज़िरजवाबी, जिसमें ये कभी न चूकते थे। अकबर से बराबर इनका हँसी-मज़ाक होता था।

एक बार वीरबल नाराज़ होकर दरबार से चले गये और किसी जगह छिपकर रहने लगे। अकबर को वीरबल के बिना

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

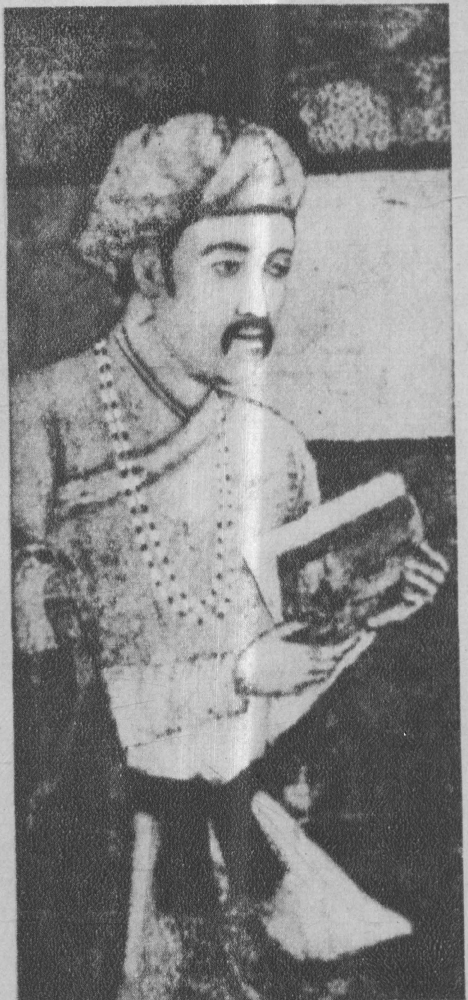

सम्राट अकबर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कैसे चैन पड़ सकता था। उसने वीरबल को ढुँढ़वाया पर कहीं इनका पता न चला। किसी ने कहा फ़लाँ मुहल्ले में हैं। तब बादशाह ने हुक्म दिया कि उस मुहल्ले के लोग आधी धूप और आधी छाया में यहाँ आवें। सभी बहुत घबराये। वीरबल जिसके यहाँ ठहरे थे उससे उन्होंने कह दिया कि तुम चारपाई सिर पर रख कर चले जाओ।

दूसरे दिन जब सब लोग जमा हुए तो बादशाह को एक आदमी के सिर पर खाट देखकर बड़ी हँसी आई। उन्होंने पूछा—तुम्हें खाट रखने को किसने कहा? ज़रूर वह वीरबल है। उसे लाकर हाज़िर करो। वीरबल फिर दरबार में आ गये।

एक बार वीरबल, अकबर और सलीम तीनों घूमने जा रहे थे। गर्मी के दिन थे। रास्ते में अकबर के पसीना निकल आया। उन्होंने अपना चोग़ा उतारकर वीरबल को दे दिया, सलीम ने भी अपना चोग़ा उन्हीं को दे दिया। अकबर थोड़ी देर में वीरबल से बोले—क्यों अब तो एक गधे का बोझ हो गया? वीरबल ने फ़ौरन जवाब दिया—हुज़ूर! एक का नहीं, दो गधों का बोझ है। अकबर हँसकर शरमा गया। इसी तरह के अकबर और वीरबल के सैकड़ों मज़ेदार क़िस्से हैं जो अब तक कहे जाते हैं।

फ़ैज़ी—फ़ैज़ी और अबुलफ़ज़ल दोनों भाई थे। दोनों बड़े होनहार, चतुर और गुणवान् थे। उनका बाप भी बड़ा विद्वान् था, इसी लिए उसने लड़कों को भी वैसी ही शिक्षा दी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

थी। फ़ैज़ी छोटेपन से ही फ़ारसी में कविता करने लगा था। धीरे-धीरे उसका नाम चारों ओर फैलने लगा, यहाँ तक कि अकबर तक उसकी प्रशंसा पहुँच गई।

एक बार अक़बर चित्तौड़ पर चढ़ाई करने की तैयारी कर रहा था कि किसी ने उसे फ़ैज़ी की याद दिलाई और उसकी कविता सुनने को कहा। अकबर ने उसी समय आगरे सवार भेजे कि फ़ैज़ी को साथ लेकर आओ।

सवार आगरे आये। फ़ैज़ी को उनके साथ जाना पड़ा। फ़ैज़ी के चित्तौड़ पहुँचने पर अकबर ने उसका बहुत आदर किया। फ़ैज़ी ने कविता सुनाई जिसे सुनकर कुल दरबारी ख़ुश हो गये और अकबर तो बहुत ही ख़ुश हुआ। उसने फ़ैज़ी को अपने दरबारियों में रहने का हुक्म दिया। फ़ैज़ी वहीं रहने लगा। फ़ैज़ी की कविता से अकबर इतना ख़ुश था कि वह रात-दिन उसे साथ ही रखता था। अकेले में, दरबार में, सैर-शिकार में, लड़ाई में कहीं भी उसे अलग न करता था।

चालीस वर्ष अकबर के दरबार में रहकर एक दिन फ़ैज़ी बीमार हो गया और थोड़े दिन में मर गया। इसके मरने से भी अकबर को बहुत अफ़सोस हुआ।

अबुलफ़ज़ल—फ़ैज़ी की तरह अबुलफ़ज़ल भी बड़ा बुद्धिमान् था। उसकी स्मरण-शक्ति तो ग़ज़ब की थी। जिस किताब को एक बार पढ़ लेता वह उसे याद हो जाती थी। पढ़ने के शौक़ में वह खाना, पीना, सोना, खेलना सब भूल

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जाता था। तीन दिन तक बिना खाये पढ़ता रहता था। उसने थोड़े ही समय में सैकड़ों किताबें पढ़ डाली थीं। कहते हैं, एक बार अबुलफ़ज़ल को एक किताब मिली जिसके आधे से ज़्यादा पृष्ठ दीमक खा गई थीं पर अबुलफ़ज़ल ने उसे खुद पूरी कर दी। फिर कहीं वह किताब पूरी मिल गई। जब मिलान किया गया तो अबुलफ़ज़ल की पूरी की हुई किताब से बहुत कम फ़र्क़ निकला।

अकबर तो गुणियों का आदर करता था और ढूँढ़-ढूँढ़कर गुणियों को बुलाता था। अबुलफ़ज़ल की जब उसने तारीफ़ सुनी तो उसे भी बुलाया। अबुलफ़ज़ल धीरे-धीरे अपनी योग्यता और परिश्रम से वज़ीर हो गया और राज्य के बड़े-बड़े मामलों में बादशाह को सलाह देने लगा।

बादशाह उसे बहुत मानता था इसलिए सलीम उससे ईर्ष्या करने लगा और उसे मार डालने की तरकीब सोचने लगा। एक बार जब अबुलफ़ज़ल दक्षिण से लड़ाई करके लौट रहा था तभी सलीम ने ओरछा के राजा से उसको मरवा डालने का इन्तिज़ाम किया। अबुलफ़ज़ल को लोगों ने समझाया कि आगे जाने से जान का ख़तरा है; पर वह बोला—बादशाह के दरबार में जाने से मुझे कौन रोक सकता है? वह आगे बढ़ा। ओरछा के सिपाही उस पर टूट पड़े और उसे मार डाला। अकबर को इससे बहुत दुःख हुआ। उसने कहा—सलीम को यदि राज्य का लोभ था तो मुझे मरवा डालता। मेरे वज़ीर को क्यों मरवा डाला?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अबुलफ़ज़ल साधारण क़द का आदमी था, पर था ख़ूब हृष्ट-पुष्ट खाना भी ख़ूब खाता था। जब वह खाने बैठता था तो उसका लड़का उसके पास खड़ा रहता था और देखता जाता था कि सब चीज़ें ठीक परोसी जा रही हैं या नहीं। दाल, तरकारी में नमक कम ज़्यादा होने पर भी अबुलफ़ज़ल कहता कुछ न था; जो मिलता, चुपचाप खा लेता था। उसके यहाँ भोजन बहुत बनाया जाता था। जो कोई भूखा दरवाज़े पर आ जाता उसको वह बिना खाये वापस नहीं जाने देता था।

अबुलफ़ज़ल सब मज़हबों को मानता था। सबके साथ समान और बहुत कोमल बर्ताव करता था। न किसी को नौकरी से छुड़ाता और न गाली देता था। यदि कोई नौकर आलसी या काहिल होता था तो बदलकर उसे दूसरा काम दे देता था। कहता था कि किसी की रोज़ी लेने से ख़ुदा नाराज़ होता है।

टोडरमल—टोडरमल जाति के खत्री थे। इनका जन्म पञ्जाब में लाहरपुर नामक गाँव में हुआ था। ये बचपन से ही बड़े होनहार थे। माता ने बड़ी तकलीफ़ें उठाकर बालक का पालन-पोषण किया और पढ़ने-लिखने का प्रबन्ध किया। जब पढ़-लिखकर तैयार हुआ तो अकबर के राज्य में किसी छोटे से काम पर मुंशियों में नौकर हो गया। धीरे-धीरे अपनी बुद्धिमानी से ऊँचे पद पर पहुँच गया और माल के महकमे का सबसे बड़ा अफ़सर हो गया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

टोडरमल हिसाब-किताब में बड़े चतुर थे। एक-एक पाई का हिसाब लेते थे। किसी की रू-रिआयत नहीं करते थे। उन्होंने ज़मीन की पैमाइश कराई थी और लगान नियत किया था। उनके काम से प्रसन्न होकर बादशाह ने उन्हें राजा की पदवी दी थी।

टोडरमल रहते तो मुसलमानों में थे परन्तु अपने धर्म के पक्के थे। जहाँ कहीं जाते, पूजा का सामान और ठाकुरजी साथ ले जाते थे। एक बार जब बादशाह अजमेर से पञ्जाब की तरफ़ जा रहा था, टोडरमल भी साथ थे। जल्दी में कहीं उनके ठाकुरजी का सिंहासन खो गया। राजा का नियम था कि बग़ैर पूजा किये वे भोजन नहीं करते थे। कई दिन उपवास करते हो गये। सिंहासन बहुत तलाश किया परन्तु कहीं न मिला। बादशाह के पास भी यह ख़बर पहुँची। उसने टोडरमल को बुलाया और कहा—तुम्हारा अन्नदाता तो ईश्वर है, वह तो चोरी नहीं गया। स्नान करके उसका ध्यान करो और भोजन करो। आत्म-हत्या करने की किसी धर्म में आज्ञा नहीं है। राजा ने बादशाह की बात मान ली और भोजन किया। बुढ़ापा आने पर टोडरमल ने बादशाह से प्रार्थना की कि हुज़ूर अब मुझसे काम नहीं होता, मुझे छुट्टी दी जाय। मेरा इरादा हरिद्वार में गङ्गा-किनारे रह कर ईश्वर का भजन करने का है। अकबर ने छुट्टी दे दी। वे चले गये। परन्तु अकबर से न रहा गया। उसने ख़बर भेजी कि इस तरह उम्र बिताने से क्या

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

फ़ायदा ? मनुष्य को काम करना चाहिए। टोडरमल वापस आये परन्तु अब बहुत बूढ़े हो गये थे। उनसे काम न चला और थोड़े दिन बाद मर गये।

राजा मानसिंह—राजा मानसिंह आमेर के राजा भारमल के पोते थे। उनकी बहादुरी का ऐसा सिक्का जमा हुआ था कि बादशाह ने उन्हें अपना प्रधान सेनापति बनाया। मानसिंह ने बड़े-बड़े देश जीते, लड़ाइयाँ लड़ीं और ख़ूँख़ार लोगों को अपने वश में किया। अकबर के मरने के बाद मानसिंह के बुरे दिन आ गये। इसका कारण यह था कि उन्होंने अकबर के बड़े बेटे सलीम का हक़ मेटने की कोशिश की थी। सलीम जब बादशाह हुआ तो पिछली बातों को भूल गया। उसने राजा मानसिंह के साथ अच्छा बर्त्ताव किया।

राजा मानसिंह ने अकबर की जो सेवा की वह किसी ने नहीं की। वे हिन्दू-मुसलमान में कुछ भी फ़र्क़ नहीं करते थे। मुसलमान फ़क़ीरों के पास जाते थे और उनकी बातें सुनकर ख़ुश होते थे। परन्तु अपने धर्म के पक्के थे। बादशाह के यहाँ नौकरी की, दरबार में रहे परन्तु कभी अपना धर्म नहीं छोड़ा।

अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना—अब्दुर्रहीम अकबर के शिक्षक बैरमख़ाँ का बेटा था। बाप के मरने के समय वह केवल ३ वर्ष का था। जब कहीं सहारा न मिला तब उसकी माँ बादशाह के दर्बार में आई। बादशाह ने उसे धीरज बँधाया और उसकी मदद की।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

धीरे-धीरे पढ़-लिखकर अब्दुर्रहीम विद्वान हो गया। हिन्दी से उसे प्रेम था। वह हिन्दी में कविता भी करता था। उसके बनाये हुए दोहे अब तक पढ़े जाते हैं।

अकबर ने उसे खानखाना की पदवी दी और कई लड़ाइयों में भेजा जहाँ से वह विजयी होकर लौटा। अकबर की मृत्यु के बाद सलीम किसी कारण से उससे नाराज़ हो गया। इसलिए खानखाना का बुढ़ापा मुसीबत में बीता। फिर उसे वह सुख न मिला जो अकबर के समय में था।

अभ्यास

(१) बीरबल में विशेष गुण क्या था? अकबर उनसे इतना प्रसन्न क्यों रहता था?

(२) अबुलफ़ज़ल के चरित्र का वर्णन करो।

(३) राजा टोडरमल ने बादशाह की क्या सेवा की?

(४) अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना का नाम अब तक क्यों चला आता है?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ १३

जहाँगीर और नूरजहाँ

अकबर के बाद उसका बड़ा लड़का शाहज़ादा सलीम, जहाँगीर के नाम से, गद्दी पर बैठा। जहाँगीर था तो बुद्धिमान् और विचारशील परन्तु बादशाह होने के बाद वह विलासी हो गया था। राज्य के प्रबन्ध की तरफ़ अधिक ध्यान न देकर वह ऐश-आराम करने और शराब पीने लगा। गद्दी पर बैठते ही एक बात उसने अच्छी की। वह यह कि महल में अपने कमरे में उसने बाहर से एक सोने की ज़ञ्जीर लगवा दी जिसमें घण्टी लगी हुई थी। जब कोई फ़रियाद करनेवाला आता तो वह ज़ञ्जीर को खींच देता था। बादशाह के कमरे में घण्टी बजती थी। वह फ़ौरन उसको बुलाकर सब हाल पूछता था।

जहाँगीर की बेगम का नाम नूरजहाँ था। वह मिर्ज़ा ग़यासबेग की लड़की थी। ग़यासबेग तेहरान का रहनेवाला था। ग़रीबी के कारण रोज़गार की तलाश में हिन्दुस्तान आया था। रास्ते में नूरजहाँ पैदा हुई। मिर्ज़ा बड़ा घबराया। उसके पास खाने-पीने का कुछ भी सामान न था। इसलिए लड़की को सड़क के किनारे डाल दिया। संयोग से किसी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

सौदागर की नज़र उस सुन्दर बालिका पर पड़ी। उसने उसे उठा लिया और उसी की माँ को देख-भाल के लिए रख लिया।

मिर्ज़ा ग़यास आगरे पहुँचा। उसे अकबर बादशाह के यहाँ नौकरी मिल गई। उसकी बेटी मिहरुन्निसा अब फूल की तरह खिलने लगी। उन दिनों बादशाह के महल में एक बाज़ार लगता था जिसे मीना बाज़ार कहते थे। इसमें बड़े-बड़े अमीरों और अफ़सरों की औरतें दूकान खोलती थीं और बेगमें और बादशाह सौदा ख़रीदते थे। मिहरुन्निसा भी अपनी माँ के साथ महल में गई। शाहज़ादा सलीम ने उसे देखा। उसके दोनों हाथों में दो कबूतर थे। लड़की को कबूतर देकर सलीम पास ही फूल तोड़ने चला गया। जब लौटकर आया तो देखा कि लड़की के हाथ में एक ही कबूतर है। उसने पूछा—कबूतर क्या हुआ? मिहरुन्निसा ने उत्तर दिया—वह तो उड़ गया। शाहज़ादे ने फिर पूछा—कैसे उड़ गया? मिहरुन्निसा ने दूसरा कबूतर भी उड़ाकर कहा—इस तरह।

कोई दूसरा होता तो मिहरुन्निसा की इस ढिठाई पर नाराज़ होता, परन्तु शाहज़ादा सलीम एक भोली और निडर लड़की की बात से ख़ुश हुआ। उसने उसके बाप का नाम पूछा। लड़की ने उत्तर दिया—हुज़ूर! मेरे वालिद आपकी ख़िदमत में ही तो रहते हैं। यह सुनकर शाहज़ादा आगे बढ़ गया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

मिहरुन्निसा महल में आने-जाने लगी। कभी-कभी सलीम से भी उससे बातचीत होती थी। अकबर ने इस बात को पसन्द न किया और मिर्ज़ा ग़यासबेग से कहा कि अपनी लड़की का ब्याह कर दो। मिर्ज़ा ने बङ्गाल के सूबेदार शेर अफ़ग़न के साथ उसका ब्याह कर दिया।

जब जहाँगीर बादशाह हुआ तो उसने शेर अफ़ग़न पर राजविद्रोह का अपराध लगाया। एक दूसरा अफ़सर क़ुतुबुद्दीन उसे पकड़ने को भेजा गया। परन्तु शेर अफ़ग़न भी बहादुर आदमी था। इस अपमान को वह न सह सका। उसने आँखें लाल कर काँपते हुए कहा—अरे दुष्ट क़ुतुबुद्दीन! तेरी यह धूर्तता। क़ुतुबुद्दीन कुछ कहने के लिए आगे बढ़ा परन्तु इतने में लड़ाई शुरू हो गई और दोनों मारे गये। मिहरुन्निसा आगरे चली आई। चार वर्ष के बाद उसका जहाँगीर के साथ ब्याह हो गया। अब उसका नाम नूरजहाँ पड़ गया।

नूरजहाँ पढ़ी-लिखी और बुद्धिमती स्त्री थी। वह फ़ारसी खूब लिख-पढ़ सकती थी और कविता भी करती थी। उसने कई तरह की नई पोशाकें निकालीं और कमरे सजाने और दावत करने के नये तरीक़े निकाले। वह बहादुर भी थी। घोड़े पर चढ़कर बादशाह के साथ शिकार खेलने जाती थी। स्वभाव उसका कोमल था। दीन-दुखियों पर वह दया करती थी। उसने बहुत-सी अनाथ लड़कियों के ब्याह कराये थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जहाँगीर नूरजहाँ को बहुत प्यार करता था। उसने राज्य का काम उसी को सौंप दिया। वह कभी-कभी हँसी में कहता था—मुझे तो खाने का गोश्त और पीने को शराब चाहिए, राज्य का काम तो नूरजहाँ करती ही है। नूरजहाँ ने सारा काम अपने हाथ में ले लिया। सिक्कों पर उसका नाम निकलने लगा और शाही हुक्म भी उसी के नाम से जारी होने लगे।

नूरजहाँ ने एक ग़लती की। उसने महाबतख़ाँ नामक अमीर को दर्बार में बुलाया और उसका अपमान किया। उसने मौक़ा पाकर बादशाह को, जब कि वह काश्मीर से लौट रहा था, पकड़ लिया और उस पर पहरा बिठा दिया। बेगम पहले तो निकल गई परन्तु कुछ समय के बाद वह भी उसके चङ्गुल में आ फँसी।

महाबतख़ाँ ने बादशाह और बेगम दोनों को क़ैद कर लिया, परन्तु नूरजहाँ बड़ी चालाक थी। वह कब क़ैद में रहनेवाली थी। उसने महाबत के राजपूतों को रिश्वत देकर अपनी तरफ़ मिला लिया। शाही फ़ौज उसकी मदद के लिए तैयार थी ही। राजपूतों को धोखा देकर बेगम निकल गई और बादशाह को भी छुड़ा ले गई। एक बार फिर नूरजहाँ का बोल-बाला हो गया।

जहाँगीर अब कमज़ोर हो चला था। उसे श्वास का रोग हो गया। शराब और अफ़ीम ने उसकी तन्दुरुस्ती को बिगाड़

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दिया। उसके मरने पर उसका बड़ा लड़का ख़ुर्रम, शाहजहाँ के नाम से, गद्दी पर बैठा।

नूरजहाँ राज्य के काम से अलग हो गई। उसे दो लाख रुपया सालाना पेंशन मिली। अब उसने सफ़ेद कपड़े पहन लिये और लाहौर में एकान्त में रहने लगी।

अभ्यास

(१) नूरजहाँ कौन थी ? उसके बचपन का हाल बताओ।

(२) जहाँगीर के साथ उसका विवाह किस तरह हुआ ?

(३) नूरजहाँ के गुणों का वर्णन करो।

(४) महाबतख़ाँ के विद्रोह का क्या कारण था ?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शाहजहाँ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ १४

(१) शाहजहाँ

तुमने ताजबीबी के रौज़े का नाम ज़रूर सुना होगा। यह रौज़ा आगरे में जमुना नदी के किनारे पर बना हुआ है। इसे शाहजहाँ बादशाह ने बनवाया था। शाहजहाँ जहाँगीर का बेटा और अकबर का पोता था। उसके बराबर दूसरा शानदार बादशाह मुग़ल-वंश में कोई नहीं हुआ।

तुम समझते होगे कि पुराने ज़माने में बादशाहों को कुछ भी काम नहीं करना पड़ता था। यह बात नहीं है। शाहजहाँ बहुत मन लगाकर राज-काज करता था। वह सूरज निकलने से दो घंटे पहले उठता था। फिर हाथ-मुँह धोकर नमाज़ पढ़ता था। इसके बाद झरोखे में जाकर प्रजा को दर्शन देता था। हज़ारों आदमी क़िले के सामने जमा होते थे। फ़रयाद करनेवालों की वह फ़रयाद सुनता था। परन्तु रिश्वत ख़ूब चलती थी। बहुधा ऐसा होता था कि चोबदार बग़ैर रिश्वत लिये किसी को बादशाह के पास तक नहीं जाने देते थे। इसे रोकने के लिए कभी-कभी दीवार पर से रस्सी लटका दी जाती थी जिसमें लोग अपनी अर्ज़ियाँ बाँध देते थे। बादशाह के नौकर उन्हें खींच लेते थे और उसके सामने पेश करते थे।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दोपहर के क़रीब सब काम ख़तम करके बादशाह महल में जाता था। वहाँ ग़रीब-बेवा औरतों, अनाथ बच्चों और फ़कीरों की अर्ज़ियाँ सुनता था और उनको वज़ीफ़े देता था इसके बाद फिर दर्बार में आ बैठता था और शाम तक राज-काज करता था।

शाहजहाँ प्रजा के हित का हमेशा ख़्याल रहता था। कहते हैं, एक दिन शाहजहाँ राज्य की आमदनी का हिसाब-किताब देख रहा था। देखते-देखते उसे मालूम हुआ कि एक गाँव की मालगुज़ारी कई हज़ार रुपया ज़ियादा हो गई है। बादशाह ने फ़ौरन अपने वज़ीर सादुल्लाख़ाँ को बुलाया। सादुल्लाख़ाँ उस समय बही-खाते लिये ख़ज़ाने के सामने बैठा था। दिन-रात जागने और मेहनत करने के कारण वह नींद के झोंके ले रहा था। इसी हालत में बादशाह के सामने लाया गया। बादशाह ने पूछा कि इस गाँव की मालगुज़ारी कैसे बढ़ गई है। सादुल्ला ने कहा कि नदी के हट जाने से कुछ ज़मीन खेती के क़ाबिल हो गई थी, इसलिए आमदनी बढ़ गई है। शाहजहाँ ने बड़े क्रोध में आकर कहा—यतीमों, बेवाओं और ग़रीबों के रोने का यह नतीजा है कि यह ज़मीन खेती के क़ाबिल हो गई है। यह उन्हें ईश्वर ने दी है और तुमने उस पर लगान लगा दिया है। अगर ख़ुदा के बन्दों को मारना पाप न होता तो मैं उस निर्दयी फ़ौजदार को, जिसने यह लगान लगाया है, फाँसी दिलवा देता। परन्तु अब उसे बर्ख़ास्त कर दो जिससे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दूसरों को कभी ऐसा काम करने की हिम्मत न हो। जो रुपया ग़रीबों से लिया गया है उसे फ़ौरन वापस कर दो।

शाहजहाँ को इमारतें बनवाने का बड़ा शौक़ था। उसने शाहजहानाबाद (आज-कल की दिल्ली) बसाया और उसी को अपनी राजधानी बनाया। दिल्ली का क़िला, जाम मसजिद और निज़ामुद्दीन औलिया का मक़बरा उसी के बनवाये हुए हैं। दिल्ली के क़िले में उसने दीवानख़ास और दीवानआम बनवाये जो अब भी देखने में बड़े सुन्दर मालूम होते हैं। आगरे में भी शाहजहाँ ने कई इमारतें बनवाईं। सबमें प्रसिद्ध ताजबीबी का रौज़ा है जिसका हाल तुम अभी पढ़ोगे। मोती मसजिद और समन-बुर्ज आगरे के क़िले में देखने योग्य इमारतें हैं। ये सफ़ेद सङ्गमरमर की बनी हुई हैं।

शाहजहाँ ने जवानी में बड़े ऐश-आराम किये। परन्तु उसका बुढ़ापा दुःख में बीता। उसके चार लड़के थे—दारा, शुजा, औरङ्ग़ज़ेब और मुराद। उसके दो लड़कियाँ भी थीं—जहानारा और रौशनारा। उसके लड़कों ने राज्य लेने के लिए बग़ावत की। बीमारी के कारण वह उनको न दबा सका। अन्त में उसके तीसरे लड़के औरङ्गज़ेब की जीत हुई। बाक़ी सब मारे गये। शाहजहाँ को औरङ्गज़ेब ने गद्दी से उतारकर आगरे के क़िले में क़ैद कर दिया। इस मुसीबत के समय में उसकी बड़ी लड़की जहानारा ने उसका साथ दिया और हर तरह से उसकी सेवा की। भाग्य का हाल कौन जान सकता है?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

क्या शाहजहाँ ने कभी स्वप्न में भी सोचा था कि मेरा ही बेटा किसी दिन मुझे गद्दी से उतारकर बादशाह बन बैठेगा !

शाहजहाँ को क़ैद में बड़ा दुःख भोगना पड़ा। उसे मामूली आराम की चीज़ें भी न मिलीं। कहते हैं, उसे जमुना का पानी पीने का शौक़ था परन्तु औरङ्गज़ेब ने यह भी बन्द कर दिया। तब उसने क्रोध में आकर औरङ्गज़ेब को एक पत्र लिखा कि वाह रे बेटे, तुम कैसे मुसलमान हो ! तुमसे तो हिन्दू अच्छे हैं जो अपने मरे बाप-दादों को पानी पिलाते हैं, तुम ज़िन्दा बाप को भी पानी के लिए तरसाते हो।

औरङ्गज़ेब कब सुननेवाला था। जहानारा ने बहुत चाहा कि दोनों में मेल हो जाय परन्तु सब कोशिश बेकार गई। शाहजहाँ ने एक बार औरङ्गज़ेब के पास ख़बर भेजी कि तुमने जो कुछ किया सो तो अच्छा किया। लेकिन अकेले मेरा मन नहीं लगता, इसलिए मुझे दो-चार लड़के ही पढ़ाने के लिए दिये जायँ तो अच्छा हो। औरङ्गज़ेब ने उत्तर दिया— ख़ूब ! क़ैद में भी अभी हुकूमत की बू नहीं गई। ऐसी प्रार्थना नहीं स्वीकार की जा सकती।

जब शाहजहाँ मरा तो औरङ्गज़ेब उसके जनाज़े में भी शामिल न हुआ। जहानारा ने रुपये-पैसे की बखेर करनी चाही परन्तु औरङ्गज़ेब ने मना कर दिया। बेचारी मन मसोस कर रह गई। क्या कर सकती थी। सात वर्ष तक अनेक तकलीफ़ उठाने के बाद इस बहादुर बादशाह को, जिसने

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

जवानी में बड़े-बड़े मुल्क जीते थे और इमारतें बनवाई थीं, अपनी प्यारी बेगम के मक़बरे में ही शरण मिली।

अभ्यास

(१) शाहजहाँ रोज़ किस तरह अपना काम करता था ?

(२) शाहजहाँ को प्रजा-पालक बादशाह क्यों कहते हैं ? एक उदाहरण दो।

(३) शाहजहाँ की बनवाई हुई दो-चार इमारतों के नाम बताओ।

(४) औरङ्गज़ेब कौन था। उसने शाहजहाँ के साथ कैसा बर्ताव किया ?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ १४

(२) ताजमहल

ताजमहल दुनिया की अजीब चीज़ों में से है। इसे ताजबीबी का रौज़ा भी कहते हैं। यह आगरे में जमुना नदी के किनारे पर क़िले से थोड़ी दूर है। देखने में ऐसा सुन्दर मालूम होता है कि मानो आज ही बना हो। दुनिया के दूर-दूर देशों से लोग इसे देखने आते हैं। यह रौज़ा शाहजहाँ ने अपनी बेगम की यादगार में तीन करोड़ रुपया लगाकर बनवाया था।

शाहजहाँ की बेगम का नाम अर्जुमन्दबानू था। उसे ताजमहल की उपाधि मिली थी। बादशाह उसे बहुत प्यार करता था। बेगम के १४ बच्चे हुए परन्तु जब चौदहवाँ बच्चा हुआ तो वह बीमार हो गई। यह देखकर कि बचने की कोई आशा नहीं है, बेगम ने बादशाह को बुलाया और आँखों में आँसू भर कर कहा—अब मैं आपसे हमेशा के लिए बिदा होती हूँ। मेरे अपराधों को क्षमा कीजिए। मैंने आपके दुख-सुख में भाग लिया है। आपके पिता के समय मैंने क़ैदख़ाने की मुसीबतें सही हैं। मेरा दुर्भाग्य! जब आपके बादशाहत करने के दिन आये तो मेरा यह हाल हुआ। मैं आपसे दो प्रार्थनाएँ करना चाहती हूँ। एक तो यह कि मेरे

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

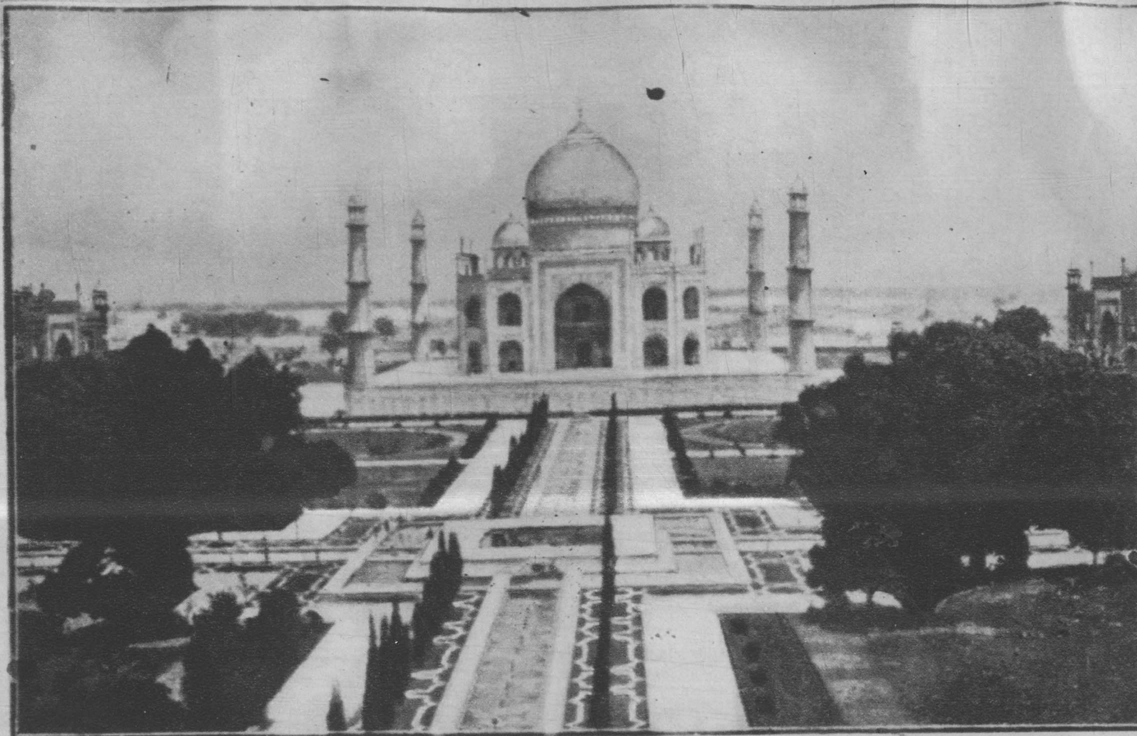

ताजमहल या ताजबीबी का रौज़ा

ratnasuri MS
Jin Gun Aradhak Trust

बच्चों की रक्षा करना और मेरे बूढ़े माँ-बाप पर दया रखना। दूसरी यह कि आप मेरा ऐसा मक़बरा बनवायें जिससे बढ़कर दुनिया में दूसरी इमारत न निकले। इतना कहकर बेगम आँखें बन्द कर संसार से चल बसी।

शाहजहाँ को बड़ा रञ्ज हुआ। जब वह महलों में जाता तो मुमताज़ को न पाकर रोने लगता था। रङ्ग-बिरङ्गी पोशाक, ख़ुशबूदार चीज़ें, इत्र, फुलेल उसने बिलकुल छोड़ दिये। परन्तु इस रञ्ज में वह बेगम की आख़िरी प्रार्थना को न भूला। उसने फ़ौरन बड़ा दूर-दूर से कारीगर बुलाये और मक़बरे का नक़शा बनवाना शुरू कर दिया। २० वर्ष में ताजबीबी का रोज़ा बनकर तैयार हो गया।

ताज के सामने एक सुन्दर बाग़ है जिसमें अनेक वृक्ष, तालाब और झरने हैं। बाग़ से निकलते ही एक बड़ा चौक है जिसके भीतर एक विशाल फाटक है। सामने सङ्गमरमर के चबूतरे पर ताज बना हुआ है। उसमें तरह-तरह के बेश-क़ीमत पत्थर लगे हुए हैं जो चाँदनी रात में चन्द्रमा की किरणें पड़ने से जगमगाते हुए दिखाई देते हैं। चबूतरे के चारों कोनों पर आकाश को छूती हुई चार मीनारें हैं। फाटक से मक़बरे तक लाल पत्थर का एक चौड़ा रास्ता है जिसके बीच में हौज़ और फ़व्वारे हैं। ज़मीन पर हरी घास का मख़मली गद्दा बिछा हुआ है। मक़बरे के अन्दर जाने को सङ्गमरमर की सीढ़ियाँ हैं। जिस कमरे में शाहजहाँ और उसकी बेगम

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

की क़ब्रें हैं उसका क्या कहना। ख़ुशबूदार बत्तियाँ हर वक़्त जलती रहती हैं। दीवारों पर चारों तरफ़ तरह-तरह के बेल-बूटे बने हुए हैं जिनकी कारीगरी देखकर आश्चर्य से दाँतों के नीचे उँगली दबानी पड़ती है। गर्मी के दिनों में वहाँ शरीर शीतल हो जाता है। ज़रा-सी आवाज़ से तमाम इमारत गूँज उठती है। पूर्णमासी के दिन ताज की शोभा हज़ार-गुनी बढ़ जाती है। वह हीरे की तरह चमकने लगता है।

ताज सबको प्रिय लगता है। कोई दिन ऐसा नहीं जाता कि सैकड़ों बाहर के लोग उसे देखने न आते हों। एक बार स्लीमैन साहब अपनी स्त्री के साथ ताज देखने गये। जब देख चुके तब स्त्री से पूछा—कहो, ताज कैसा है। मेम ने कहा—यदि आप मेरा ऐसा मक़बरा बनवा दें तो मैं आज मरने को तैयार हूँ।

अभ्यास

(१) ताजबीबी का रौज़ा किसने बनवाया ? वह कहाँ पर है ?

(२) शाहजहाँ की बेगम का क्या नाम था ? उसकी मौत किस तरह हुई ?

(३) मरते समय उसने बादशाह से कौन सी दो प्रार्थनाएँ की थीं ?

(४) ताज कैसी इमारत है। उसका कुछ वर्णन करो।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ १५

(१) मुग़लवंश का अन्तिम महान् बादशाह औरङ्गज़ेब

औरङ्गज़ेब ने अपने बाप को क़ैद कर और भाइयों को क़त्ल कराकर हिन्दुस्तान का राज्य लिया था। शाहजहाँ की कहानी में तुम यह हाल पढ़ चुके हो। अकबर की तरह औरङ्गज़ेब भी एक ज़बर्दस्त बादशाह था। उसने पचास वर्ष तक हिन्दुस्तान पर शान के साथ राज्य किया। परन्तु उसने ऐसी कठोरता से काम किया कि उसका राज्य क़ायम न रह सका।

अकबर धर्म के मामलों में उदार था। इसी लिए उसके राज्य में हर धर्म के माननेवालों को पूरी आज़ादी थी। यही कारण था कि सारी प्रजा उससे ख़ुश रहती थी। छोटे-छोटे रजवाड़े ज़्यादातर राजपूतों के अधिकार में थे। अकबर ने राजपूतों से मित्रता की और उन्हें अपना मददगार बनाया। इसलिए उन्होंने भी राज्य को बढ़ाने में पूरी-पूरी मदद दी। परन्तु औरङ्गज़ेब अपने धर्म के पालने में बड़ा पक्का था। वह सदा अपने ही धर्म की बढ़ती चाहता था। दूसरे धर्मवालों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

से वह घृणा करता था। सुन्नी मुसलमान होने के कारण वह शिया मुसलमानों से भी द्वेष रखता था। वह रोज़ नियम से नमाज़ पढ़ता था। एक बार लड़ाई के मैदान में जब दोनों ओर से ख़ूब तलवार चल रही थी, औरङ्गज़ेब की नमाज़ का वक़्त आ गया। वह फ़ौरन घोड़े से उतर पड़ा और ज़मीन पर कपड़ा बिछाकर नमाज़ पढ़ने लगा। जब नमाज़ पढ़ चुका तो उसने फिर लड़ाई शुरू की। इसी तरह रोज़ा रखने में भी वह बहुत पाबन्दी रखता था।

औरङ्गज़ेब बचपन से ही बड़ा बहादुर था। एक बार जमुना नदी के किनारे हाथियों की लड़ाई का तमाशा हो रहा था, औरङ्गज़ेब भी एक घोड़े पर सवार होकर तमाशा देख रहा था। अचानक एक हाथी दूसरे हाथियों को भगाकर औरङ्गज़ेब की तरफ़ झपटा। औरङ्गज़ेब ने तुरन्त अपना भाला उस हाथी के सिर पर मार दिया। हाथी बिगड़ खड़ा हुआ। औरङ्गज़ेब के घोड़े को उसने दाँत मार कर पृथ्वी पर गिरा दिया। औरङ्गज़ेब ने झट घोड़े पर से उतरकर उसका सामना किया। इतने में और लोग आ गये। औरङ्गज़ेब की जान बच गई।

औरङ्गज़ेब चालाकी में किसी से कम न था। एक बार जोधपुर के राजा महाराज जसवन्तसिंह का पेशावर में देहान्त हो गया। जब उनकी रानियाँ जोधपुर को लौटने लगीं तो रास्ते में उनके दो बालक पैदा हुए। औरङ्गज़ेब ने चाहा कि उनको

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

औरंगज़ेब

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दिल्ली में ही रखकर मुसलमानी ढङ्ग से शिक्षा दी जाय। इस पर राजपूत बिगड़ खड़े हुए। औरङ्गज़ेब ने उनसे लड़ाई ठान ली। अपने पुत्र अकबर को उसने बहुत-सी सेना देकर लड़ने को भेजा। परन्तु अकबर राजपूतों से मिल गया। औरङ्गज़ेब ने अब चालाकी से काम लिया। उसने अकबर को एक पत्र लिखा—

शाबाश बेटे! राजपूतों को तुमने ख़ूब धोखा दिया। मैं तुम्हारी इस होशियारी से बहुत ख़ुश हूँ।

औरङ्गज़ेब का निशाना ठीक बैठा। यह पत्र उसने ऐसे ढङ्ग से भेजा कि राजपूतों के हाथ में पहुँच गया। इन्होंने पहले अकबर पर विश्वास कर लिया था, परन्तु अब उन्होंने समझ लिया कि यह हमें धोखा देना चाहता है। इस प्रकार औरङ्गज़ेब ने अकबर को अलग कर फिर लड़ाई शुरू कर दी। कुछ समय के बाद दोनों दलों में फिर मेल हो गया। परन्तु बादशाह के इस बुरे बर्त्ताव से राजाओं का दिल खट्टा हो गया।

औरङ्गज़ेब हँसी-मज़ाक बिलकुल नहीं पसन्द करता था। किसी की बुराई करना या सुनना भी उसे पसन्द न था। उसका इतना रोब था कि उसके सामने चूँ तक करने की किसी की मजाल न थी। एक बार उसका पुत्र आज़मशाह दर्बार में आकर उससे कुछ प्रार्थना करने लगा। जब औरङ्गज़ेब से उसे कोई उत्तर न मिला तो उसे कुछ बुरा लगा, इसलिए वह आगे बढ़ता चला गया। अन्त में उसका पैर बादशाह की मसनद

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

से जा लगा। औरङ्गज़ेब ने अपने लड़के की इस गुस्ताख़ी पर दर्बार बन्द करके हुक्म दिया कि आइन्दा कभी शाहज़ादा मेरे सामने न आने पावे। दर्बार में सन्नाटा छा गया। किसी की इतनी हिम्मत न थी कि बादशाह से शाहज़ादे की सिफ़ारिश करता। अन्त में एक पुकार ने बादशाह को समझाया कि उसने गुस्ताख़ी नहीं की, लापरवाही से ऐसा क़ुसूर हो गया है, उसे क्षमा कर देना चाहिए। जो दूसरों के अपराध क्षमा करता है, ख़ुदा उसे बदला देता है। यह सुनकर औरङ्गज़ेब ने शाहज़ादे को माफ़ कर दिया।

औरङ्गज़ेब को कविता से चिढ़ थी। वह कहा करता था कि कवि लोग झूठ बोलते हैं। ज़रा-सी बात को वे ख़ूब बढ़ाकर कहते हैं। इसी लिए उसके दिल में कवियों का ज़रा भी आदर न था। गानविद्या से भी उसे घृणा थी। एक बार लोगों ने गान-विद्या का जनाज़ा निकाला। दैवयोग से बादशाह की सवारी भी उधर आ निकली। उसने पूछा—यह जनाज़ा किसका है? लोगों ने उत्तर दिया—गान-विद्या का। बादशाह बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने उत्तर दिया—अच्छा, इसको इतना गहरा गाड़ना कि फिर कभी सिर न उठा सके।

औरङ्गज़ेब वीर होने के अलावा सदाचारी भी था। वह बड़ी सादगी से रहता था। वह राज्य के रुपये को कभी अपने निजी ख़र्च में नहीं लगाता था। अपनी गुज़र के लिए

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

वह कुरान शरीफ़ लिखा करता था और हाथ से टोपियाँ बनाया करता था।

बुढ़ापे में औरङ्गज़ेब को भी दुःख उठाना पड़ा। वह किसी का विश्वास नहीं करता था। इसलिए किसी ने उसका भी विश्वास नहीं किया। उसके लड़के उससे ऐसे डरते थे कि उन्हें पास आने की हिम्मत न होती थी। कहते हैं कि एक तो अपने बाप का पत्र पाने पर पीला पड़ जाता था। जब बादशाह बीमार पड़ा तो उसके पास कोई नहीं आया। मरते समय उसने कहा कि मेरा कफ़न सादा गज़ी के कपड़े का हो और मेरे जनाज़े पर बहुत रुपया न ख़र्च किया जाय।

अभ्यास

(१) औरङ्गज़ेब का चरित्र कैसा था?

(२) उसने मुग़ल-राज्य के नाश का बीज किस तरह बो दिया?

(३) औरङ्गज़ेब की बहादुरी का एक उदाहरण दो।

(४) राजपूत औरङ्गज़ेब से क्यों नाराज़ हो गये? उनको बादशाह ने किस तरह लड़ाई में हराया?

(५) औरङ्गज़ेब और अकबर के चरित्रों में क्या अन्तर है? दोनों में तुम किसे अच्छा बादशाह समझते हो? कारण बताओ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ १५

(२) छत्रपति शिवाजी

औरङ्गज़ेब के बहुत से शत्रु थे परन्तु उसे इतनी हानि किसी ने नहीं पहुँचाई जितनी शिवाजी ने। शिवाजी का नाम आज-कल बड़े आदर के साथ लिया जाता है। इसका कारण यही है कि उन्होंने बड़े सङ्कट के समय हिन्दू-धर्म की रक्षा की और वीरता के साथ औरङ्गज़ेब जैसे बलवान् बादशाह का सामना किया।

शिवाजी एक मामूली मराठा जागीरदार के, जिसका नाम शाहजी था, बेटे थे। बाप में तो कोई विलक्षणता नहीं थी परन्तु शिवाजी की माता जीजाबाई बड़ी बुद्धिमती स्त्री थीं। वह बचपन ही में अपने बेटे को रामायण-महाभारत के वीर पुरुषों की कहानियाँ सुनाया करती थीं। जहाँ कहीं कथा होती वहाँ जीजाबाई अपने बालक को ज़रूर साथ ले जाती थीं। इसका असर यह हुआ कि शिवाजी की हिन्दू-धर्म में श्रद्धा बहुत बढ़ गई। हिन्दुस्तान में इस समय औरंगज़ेब का राज्य था। उसका बर्त्ताव हिन्दुओं के साथ अच्छा न था। शिवाजी इस बात को न सह सके। उन्होंने हिन्दू-धर्म और जाति की रक्षा करने का बीड़ा उठाया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

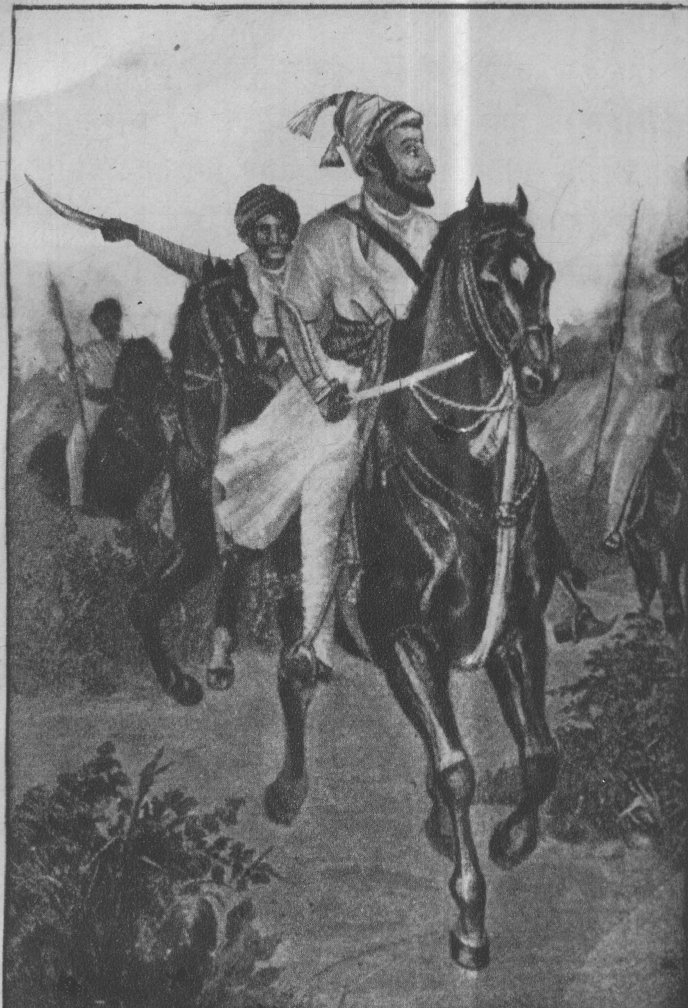

महाराजा शिवाजी

...basuri MS ... Jin Gun Aradhak Trust

शिवाजी ने पढ़ने-लिखने में तो अधिक मन नहीं लगाया था, परन्तु तीर चलाना, कुश्ती लड़ना, घोड़े की सवारी करना, हथियार चलाना आदि काम भली भाँति सीख लिये थे। थोड़े से आदमी साथ लेकर अब उन्होंने बीजापुर के इलाके में लूट-मार करना शुरू कर दिया। एक क़िला भी जीत लिया। दोस्त-दुश्मन सब जान गये कि शिवाजी मामूली आदमी नहीं है।

शिवाजी वीर तो थे ही, वे बड़े सच्चरित्र भी थे। कहते हैं, एक बार किसी मुसलमान सूबेदार की पुत्रवधू उनके सैनिकों के हाथ लगी। लड़ाई ख़तम होने पर वह शिवाजी के सामने लाई गई। लोग आपस में कानाफूसी करने लगे। कोई कहता था, यह औरत क़त्ल की जायगी। कोई कहता था, महाराज इसे महल में रख लेंगे परन्तु जब शिवाजी ने उसकी तरफ़ देखा तो कहा—वाह! कैसी सुन्दर मूर्त्ति है! यदि मेरी माता भी ऐसी सुन्दर होती तो मैं भी ऐसा ही रूपवान् होता। इन शब्दों को सुनते ही दर्बार में सन्नाटा छा गया। सर्दार और सिपाही आँखें नीची कर ज़मीन की तरफ़ देखने लगे। शिवाजी ने उस स्त्री को ज़ेवर और कपड़े देकर उसके ससुर के पास भेज दिया। हिन्दू मुसलमान सब इस बात से बहुत खुश हुए।

एक बार शिवाजी की लूट-मार से तङ्ग आकर बीजापुर के बादशाह ने अपने सर्दार अफ़ज़लख़ाँ को शिवाजी को पकड़ने के

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लिए भेजा। ख़ाँ बड़ा चालाक था। उसने शिवाजी के पास ख़बर भेजी कि तुम बेखटके मुझसे मिलो। बीजापुर के जो क़िले तुमने ले लिये हैं, तुम्हें ही दिलवा दूँगा।

शिवाजी ने ख़ाँ के आदमी से कहा कि मैं ज़रूर मिलूँगा। परन्तु ख़ाँ साहब अपने साथ सिपाही न लावें। वह इस बात पर राज़ी हो गया। शिवाजी का ठाट-बाट देखकर अफ़ज़ल ने कहा—तुम तो एक किसान के बेटे हो। तुम्हारे पास ऐसा क़ीमती शानदार शामियाना कहाँ से आया? इस पर शिवाजी को क्रोध आ गया। उन्होंने कहा—तुम भी तो एक बावर्ची के बेटे हो। यह ठाट-बाट का सामान तुम्हें कहाँ से नसीब हुआ? यह सुनते ही अफ़ज़ल ने शिवाजी की गर्दन पकड़ ली और तलवार का वार किया। शिवाजी ने झट गर्दन छुड़ाकर अपना बघनख, जिसे वे कपड़ों में छिपाये हुए थे, उसके पेट में घुसेड़ दिया। ख़ाँ धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा। उसके मरते ही उसके सिपाही भाग गये। शिवाजी ने उसकी लाश पहाड़ पर गाड़ दी और उसके ऊपर एक बुर्ज बना दिया जो अब तक मौजूद है।

शिवाजी ने अब औरङ्गज़ेब के राज्य में भी छापा मारना शुरू कर दिया। कभी-कभी वे बड़ी चालाकी से काम लेते थे। पूना के मुसलमान हाकिम शायस्ताख़ाँ को बादशाह ने हुक्म दिया कि शिवाजी को क़ाबू में करो। शिवाजी कब ऐसा मौक़ा देनेवाले थे। वे एक दिन बाजे-गाजे के साथ बरात

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लेकर पूना में घुस आये। आगे एक लड़का था जो दूल्हा बना हुआ था। बरात को देखकर शायस्ता के सिपाहियों ने किसी को न रोका। रात के समय एक दीवार में सेंध लगाकर मराठे शायस्ता के मकान में घुस गये और लूट-मार करने लगे। जो बाहर रह गये वे पहरेदारों पर टूट पड़े और मार-मारकर कहने लगे—अरे कमबख़्त नमकहरामो! ऐसी ही रखवाली करते हो। शायस्ताख़ाँ तो निकल गया परन्तु उसके बेटे ने मराठों का सामना किया और मारा गया।

एक बार जयपुर के राजा जयसिंह ने शिवाजी को समझा-बुझाकर और दक्षिण की सूबेदारी का लालच देकर औरङ्गज़ेब के दर्बार में जाने को राज़ी किया। वे आगरे पहुँच भी गये। शिवाजी की तरफ़ से नज़र पेश हुई। औरङ्गज़ेब ने उन्हें देखकर कहा—आओ शिवाजी राजा। शिवाजी आगे बढ़े और सलाम किया। इसके बाद बादशाह के इशारे से वे तीसरे दर्जे के अमीरों में खड़े कर दिये गये। इस अपमान से क्रोधित होकर वे वहीं चिल्लाने लगे और बादशाह को भला-बुरा कहने लगे। बादशाह ने पूछा—क्या बात है? जयसिंह के बेटे रामसिंह ने उत्तर दिया—हुज़ूर! शेर जङ्गली है। उसे यहाँ पर गर्मी मालूम होता है। इससे उसकी तबीअत कुछ ख़राब-सी हो गई है। यह भी कहा कि मराठों का राजा मुग़ल-दर्बार के नियम नहीं जानता, इसलिए उसका अपराध क्षमा होना चाहिए। बादशाह चुप हो रहा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

शिवाजी के डेरे पर बादशाह ने पहरा बिठा दिया। राजा जयसिंह की चिकनी-चुपड़ी बातों में आकर वे बुरी मुसीबत में फँसे। दिन-रात इसी चिन्ता में रहते थे कि किस तरह औरङ्गज़ेब के जाल में से निकलें। उन्होंने बीमार होने का बहाना किया। औरङ्गज़ेब ने दान करने की आज्ञा दे दी। मेवा, मिठाई और फलों के टोकरे बाहर-भीतर आने जाने लगे। पहले तो पहरेदार देख-भाल रखते थे परन्तु जब रोज़ ऐसा होने लगा तो उन्होंने भी ढीलढाल कर दी। एक दिन शिवाजी अपने बेटे के साथ इन्हीं टोकरियों में बैठकर निकल गये। शहर के बाहर पहुँचकर उन्होंने साधुओं के कपड़े पहन लिये और वहाँ से दक्षिण की तरफ़ चल दिये। औरङ्गज़ेब सुनकर बड़ा दुखी हुआ। वह हाथ मलकर पछताने लगा।

शिवाजी का राज्य-प्रबन्ध अच्छा था। वे अपने धर्म के पक्के थे, परन्तु दूसरों के धर्म का आदर करना जानते थे। जब कहीं क़ुरान शरीफ़ उनके हाथ लग जाता तो वे उसे मुसलमानों को वापस कर देते थे और स्त्रियों तथा बच्चों पर कभी हथियार नहीं उठाते थे।

अपने गुरु का वे बड़ा आदर करते थे। उनका नाम था समर्थ रामदास। गुरु एक बार शिवाजी की परीक्षा लेने आये। दर्वाज़े पर आकर उन्होंने भीख माँगी। शिवाजी अन्दर थे। स्वामीजी की आवाज़ पहचानकर अन्दर से ही काग़ज़ भेज

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दिया जिसमें लिखा था—राज-पाट सब गुरुजी को अर्पण। गुरुजी काग़ज़ को पढ़ कर बहुत प्रसन्न हुए।

शिवाजी जब तक जिये, मुग़लों से बराबर लड़ते रहे। उनके मरने के बाद भी लड़ाई होती रही। औरंगज़ेब मराठों को न दबा सका। उन्होंने उसके राज्य का नाश कर दिया।

अभ्यास

(१) शिवाजी को बचपन में कैसी शिक्षा मिली थी?

(२) अफ़ज़लख़ाँ कौन था। उसके मरने का हाल बताओ।

(३) शिवाजी औरङ्ग़ज़ेब के दरबार में क्यों गये थे। वहाँ उनके साथ कैसा बर्त्ताव हुआ?

(४) शिवाजी का चरित्र कैसा था। सब लोग उनकी क्यों प्रशंसा करते हैं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ १५

(३) गुरु गोविन्दसिंह

तुमने कभी न कभी किसी सिक्ख का ज़रूर देखा होगा। सिक्ख लोग वैसे तो सारे देश में पाये जाते हैं परन्तु उनका असली घर पञ्जाब में है। वहाँ उनकी संख्या बहुत ज़्यादा है। सिक्ख सिर पर जूड़ा रखते हैं; हाथ में लोहे का कड़ा पहनते हैं और हथियार भी बाँधते हैं। ये लम्बे-चौड़े और हृष्ट-पुष्ट होते हैं। इनमें से बहुत से फ़ौज में सिपाही हैं।

सिक्खों का मत गुरु नानक ने चलाया था। वही उनके पहले गुरु थे। नवें गुरु, गोविन्दसिंह के बाप, तेग़बहादुर थे। औरङ्ग़ज़ेब ने किसी कारण नाराज़ होकर गुरु तेग़बहादुर को दर्बार में बुलाकर कहा कि या तो मुसलमान हो जाओ, नहीं तो मौत की सज़ा दी जायगी। गुरु ने मरना स्वीकार किया। जल्लाद ने चमकती हुई नङ्गी तलवार से उनका सिर उड़ा दिया। बात की बात में यह ख़बर चारों तरफ़ फैल गई। अमीर-ग़रीब सब आँसू बहाने लगे और कहने लगे—वाह रे गुरु! सिर दिया सार न दिया।

गोविन्दसिंह अभी निरे बालक थे। परन्तु बाप की मौत का उन पर बड़ा असर पड़ा। उन्होंने प्रण किया कि मैं इस मृत्यु का बदला लूँगा और हिन्दू-धर्म की रक्षा करूँगा।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गुरु गोविन्दसिंह

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

गोविन्दसिंह जब पढ़-लिखकर तैयार हो गये तो उन्होंने देखा कि केवल पूजा-पाठ से काम न चलेगा। वे ख़ुद घोड़े पर चढ़कर शिकार खेलने लगे और तलवार बाँधने लगे। अपने शिष्यों को भी उन्होंने हथियार रखने की आज्ञा दी। वे हर तरह से उनकी हिम्मत बढ़ाते थे। एक दिन सब शिष्यों को गुरुजी ने बुलाया और दर्बार किया। जब सब इकट्ठे हो गये तो हाथ में नंगी तलवार लेकर आ पहुँचे और कहने लगे—क्या इस सभा में हमारा कोई ऐसा शिष्य है जो हमें अपना सिर दे दे। हमें एक शिष्य का बलिदान कर दुर्गा भवानी को प्रसन्न करना है। यह धर्म का काम है। जिसमें हिम्मत हो, खड़ा हो जाय। सभा में सन्नाटा छा गया। डरपोकों के मुँह फीके पड गये और होंठ सूखने लगे। थोड़ी देर बाद लाहौर का एक क्षत्रिय खड़ा हो गया। उसने कहा—महाराज ! मैं तैयार हूँ। गुरुजी उसे अन्दर एक तम्बू में ले गये। वहाँ उन्होंने पहले ही से पाँच बकरे बाँध रक्खे थे। शिष्य को वहीं बिठलाकर और एक बकरे को काटकर लोहू से भीगी हुई तलवार लेकर वे फिर सभा में आ खड़े हुए और कहने लगे कि हमको एक सिर की और ज़रूरत है। अब की बार एक जाट खड़ा हुआ। उसे भी गुरुजी डेरे में ले गये और एक दूसरे बकरे का सिर काटकर फिर सभा में आकर बोले—हमें एक सिर की और आवश्यकता है। इसी तरह उन्होंने पाँच आदमियों के सिर माँगे। शिष्यों ने उनकी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आज्ञा का पालन किया। उनकी हिम्मत देखकर गुरु महाराज बड़े प्रसन्न हुए और कहने लगे कि अब मुझे आशा है कि मेरा काम पूरा होगा और शत्रुओं पर मेरे शिष्य विजय प्राप्त करेंगे।

गुरु गोविन्दसिंह ने सिक्ख बनाने की एक नई रीति निकाली। एक बर्तन में पानी लेकर उन्होंने उसमें कुछ शक्कर मिलाई और उसे अपने कृपाण से हिलाकर कुछ चेलों को पिलाया और कुछ उन पर छिड़का। फिर उनसे कहा—कहा, वाह गुरुजी का खालसा, श्रीवाह गुरुजी की फते। उन्होंने आज्ञा दी कि सब शिष्यों के नाम के पीछे सिंह शब्द होना चाहिए और कहा कि केश, कंघा, कृपाण, कच्छ और कड़ा इन पाँच चीज़ों को हर एक सिक्ख अपने शरीर पर रक्खा करे। सिक्ख अब तक ऐसा करते हैं।

इस तरह अपनी शक्ति बढ़ाकर गुरु गोविन्दसिंह ने मुग़ल राज्य में लूट-मार करना शुरू कर दिया। औरङ्गज़ेब को जब यह ख़बर मिली तो उसने हुक्म दिया कि गुरु को पकड़कर लाओ। मुग़ल-सेना ने उनका पीछा किया। इस पकड़-धकड़ में गुरुजी की माता और उनके दो बेटे उनसे अलग हो गये। उन्हें मुसलमानों ने पकड़ लिया।

इधर लड़ाई शुरू हो गई। गोविन्दसिंह के दो बेटे अभी उनके साथ थे। बड़ा लड़का अजीतसिंह १८ वर्ष का था। वह तलवार लेकर लड़ाई के मैदान में कूद पड़ा और मारा गया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

छोटे लड़के की तरफ़ देखकर गुरुजी ने कहा—अब धर्म के लिए शीश देने की तुम्हारी बारी है। वह भी मारा गया। गुरु ने ज़रा भी शोक नहीं प्रकट किया और कहने लगे—शाबाश! शाबाश! जब ये दोनों वीर बालक मारे गये तो उन्होंने देखा कि मुग़लों का मुक़ाबला करना कठिन है। अब वे वहाँ से मालवा की तरफ़ चल दिये।

गुरुजी के दो बेटे उनसे पहले ही अलग हो गये थे और मुसलमानों के हाथ पड़ गये थे। उनसे कहा गया कि मुसलमान हो जाओ नहीं तो मारे जाओगे। बालकों ने कहा—हमको जान देना मञ्जूर है परन्तु मुसलमान नहीं हो सकते। दोनों लड़के दीवार में ज़िन्दा चिन दिये गये। उनकी हिम्मत देखकर मुसलमानों को भी बड़ा आश्चर्य हुआ।

गुरु गोविन्दसिंह ने जब यह ख़बर सुनी तो पहले तो घबराये। परन्तु थोड़ी देर में सँभलकर बोले—वाह रे बालको! धन्य है। जो लोग उनके पास बैठे थे, रोने लगे परन्तु गुरु महाराज पहाड़ की तरह निश्चल रहे। उन्होंने अपने कृपाण से थोड़े से कुशों को उखाड़ कर टुकड़े-टुकड़े कर डाला और कहा कि तुर्कों का राज्य भी किसी दिन इसी तरह नष्ट हो जायगा।

औरङ्गज़ेब थोड़े दिन बाद मर गया। उसके बेटे ने गुरु जी से मेल कर लिया। उसके साथ गुरुजी दक्षिण को गये। वहाँ एक पठान ने उन्हें धोखे से मार डाला।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अभ्यास

(१) तेग़बहादुर कौन थे? उनके साथ औरङ्गज़ेब ने कैसा बर्ताव किया था?

(२) गुरु गोविन्दसिंह ने सिक्ख बनाने की क्या रीति निकाली थी?

(३) गुरु गोविन्दसिंह ने सिक्खों को किस तरह बहादुर बना दिया? गुरु के धैर्य्य की एक मिसाल दो।

(४) गुरु गोविन्दसिंह के चरित्र में तुम्हें कौनसी बात सबसे अधिक पसन्द है।

(५) गुरु गोविन्दसिंह की मृत्यु किस तरह हुई?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ १६

महाराजा रणजीतसिंह

महाराजा रणजीतसिंह सिक्खों के सर्दार महासिंह के बेटे थे। महासिंह एक मामूली सर्दार थे। परन्तु रणजीतसिंह ऐसे वीर और प्रतापी निकले कि पञ्जाब-केसरी (पञ्जाब का शेर) कहलाये। उन्होंने अपनी बहादुरी से पञ्जाब में एक बड़ा राज्य स्थापित करके यश प्राप्त किया।

रणजीतसिंह को बचपन में ही युद्ध-विद्या का काफ़ी ज्ञान हो गया था। महासिंह जब लड़ाई पर जाते थे तब रणजीत को साथ ले जाते थे। बालक रणजीत घोड़े पर बैठा हुआ दूर से लड़ाई का तमाशा देखा करता था। धीरे-धीरे उसकी हिम्मत बढ़ गई और दिल में बड़े-बड़े हौसले पैदा होने लगे। परन्तु एक बड़ी आपत्ति आई। थोड़े दिन बाद उनके चेचक निकली। चेहरे पर बड़े-बड़े दाग़ हो गये और एक आँख भी जाती रही।

बाप के मरने के बाद रणजीतसिंह ख़ुद अपने इलाक़े का प्रबन्ध करने लगे। उनकी बढ़ती हुई ताक़त को देखकर दूसरे सिक्ख सर्दार उनसे द्वेष करने लगे। उन्होंने एक मुसलमान जागीरदार को बहकाया कि रणजीतसिंह को मार डालो। एक दिन जब वे शिकार से लौट रहे थे, उस दुष्ट ने तलवार से वार

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

किया। किन्तु निशाना चूक जाने से तलवार घोड़े की काठी में लगी। रणजीतसिंह ने फिर कर ऐसा हाथ मारा कि उसका सिर भुट्टा-सा कटकर गिर पड़ा। ईश्वर जिसकी रक्षा करता है उसे कोई नहीं मार सकता। दुश्मनों की कोशिश व्यर्थ हुई और रणजीतसिंह का यश दिन पर दिन बढ़ने लगा।

रणजीतसिंह ने अब एक छोटी-सी सेना बना ली और इधर-उधर लूट-मार करना शुरू कर दिया। बहुत-से लोग फ़ौज में भर्ती हो गये और क़वायद सीखने लगे। हरीसिंह नलवा रणजीतसिंह का सेनापति था। वह बड़ा बहादुर आदमी था। उसने काबुल पर चढ़ाई की और अफ़ग़ानों को चने-मटर की तरह भून डाला। उसका नाम सुनते ही पठानों और अफ़ग़ानों के होश उड़ जाते थे। कहते हैं, जब किसी रोते हुए पठान बालक को चुप करने की ज़रूरत पड़ती थी तब कहते थे कि हरिया आया। बालक फ़ौरन चुप हो जाता था। हरिया के नाम से पठानों के बिगड़े हुए घोड़े भी सीधे हो जाते थे।

तुमने कोहनूर हीरे का नाम सुना होगा। यह हीरा रणजीतसिंह ने अफ़ग़ानिस्तान के बादशाह शाहशुजा से लिया था। आजकल यह सम्राट् जार्ज पञ्चम के मुकुट में लगा हुआ है। शाहशुजा को उसके दुश्मनों ने अफ़ग़ानिस्तान से निकाल दिया था। रणजीतसिंह ने उसे लाहौर में ठहरने को जगह दी और मदद देने का वादा किया। शाहशुजा ने कोहनूर को छिपाकर रक्खा। परन्तु किसी तरह उसका हाल रणजीतसिंह

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

को मालूम हो गया। उन्होंने हीरा माँगा। शाहशुजा टालमटोल करता रहा। परन्तु रणजीतसिंह कब माननेवाले थे। उन्होंने शाह के मकान पर पहरा बिठा दिया और एक दिन हीरे को लेने गये। एक घण्टे तक चुपचाप बैठे रहे। कोई बात-चीत न हुई। अन्त में शाहशुजा बहुत तङ्ग आ गया। उसने अपने नौकर से कहा—कोहनूर ले आओ और महाराजा को दे दो। रणजीतसिंह चुपचाप उसे लेकर चल दिये और दुआ-सलाम तक न की। एक बार रणजीतसिंह ने शाहशुजा से पूछा कि इस हीरे की क्या क़ीमत है। उसने उत्तर दिया कि इसकी क़ीमत लाठी है। जिसकी लाठी में ज़ोर होगा उसी के पास यह रहेगा। थोड़े दिन आप भी इसका मज़ा लूटिए, अन्त में यह आपके पास भी नहीं रहने का। ऐसा ही हुआ। जब अँगरेज़ों ने पञ्जाब को जीता तो कोहनूर उनके हाथ में चला गया।

रणजीतसिंह अँगरेज़ों से मित्रता रखते थे। एक बार बड़े लाट लार्ड विलियम बेंटिङ्क उनसे मिलने गये। बड़ी शान का दर्बार हुआ। महाराजा ने ११०० अशर्फ़ियाँ लाट पर न्यौछावर कीं। लाट ने भी बहुत-सा सोना बाँटा। दर्बार का अद्भुत दृश्य था। एक तरफ़ साहब और मेम अपने सादे कपड़े पहने हुए बैठे थे। दूसरी तरफ़ मख़मली पोशाकें पहने पचहत्थे सिक्ख बहादुर तलवार बाँधे मूँछें ऐंठे हुए कुर्सियों पर बैठे अकड़ रहे थे। दोनों तरफ़ से नज़रें दी गईं।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महाराजा ने अँगरेज़ों के साथ सन्धि कर ली। १५ पंक्तियों का एक सन्धिपत्र लिखा गया। शायद इससे छोटा सन्धिपत्र हिन्दुस्तान में नहीं है। जब तक रणजीतसिंह ज़िन्दा रहे, उन्होंने अँगरेज़ों से मित्रता रक्खी। रणजीतसिंह अँगरेज़ों की ताक़त को जानते थे। एक बार हिन्दुस्तान का नक़्शा देखकर उन्होंने कहा था कि थोड़े दिन में यह सब लाल हो जायगा।

रणजीतसिंह थे तो कुरूप परन्तु उनका रोब-दाब बड़ा था। किसी की मजाल न थी कि उनकी तरफ़ आँख उठाकर देख सके। एक बार बड़े लाट ने उनके मुंशी अज़ीज़ुद्दीन से पूछा कि महाराज की कौन-सी आँख कानी है। अज़ीज़ुद्दीन बड़े बुद्धिमान् थे। उन्होंने उत्तर दिया—हुज़ूर! महाराज का रोब ऐसा है कि मैंने तो कभी उनकी तरफ़ देखने की हिम्मत भी नहीं की। इसलिए मैं नहीं बतला सकता कि कौन-सी आँख कानी है।

रणजीतसिंह हृदय से प्रजा का भला चाहते थे। हिन्दू मुसलमान सबकी रक्षा करते थे। एक बार किसी सिक्ख ने एक मुसलमान के ऊपर सूअर का चमड़ा फेंक दिया। मुसलमान सूअर को बुरा समझते हैं और छूते तक नहीं। उसने महाराजा से फ़रियाद की। महाराजा ने हुक्म दिया कि अपराधी का सिर काट दिया जाय। इस पर दूसरे सरदारों

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ने कहा कि सज़ा बहुत सख़्त है। रणजीतसिंह ने उत्तर दिया कि अगर ऐसी सज़ा न मिलेगी तो सिक्ख मेरी मुसलमान प्रजा को बड़ा दुःख देंगे।

अभ्यास

(१) रणजीतसिंह को पञ्जाब-केसरी क्यों कहते हैं?

(२) रणजीतसिंह को कोहनूर हीरा किस तरह मिला?

(३) रणजीतसिंह के बाप ने उनकी हिम्मत को किस तरह बढ़ाया।

(४) रणजीतसिंह के इन्साफ़ का एक उदाहरण दो।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ १७

राजा राममोहन राय

आज से डेढ़ सौ बरस पहले की बात है। बङ्गाल के हुगली ज़िले में, राधानगर नामक एक गाँव में, राय रमाकान्त नाम के एक ब्राह्मण रहते थे। अपने गाँव में और आस-पास उनकी काफ़ी इज्ज़त थी। उनके पास धन की भी कमी न थी। इस तरह वे सब प्रकार अपने सुख के दिन काट रहे थे। ऐसे अच्छे और धनवान् घर में राजा राममोहन का जन्म हुआ।

राममोहन के माता-पिता दोनों ही सुशील, सदाचारी, पढ़े-लिखे, धर्मात्मा और बुद्धिमान् थे। फिर भला राममोहन में ये गुण क्यों न होते।

चौदह-पन्द्रह वर्ष की उम्र में ही उन्होंने संस्कृत, अरबी, फ़ारसी में अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। इसके सिवा उन्होंने कितनी ही कविता की किताबों को पढ़ डाला। संस्कृत पढ़ते हुए उन्हें धर्म-पुस्तकें भी पढ़ने को मिलीं जिनसे प्रचलित रीतिरवाजों से उन्हें बहुत नफ़रत होने लगी। उन्होंने उनके ख़िलाफ़ एक पुस्तक भी लिखी जिससे माँ-बाप दोनों ही उनसे नाराज़ हो गये। यहाँ तक कि बाप ने उन्हें घर से निकाल दिया।

राममोहन निडर, साहसी और अपने विचारों के पक्के थे। वे इधर-उधर घूमने लगे। जहाँ जाते थे वहीं की भाषा सीख लेते

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

राजा राममोहन राय

Gunratnasuri MS

थे। घूमते-घूमते वे हिमालय पार कर तिब्बत पहुँच गये। सोलह-सत्तरह वर्ष की उम्र में इस तरह तिब्बत पहुँच जाना कम साहस की बात नहीं है। यही नहीं, वहाँ उन्हें लामाओं के ढोंग से इतनी नफ़रत हुई कि वे उसका भी ज़ोर से विरोध करने लगे। इस पर लामा लोग इन्हें मौत की सज़ा देने की कोशिश करने लगे पर वहाँ की स्त्रियों ने इनका साथ दिया और इनकी रक्षा की।

रमाकान्त ने पुत्र को घर से निकाल तो दिया पर वे पीछे बहुत दुखी हुए। उन्होंने राममोहन को ढूँढ़ने के लिए इधर-उधर लोगों को भेजा। राममोहन मिल गये और घर लौट आये।

घर आकर उन्होंने फिर धार्मिक किताबें पढ़ना और पिता से धर्म पर बात-बात में विवाद करना शुरू किया। बेटे की बातों का ठीक उत्तर पिता न दे पाते थे। सब बातों पर ख़ूब विचार करके राममोहन ने हिन्दू-धर्म की बुराइयों के मिटाने का पूरा निश्चय कर लिया। इसके लिए वे प्रयत्न करने लगे।

माता-पिता फिर बहुत नाराज़ हुए परन्तु राममोहन ने कुछ भी परवा न की। माता तो इतनी नाराज़ हो गईं कि जब पिता मरे और सब जायदाद राममोहन को मिली तो माँ ने अदालत में मुक़दमा चला दिया कि लड़का धर्म से पतित हो गया है इसलिए इसे जायदाद न मिलनी चाहिए। परन्तु अदालत से उन्हें जायदाद मिल गई। मुक़दमा जीतने के बाद भी राममोहन माँ के पास गये और उसके गले में लिपटने को बढ़े पर माँ

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ने ढकेल दिया और कहा—मुझसे मिलना हो तो मन्दिर में जाकर राधा-गोविन्द को सिर झुका। वे फ़ौरन मन्दिर में गये और ठाकुरजी के सामने सिर नवाते हुए बोले—मैं अपने पूज्य माँ-बाप के देव-देवियों को सिर नवाता हूँ।

बाईस बरस की उम्र में उन्होंने अँगरेज़ी पढ़ी और सरकारी नौकरी करना शुरू किया। उनके काम से अफ़सर लोग बहुत ख़ुश हुए। उनकी तरक्क़ी हुई, ओहदा बढ़ा, उनसे सब लोग बहुत ख़ुश हुए। परन्तु उनका मन समाज-सुधार और देश-सेवा की ओर लगा था इसलिए उन्होंने नौकरी छोड़ दी।

उस समय बङ्गाल में सती-प्रथा का ज़ोर था। पति के मरने पर स्त्री उसके साथ ज़िन्दा जला दी जाती थी। यदि वह चिता से उठकर भागने की कोशिश करती थी तो रिश्तेदार और सम्बन्धी उसे बाँसों से कसकर दबा देते थे, ढकेल देते थे। ख़ूब बाजे बजाये जाते थे जिससे उसका रोना-चीख़ना न सुनाई पड़े। राममोहन से यह भयानक दृश्य न देखा गया। उन्होंने सती-प्रथा को बन्द करने की क़सम खाई और सरकार से क़ानून बनवाकर इस प्रथा को हमेशा के लिए देश से मिटा कर ही चैन लिया। लोगों ने उन्हें बहुत भला-बुरा कहा परन्तु वे अपनी बात पर डटे रहे।

उन्होंने बिना भेद-भाव सबको एक ईश्वर का भजन करने के लिए एक सभा बनाई। उसका नाम "ब्रह्म-समाज" रक्खा। आज भी बङ्गाल में ब्रह्म-समाज के माननेवाले हज़ारों आदमी हैं।

Ac. Gunratnasuri MS　　Jin Gun Aradhak Trust

सती-प्रथा को मिटाने के लिए राममोहन ने बड़ी कोशिशें कीं। इनके व्याख्यानों और बातचीत से भी सरकार पर इनकी काफ़ी धाक जम गई। इन्होंने सरकार की सहायता से अँगरेज़ी पढ़ने के लिए कलकत्ते में स्कूल खुलवाये।

जब राममोहन राय कलकत्ते में रहते थे, लार्ड विलियम बेंटिङ्क भारत का गवर्नर-जनरल था। उससे किसी ने कहा कि सती-प्रथा को बन्द करने में तुम्हें राजा राममोहन राय से बड़ी मदद मिलेगी। लाट ने राममोहन को बुलाने के लिए एक अफ़सर को भेजा। राममोहन ने कह दिया कि मैंने तो संसार छोड़ दिया है, अपना समय भजन-ध्यान में लगाता हूँ। मेरी तरफ़ से लाट साहब से क्षमा माँगना और कहना कि मैं मिलने नहीं आ सकता। अफ़सर ने जाकर लाट से यही बात कह दी। लाट समझदार थे। उन्होंने फ़ौरन अपने अफ़सर से पूछा कि तुमने क्या कहा था। उसने उत्तर दिया कि मैंने कहा था—आपको लाट साहब बुलाते हैं। इस पर लाट साहब ने कहा—तुम इसी समय जाओ और उनसे कहो कि यदि आप मिस्टर विलियम बेंटिङ्क से मिलने की कृपा करें तो वे बड़ा अहसान मानेंगे। राममोहन ने जाकर लाट साहब से मुलाक़ात की।

राममोहन राय बच्चों को बहुत प्यार करते थे। उनके घर बहुत-से लड़के आया करते थे। बच्चों को प्रसन्न करने के लिए उन्होंने अपने घर एक झूला डाल रक्खा था। उसमें वे आप भी झूलते और लड़कों को भी झुलाते थे। थोड़ी देर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

लड़कों को झुलाने के बाद 'अब मेरी बारी है' कहकर खुद झूले में बैठ जाते थे। एक दिन एक बड़े पण्डितजी उनसे मिलने आये और उन्हें झूलते देखकर बोले—वाह ! आप यह क्या कर रहे हैं ? उन्होंने हँसकर उत्तर दिया—मैं विलायत जाना चाहता हूँ। मैंने सुना है कि समुद्र में तूफ़ान आने पर जहाज़ हिलने लगता है जिससे बहुत लोगों को चक्कर आने लगते हैं। मैं इसी लिए अभ्यास कर रहा हूँ कि मुझे यह रोग न होने पावे। पंडितजी हँसकर चुप हो गये।

राममोहन दिल्ली के मुग़ल बादशाह के काम से विलायत गये और वहीं मर गये।

जब तक वे जिये, देश की सेवा करते रहे। उन्होंने अँगरेज़ी शिक्षा फैलाने के लिए पूरी कोशिश की और बुरे रीतिरवाजों की निन्दा की।

अभ्यास

(१) राममोहन राय को उनके पिता ने घर से क्यों निकाल दिया था ?

(२) सती का रवाज क्या था ? उसको रोकने की क्यों कोशिश की गई ?

(३) राममोहन राय ने सती का रवाज बन्द कराने में क्या कोशिश की ?

(४) राममोहन के चरित्र में कौन-से विशेष गुण हैं ? उनकी गिनती बड़े आदमियों में क्यों की जाती है ?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ १८

सर सैयद अहमदख़ाँ

तुमने सुना होगा, अलीगढ़ में मुसलमानों का एक बहुत बड़ा कालिज है। आजकल वह कालिज मुसलिम यूनिवर्सिटी के नाम से प्रसिद्ध है। इस कालिज में दूर-दूर से मुसलमान विद्यार्थी पढ़ने आते हैं। इसकी बदौलत हज़ारों मुसलमान बड़े-बड़े ओहदों पर पहुँच गये हैं। इस कालिज की नींव सर सैयद अहमदख़ाँ ने डाली थी।

सर सैयद के माता-पिता दिल्ली के रहनेवाले थे। उनके बुज़ुर्ग मुग़ल-बादशाहों के यहाँ बड़े-बड़े ओहदों पर रह चुके थे। बड़े लोगों से उनका ख़ूब मेल-जोल था। उन्होंने अपने लड़के को अच्छी शिक्षा दी। लड़का होनहार था। जो कुछ पढ़ाया जाता उसे वह बहुत जल्द याद कर लेता था। बड़े होने पर सर सैयद, दूसरे लोगों की तरह, महल में जाने लगे। एक बार ऐसा हुआ कि सर सैयद सो गये और दर्बार में देर से पहुँचे। देखते क्या हैं कि बादशाह राजसिंहासन से उठ चुके हैं। जब सर सैयद का नाम पुकारा गया तो उनके बाप ने कहा—आज वे देर से आये हैं। बादशाह पास तो खड़े ही थे। उन्होंने सर सैयद को तसवीरों के कमरे में ले जाकर पूछा—

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

आज तुम देर से क्यों आये? सर सैयद ने कहा—मुझे नींद आ गई। इस तरह सच बोलने पर दर्बार के लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। बादशाह ख़ूब हँसे और उसकी सचाई से ऐसे ख़ुश हुए कि उन्होंने अपनी मोतियों की माला सर सैयद के गले में डाल दी।

सर सैयद ने पढ़-लिखकर अँगरेज़ों के यहाँ नौकरी कर ली। वे पहले सरिश्तेदार हुए, फिर जज हो गये। जिस समय वे बिजनौर में थे, ग़दर आरम्भ हो गया था। वे भागकर मेरठ पहुँचे। परन्तु वहाँ ख़बर मिली कि दिल्ली की बुरी दशा है। अपनी माता से उन्हें बड़ा प्रेम था। यह सुनकर कि बाग़ियों ने दिल्ली को घेर लिया है, सर सैयद को बड़ी चिन्ता हुई। जब ख़बर आई कि उनकी माँ, जान बचाने के लिए, एक रईस के घर में जा छिपी है तो आँखों में आँसू भर लाये और उसी समय दिल्ली को चल दिये। मकान पर पहुँचकर कई आवाज़ें लगाईं। बहुत देर के बाद दर्वाज़ा खुला। माँ ने चिल्लाकर कहा—तुम यहाँ क्यों आये हो? यहाँ किसी की जान की ख़ैर नहीं है। तुम भी मारे जाओगे। सर सैयद ने कहा—डरो मत, मुझे कोई नहीं मार सकता। लोगों से पूछने पर मालूम हुआ कि उनकी माँ ५ दिन से घोड़े के दाने पर ज़िन्दगी बसर कर रही हैं। तीन दिन से पीने को पानी नहीं मिला है। उसके साथ एक नौकरानी भी इस हालत में थी। सर सैयद फ़ौरन दौड़-कर बाहर से पानी लाये और दोनों को पिलाया। नौकरानी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

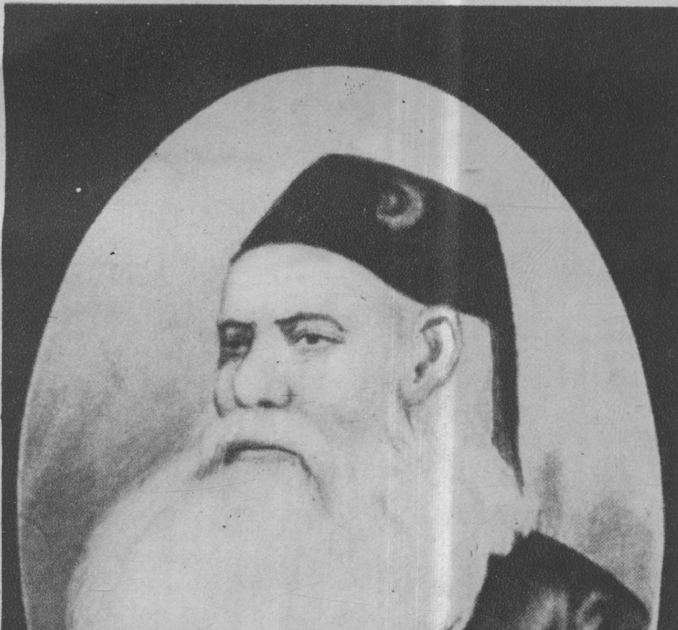

सर सैयद अहमद

थोड़ा-सा पानी पीते ही ज़मीन पर गिर पड़ी और मर गई। समझा-बुझाकर वे अपनी माँ को मेरठ ले गये परन्तु वहाँ थोड़े दिन बाद उनकी भी मृत्यु हो गई। सर सैयद की मातृभक्ति को देखकर सब लोग उनकी प्रशंसा करने लगे।

सर सैयद सच कहने में न तो कभी डरते थे और न किसी का अनुचित दबाव मानते थे। जब सर सैयद ने अलीगढ़ में कालिज खोला तो मुसलमान उनसे बहुत नाराज़ हुए। लोगों ने उनकी भर-पेट निन्दा की। किसी ने कहा—यह शैतान का मददगार है, किसी ने कहा—इसको पीटकर इसकी अक़्ल ठीक करनी चाहिए। उनके पास गुमनाम चिट्ठियाँ आने लगीं कि हमने तुम्हारे मारने की क़सम खाई है। सर सैयद ने इन बातों की कुछ भी परवाह न की। उन्होंने ये पत्र पुलिस में भी नहीं भेजे। अपना काम बराबर करते रहे। थोड़े ही दिनों में कालिज ने बड़ी उन्नति की और सर सैयद का यश दूर-दूर तक फैल गया।

सर सैयद ने ग़दर में अँगरेज़ी सरकार की बड़ी मदद की थी। इसलिए उन्हें बड़े ओहदे भी मिले और ख़िताब भी मिले।

पढ़ने-लिखने का शौक़ उन्हें हमेशा से था। जिस कमरे में बैठते थे उसमें किताबों और अख़बारों का ढेर लगा रहता था। जो कोई उनसे मिलने आता वह उनकी बातचीत सुनकर ख़ुश हो जाता था। जब तक सर सैयद जीवित रहे, अपनी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

क़ौम की भलाई करते रहे। जितना मुसलमानों का उपकार उन्होंने किया उतना किसी दूसरे ने नहीं किया। इसी लिए उनकी गिनती हमारे देश के महापुरुषों में है।

अभ्यास

(१) सर सैयद के गुणों का वर्णन करो।

(२) उनकी मातृ-भक्ति का एक उदाहरण दो।

(३) सर सैयद ने मुसलमानों का क्या उपकार किया है?

(४) अँगरेज़ों ने सर सैयद का इतना सम्मान क्यों किया? कारण बताओ।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ १९

दादाभाई नौरोजी

तुममें ऐसा कोई न होगा जिसने कहीं न कहीं दादाभाई नौरोजी का चित्र न देखा हो। दादाभाई हमारे देश के महान पुरुषों में से हैं। उन्होंने जन्म भर देश-सेवा की और ग़रीबों की दशा सुधारने का प्रयत्न किया। भारतवर्ष के लोग उनकी सेवाओं को कभी नहीं भूल सकते। सच्ची देश-भक्ति का नमूना दादाभाई से बढ़कर कहाँ मिल सकता है?

दादा भाई पारसी जाति के थे। बचपन ही में उनके पिता का देहान्त हो गया था। इसलिए पालन-पोषण का भार उनकी माता पर पड़ा। उसने उनके पढ़ने-लिखने का ठीक प्रबन्ध किया। स्कूल की पढ़ाई समाप्त करके वे एलफ़िन्स्टन कालिज में भरती हो गये। वहाँ उन्होंने अपनी बुद्धि का चमत्कार दिखाया और थोड़े ही दिनों में बी० ए० की डिग्री प्राप्त कर ली। दादाभाई की तीक्ष्ण बुद्धि देखकर बम्बई हाईकोर्ट के बड़े जज ने उन्हें बैरिस्टरी की परीक्षा पास करने के लिए भेजने की इच्छा प्रकट की और आधा ख़र्च देने को तैयार हो गये परन्तु दादाभाई के जातिवालों ने उन्हें न जाने दिया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कुछ समय के बाद उन्हें अपने कालिज में ही नौकरी मिल गई। अब वे प्रोफ़ेसर हो गये। उनके चरित्र का विद्यार्थियों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा और थोड़े ही दिनों में चारों ओर दादाभाई का यश फैलने लगा। वे बड़ी सादगी से रहते थे। न कभी बढ़िया कपड़े पहनते और न गाड़ी बग्घी में घूमते थे। उन्हें जहाँ कहीं जाना होता, बग़ल में छाता दबाकर पैदल चले जाते थे। कई वर्ष कालिज में नौकरी करने के बाद वे अपनी दूकान का कार-बार सँभालने के लिए विलायत गये। और १२ वर्ष तक वहाँ रहे। देश-सेवा की उन्हें हमेशा से ही बड़ी इच्छा थी। उन्होंने वहाँ बहुत-से व्याख्यान दिये और भारत के शासन-प्रबन्ध के दोषों का वर्णन किया। उन्होंने लोगों को बताया कि भारत बड़ा ग़रीब देश है और हर एक भारतवासी की आमदनी की औसत केवल २० रु० सालाना है।

दादाभाई सच्चे देश-भक्त थे। वे चाहते थे कि दीन-दुखियों का कष्ट दूर हो और देश की हर तरह उन्नति हो। जब कांग्रेस स्थापित हुई तो दादाभाई ने उसमें पूरी सहायता दी। उन्होंने ख़ुद लोगों को समझाया और बहुत-से व्याख्यान दिये। वे विलायत गये और वहाँ के लोगों ने उनकी सच्चाई, योग्यता और बुद्धिमत्ता देखकर उन्हें पार्लियामेंट का मेम्बर चुना। भारतवासियों ने उनकी सेवाओं से प्रसन्न होकर उन्हें तीन बार कांग्रेस का सभापति बनाया। इतना सम्मान बहुत कम आदमियों का होता है।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दादाभाई का हृदय उदार था। वे मनुष्य-मात्र से प्रेम करते थे। किसी प्रकार का भेद-भाव उनके यहाँ नहीं था। दूसरों की भलाई का वे हमेशा ख़याल रखते थे और मित्रों के साथ अच्छा बर्त्ताव करते थे। एक बार एक मित्र उनसे चार हज़ार रुपये उधार ले गया और हज़म कर गया। दादाभाई से लोगों ने कहा—उस पर मुक़दमा चलाइए और रुपया वसूल कीजिए। परन्तु उन्होंने हँसकर उत्तर दिया कि मुक़दमा चलाना ठीक नहीं। यदि एक मित्र अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करता तो क्या हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।

जब कभी कांग्रेस में झगड़ा होता था तो लोग दादाभाई से सलाह लेते थे। उनकी बात को सब मानते थे। एक बार सन् १९०६ में जब कांग्रेस के सभापति के चुनाव में बड़ा झगड़ा हुआ तब लोगों ने दादाभाई को इँगलैंड से बुलाया। वे अत्यन्त वृद्ध हो गये थे। परन्तु उनकी देश-भक्ति ऐसी बढ़ी-चढ़ी थी कि अपने आराम का कुछ भी ख़याल न कर वे चले आये। उन्होंने ऐसी अच्छी तरह काम किया कि शान्ति रही और कुछ दिन के लिए समझौता हो गया।

९२ वर्ष की अवस्था में दादाभाई का देहान्त हुआ। उन्हें सब लोग भारत का महान् वृद्ध पुरुष (Grand Old man) कहते थे। उनके मरने पर सारे देश में सभाएँ हुईं और लोगों ने शोक प्रकट किया।

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

अभ्यास

(१) बचपन में दादाभाई नौरोजी ने किस तरह शिक्षा पाई ?

(२) अपने देश के लिए दादाभाई ने क्या किया ? उनकी सेवाओं का वर्णन करो।

(३) दादाभाई का कांग्रेस में इतना सम्मान क्यों था ?

(४) दादाभाई में तुम्हें क्या ख़ास बात अच्छी मालूम होती है ? उनकी गिनती बड़े आदमियों में क्यों की जाती है ?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

पाठ २०

महारानी विक्टोरिया

तुममें से बहुत-से लड़कों ने बड़े-बड़े शहरों में, किसी पार्क या मैदान में, एक पत्थर की मूर्ति अवश्य देखी होगी। यह मूर्ति महारानी विक्टोरिया की है। क्या तुमने कभी इस बात को सोचा है कि यह मूर्ति क्यों रक्खी गई है? जो मनुष्य नेक, सबका भला चाहनेवाला, दयालु और दूसरों के दुःख-दर्द में साथ देनेवाला होता है उसे सब चाहते हैं, सब उसकी याद करते हैं। मरने के बाद ऐसे ही महान् पुरुषों की याद रखने के लिए मूर्ति बनाकर खड़ा कर दी जाती है। महारानी विक्टोरिया में ये गुण मौजूद थे। इसी लिए जगह-जगह उनकी मूर्ति बनाकर रक्खी गई है।

महारानी विक्टोरिया ने बहुत दिन तक हमारे देश पर राज्य किया। वे प्रजा के साथ वैसा ही प्रेम करती थीं जैसा माँ अपने बेटों के साथ करती है। प्रजा का दुःख देखकर उनका हृदय दया से पिघल जाता था।

बचपन में विक्टोरिया को शिक्षा अच्छी मिली थी। रोज़ सबेरे घोड़े पर चढ़कर वे हवा खाने जाती थीं। साथ में बहुत-सी नौकरानियाँ चलती थीं। जब वे कहतीं कि राजकुमारी

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

कुछ दूर पैदल भी चलो तो वे किसी की न सुनतीं और बराबर घोड़े पर चढ़ी रहती थीं; परन्तु जब बूढ़ा सिपाही, जो साथ रहता था, कहता कि राजकुमारी थोड़ी दूर पैदल भी चलना चाहिए तो वे फ़ौरन घोड़े से उतर कर पैदल चलने लगती थीं। रईसों की बेटियों की तरह उन्हें फ़ज़ूल ख़र्च करने को रुपया नहीं दिया जाता था। एक बार वे बाज़ार में, अपने मित्रों को देने के लिए, कुछ चीज़ें ख़रीदने गईं। चीज़ें ख़रीद चुकने पर याद आई कि एक मित्र के लिए कुछ नहीं लिया। एक छोटा-सा सन्दूक़ पसन्द किया परन्तु जेब में हाथ डाला तो कुछ भी न मिला। वे चाहतीं तो उधार ले लेतीं परन्तु उन्होंने ऐसा करना ठीक न समझा। दूसरे दिन जाकर वह सन्दूक़ ख़रीदा। इस प्रकार बचपन ही से विक्टोरिया को अच्छी-अच्छी बातें सिखलाई गई थीं।

जब विक्टोरिया के चचा विलियम मरे तो उनके पास दो दूत यह ख़बर देने भेजे गये कि तुमको इँगलैंड का राज्य मिल गया। विक्टोरिया उस समय सो रही थीं। दासियों ने जाकर जगाया और सब हाल कहा। और कोई होता तो ऐसी ख़बर सुनकर फूला न समाता परन्तु विक्टोरिया अपनी माँ के पास जाकर रोने और कहने लगीं कि मेरे ऊपर ज़िम्मेदारी का बड़ा भारी बोझ एकदम आगया। इसको मैं कैसे सँभालूँगी। हे ईश्वर! मुझे शक्ति दे कि मैं इतने बड़े राज्य का बोझ उठा सकूँ। उन्हें दुःख इस बात का था कि

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

महारानी-विक्टोरिया

संग-साथवालों से मिलने का अब बहुत कम मौक़ा मिलेगा। माता से भी भेंट कम हुआ करेगी। जो अपने साथ बराबरी का बर्त्ताव करते थे वे सिर झुकाकर बात किया करेंगे। यही सब सोचकर विक्टोरिया दुःखित होती थीं।

विक्टोरिया प्रजा-पालक रानी तो थीं ही, उनका घरेलू जीवन भी बड़ा श्रेष्ठ था। जर्मनी के राजकुमार अलवर्ट के साथ उनका विवाह हुआ था। वे अपने पति के साथ बहुत प्रेम करती थीं और उनका आदर करती थीं। वे राज्य का कोई हाल उनसे नहीं छिपाती थीं। एक बार बड़े बड़े अफ़सरों ने कहा कि महारानी को राज्य की गुप्त बातें राजकुमार अलवर्ट को न बतानी चाहिएँ परन्तु उन्होंने एक न सुनी। राजकुमार पर उनका पूरा विश्वास था। वे जानती थीं कि प्रिंस अलवर्ट कभी कोई काम ऐसा न करेंगे जिससे इँगलैंड को हानि पहुँचे।

राजकुमार अलवर्ट और महारानी अपने बच्चों की शिक्षा पर बड़ा ध्यान देते थे। जब वे पढ़ने-लिखने से जी चुराते तो उन्हें सज़ा देते थे। बालकों से यह भी कहा जाता था कि घमण्ड बहुत बुरी चीज़ है। एक दिन महारानी के बड़े बेटे राजकुमार एडवर्ड ने नदी के किनारे एक मल्लाह के लड़के की टोकरी उलट दी। इस पर उस लड़के ने राजकुमार के एक चपत जमा दी। प्रिंस अलवर्ट दूर खड़े यह सब देख रहे थे। उन्होंने फ़ौरन पास आकर कहा कि मल्लाह के लड़के ने बहुत

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

ठीक किया। यह माना कि तुम राजा के लड़के हो और किसी दिन इँगलैंड के बादशाह होगे परन्तु तुम्हें किसी के साथ ज़्यादती करने का अधिकार नहीं है।

विवाह के २० वर्ष बाद राजकुमार अलवर्ट का देहान्त हो गया। महारानी को बड़ा शोक हुआ। वे बिलकुल गूँगों की तरह बैठी रहती थीं, न किसी से बोलती थीं और न राज्य का काम करती थीं। प्रजा ने महारानी के साथ बड़ी सहानुभूति प्रकट की। कुछ दिन बाद वे बाहर निकलने लगीं और राज्य का काम-काज करने लगीं।

हिन्दुस्तान के लोग महारानी विक्टोरिया को कभी नहीं भूल सकते। वे उनके सुख-दुःख का हमेशा खयाल रखती थीं। जब सन् १८५७ में देश में ग़दर हुआ तो महारानी ने वायसराय के नाम हुक्म भेजा कि शान्ति से काम लेना और निर्दोष लोगों को दण्ड न देना। ग़दर के बाद लार्ड केनिङ्ग ने इलाहाबाद में दर्बार किया और उसमें महारानी का घोषणापत्र पढ़कर सुनाया। इस पत्र में महारानी ने लिखा था—

"हमारे राज्य में हर एक आदमी को अपने धर्म पर चलने की पूरी आज़ादी रहेगी। धर्म के कारण कोई मनुष्य हमारे राज्य में नहीं सताया जायगा। क़ानून के सामने अमीर-ग़रीब सब बराबर होंगे। किसी के साथ रू-रिआयत नहीं की जायगी। हमने अपने अफ़सरों के नाम हुक्म जारी कर

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

दिया है कि वे किसी के धर्म में दख़ल न दें। जो हमारे इस हुक्म को न मानेगा उससे हम नाराज़ होंगी।"

महारानी के ये शब्द सोने के अक्षरों में लिखे जाने योग्य हैं। इनका प्रजा पर बड़ा प्रभाव पड़ा और सबने हृदय से उनका धन्यवाद किया।

बहुत दिन राज्य करने के बाद ८२ वर्ष की अवस्था में महारानी का स्वर्गवास हो गया। देश भर में शोक मनाया गया।

विक्टोरिया का नाम इतिहास में अमर रहेगा। इतना बड़ा राज्य पाने पर भी घमण्ड उन्हें छू तक नहीं गया था। दीन-दुखियों पर वे दया करती थीं और उनके सुख का उपाय करती थीं।

अभ्यास

(१) महारानी विक्टोरिया की मूर्ति जगह-जगह क्यों लगाई गई है?

(२) महारानी विक्टोरिया का प्रजा के साथ कैसा बर्ताव था?

(३) हमारे देश के लिए विक्टोरिया ने क्या किया?

(४) भारतवर्ष में महारानी का इतना आदर क्यों है?

(५) सन् १८५७ के ग़दर के बाद जो घोषणापत्र महारानी ने भेजा था उसमें क्या लिखा था?

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust

Ac. Gunratnasuri MS Jin Gun Aradhak Trust